MSS No. 305 Subject Philosophy

Name of MSS अमर लोक

Author चरणदास

Period Folios 170

Script DEVANAGIRI Source Prithi Pal Singh

Missing Folios 1-2, 30A-112A

2A

हावै। अषंडबनपुस्तगादरसावै। षेलनकुम
बनषेलतरहै। मोहनबनकेतीबनकहै॥
दधिगरामबनवहीकहायो। जटिलटि
जहांदधिषायौ। बरूहरनबनवहीकहा
यौ। ब्रह्मामायादेषभुलायौ॥२६॥ दोहा॥
ग्वालबालब्रह्माहरे। राषेकहुंदुराय। जा
नबूझटारोदियौ। लीन्हें औरबनाय॥२७॥
चौपाई॥ जबब्रह्मासमझोकरज्ञानों। का
रताकृष्णसत्यकरिजांनों। फिरचेतनहोय
सीसनिवायौ। आदिपुरसपरसोतमपा
यौ। द्वादसउपबनगायसुनायौ। मथुरा
मंडलमेंप्रबतायौ। द्वादसबनकीगतसुन
लीजै। जिनमांहीहरिध्यानकरीजै। मद
बनअतिमहासुहायौ। श्रीबनलालनके
मनभायौ। भांडीरबनकीमिहमागाऊं॥
भिन्नभिन्नकहतोहिसमझाऊं। लोहब
नमिहमांकहियतमारी। महाबनसुंदर
ताअतिधारी। तालरबनवहीदिष्टनिहा
स्यौ। दानौंधेनकजहांहरिमास्यौ॥२८॥ दो
हा॥ दानौंधेनकमहाबली। मावनगतह

रहित।मुकतकाजसेवनकियौ।तालरब
नकोषेत॥१९॥चौपाई॥षिदरबनजानत।
सबकोई।फूलमालजहांलालनपोई।ब
हुलाबनघनउमनछायो।कुमदबनतो
संकटसमझायो।कामाबनलालनसुष
दाई।वृंदाबनकीसोभान्यारी।रासरच्यौज
हांश्रीबनवारी।बनउपबनसोभागतईस
सिवब्रह्मादिकनायोसीसा।इंदरबनकु
बेरबिनानी।इनकूंगतमतब्रजकीजान
बलराबनजहांसेवालाई।ऊंचीनवनि।
धउनकूंपाई।सातरिषनमिलसेवनकी
न्हीं।ऊंचौआसनधूकौंदीन्हौं॥२०॥दोहा
॥ब्रजतकसुरनरतिरगये।तपकरिब्र
जकेबीच।जातपांतकूंकोगिनैं।ऊंचानी
चानीच॥२१॥वृंदाबनसबसोंबडो।जैसें
दूधमैंघीव।सबधर्मनहरिभक्तिज्यों।जैसें
पिंडमैंजीव॥२२॥सबतीरथजगमैंबडे।
जिनकूंमैंहैईस।उनतीरथफलकामनां
इंहसेवनजगदीस॥२३॥बीसकोसके।
फेरमैं।वृंदाबनकूंजान।कुंजगलीत्र्या

ब्रज० ३ 3

तिसोहनी। कुमबेलीपहचान॥२४॥ कंचा
नकीजहांभूमिहै। धरैंसतोगुनभेष। घरा
नदासबलिबलिगयौ। दिव्यदिष्टकरिदे
ष॥२५॥ फूलजुफूलेरुतिबिनां। नांनांछबि
बहुरंग। झलमलकतगुंजतफिरैं। भंवा
रीसुतलियेंसंग॥२६॥ रुतबसंतजहांनि
नतरहत। बिहरतनंदकिसोर। कुहक
तकोयलमगनह्वाय। बोलतदादरमोर॥
२७॥ तिहमधिबृंदाबनमहा। निजबृंदाब
नजान। तिरकौंनीबरननकियौ। जोजन
हैपरवान॥२८॥ चौपाई॥ जाकीमहिमा
सबजनगाई। रासकरैंजहांकुवरकन्हा
ई। जमुनांजहांपरकम्मांदीन्ही। गुप्तपिया
कीलीलाकीन्ही। गोपसुताजहांनितव्रतन्हा
ई। बरहरनपायकुंवरकन्हाई। स्यामरंग
नर्मलजलगहरी। बृंदाबनकेढिगढिगल
हरी। आसामनसाकरकोइन्हावै। सहस
सुरसुरीकोफलपावै। दिबबृंदाबनदिबा
कालिंदी। देषैसोजीतेमनइंद्री। किनारनि
कटबृक्षनकीछांई। आयपरीजमुनांजल

मोहो॥२९॥दोहा॥मक्कबिनापावैनहीं॥ह्टं
दाबनकीसंध॥बिनपायैंनिंदाकरै॥मैहम्
रषअंध॥३०॥चौपाई॥झिलमिलसुबकी
उठततरंगा॥बोलतदादरऔरसुरनंगा॥
कालीदहमिंहमांसुनत्राता॥सहसगंगके
फलकीदाता॥बिहारघाटबसमनजनकरी
जै॥जिंहसेवनजमज्ञाबनदीजै॥बंसीबट॥
बसहवहमकीजे॥तजेदेहजबदरसनल
जै॥अबसुनह्टंदाबनकीबतियां॥सीत॥
लकरीहमारीछतियां॥बनघनकुंजल॥
ताछबिछाई॥झुकटहनीधरनीपरआई
करतमंदसमीरपयानां॥बसतसुगंधस॥
बेअघानां॥बरषतइंहतफुईसुहाई॥नि
निकसतकोमलगोजगुहाई॥३१॥दोहा
॥ह्टंदाबनमेंरहतहैं॥ज्ञानीगुनीअतीत॥
ह्टंदाबनकूंनांमिलै॥कोऊलहतजगजी
त॥३१॥चौपाई॥नितबसंतजहांसुगंध॥
सुरारी॥चलतमंदजहांपवनसुषारी॥उह
पबिगासरहेरंगबिरंगा॥लेतबासगुंजत॥
सुरनंगा॥बोलतभंवरमहाधुनगाजें॥मा॥

3

नौंअनहदकीगतिसाजैं।जुगनंदमकच
म...वकरावैं।समौंजानकरहर्षबढावैं।।
नाचतमोरकरतचतुराई।पंषपसारमुदि
तमगनाई।केइकउचककबोलनिजबोलैं
केइककुंजनऊपरडोलैं।जुगलनामले
कीरपुकारैं।बारबारबनओरनिहारैं।
ब्रंदाबनचारौंजुगमांही।गोपरहैसुष
देवबताई।३३।दोहा।ब्रंदाबनकी
साधगत।कापैबरनीजाय।जैसीजाकीं
द्रष्टहै।जैसोहीदरसाय।३४।जैसंहरिम
थुरागये।सबनबिलोकोआय।कालकं
सकीद्रिष्टमैं।साधनप्रलैलषाय।३५।म
थुरामेंजोधाबडे।जिन्हैंमल्लदरसाय।ना
रिनदरसेकामसम।उीतिरीतिअधिका
य।३६।ब्रंदाबनसोईदेषिहै।जिनदेषे

१

हरिरूप।उल्लंभदेवनकुंनयो।महारूप
सुरूप।३७।ब्रंदाबनसेवनकरै।अमर
लोककुंजाय।इंद्रजीतेहरिनजे।प्रेमप्री
तिकेनाय।३८।चौपाई।रसिककेलब्रं
दाबनमांही।अमरलोककीगतिकरांही

अमरलोक तिंह्लोक सौंन्यारो। मथुरा मं
डल अंस बिचारौ। अमरलोक बिव है निज
धाम। जाको अंस ह्वंदाबननाम। परसोतम
निजधाम मांही। कारन अमर है ह्जआंई।
परसोतम अनुलीला। ह्वंदाबन मैं सदा बि
हारी। निजधाम की के ह्यितसोना। ह्वंदा
बन मैं रहै अलोपा। दिब्य द्रिष्ट बिन द्रिष्ट न
आवै। सकल पुरान बेद यौं गावै। गोल कौ
तरो निज ह्वंदाबन। तापर वा रूप अपनो त
नमन॥ ३९॥ चौपाई॥ रहो बौं तरो छिपवा
ह्गांई। जैसैं अगन काष्ट के मांही। तापरा
चौसठ षंभो सोहै। कोटकाम को निज मन
मोहै। तापर रंगमहल अधिकारी। कुंदन
रूप सरूप सुधारी। रंगमहल चौ रषंभन
मांही। पन्नालाल बेल कीनांई। पन्नानगा
लागे जहां मोती। फल कैं जगामगा जगामगा
जोती। रंगमहल यों छिप्यो गुसांई। जैसें ल
ली मिंहदी मांही। नित बिहार जहां करैं बि
हारी। कृष्णकुंवर जहां राधा प्यारी। गवर
रूप हष मंनां न डलारी। स्याम रूप है कृष्णप्र

रारी॥४०॥चौपाई॥लीलं बरऒढें संगरा
धा। दिबस्रा नष नरूपऋगाधा। नषनऋ
गसंगलातन्ऋसैं। वंदनिकटलघुतारेजैसैं
पीतबसनपदहरैनंदलाला। कीटमुकटम
थ्ृगलमाला। जरदबादलेकोऋंगनीमा।
बद्धीगलजिंदेसुषसीमां। मुतियनकीमा
लागलसोहै। नांकबुलाकऋधरपरजोहै।
मकराकृतकुंडलसरवनमें। जुगलदामि
नीमानोंघनमें। स्यामऋंगमजुलफैंप्यारी।
बांकीभौंहकुटिलऋनियारी। ललचौंहैं
ऋरनैनढरारे। रसकेमांतेऋौरकजरारे।
४१॥चौपाई॥मोतीनासाकेबिचलटकेबो
लतबोलहोनपरमटके। मुरलीमुकता।
कोरसपीवे। वादनवारोदेषतजीवे। गले
धकधकीसुंदरझमके। तामधिकोस्तुभ
मनिऋतिदमके। ऋधिकसुघरपदहरैहा।
यऋचौकी। बनमालाकदियातनौनिधकी
गोलऋुजनपरिबाजूसोहैं। पुंहचीकडा।
कनककरदोहैं। पुंहचीढिगपदहरैंजहां।
गीरा। रत्नचौकछबिलगीजंजीरी। रत्नचौ

ब्रज० ६

6

कहै पीव हथेली। लगी जंजीर मुंदरियन ने
ली। सो दै छाप छला औरि मुंदरी। नुहसत प
हरै सुंदर अंगुरी। ४१। चौपाई। इकीस वि
हन बरनन मैं धारै। झुनक झुनक पैंजन।
झुनकारै। मंद मंद बिहसत मुसकाई। रन
जीत मीत छबि कही न जाई। नित किशो।
र और नित्त किशोरी। द्वादस बरस अवस
भोरी। राधे भूषन छबि कहा गाऊं। नांव ले।
त मन मैं सरमाऊं। हूं मैं दास नांव रन जीत
भक्ति दान मोहि दीजै रीति। बहुत सषी जि
न के निज संगा। रास केल षेलैं बहु रंगा।
बन के बीसव षंने मांही। होत अषंड रास
वंह ठांई। झुनक झुनक सषियन पग ब
जैं। घुंघरू अधिक महा धुन गाजैं। ४२।
चौपाई। दिब भूषन पहरै पिय प्यारी। ससि
बदनी तिरगुन तैं न्यारी। नवल किसोरी गो
री सारी। सुघर सयानी चातुर नारी। दिब ब
स्त्र और मधुर सरीरा। अधिक रूप छवि
गहर गंभीरा। कजियारी कच लट कै बैंनी।
अंजन नैंन सैंन पिय दैंनी। चूड़ामनि गह

नौंछबिनी को। सीसफूल औरबैंनौंटीको
नथबुलाक और बंदीफलकैं। घूंघरवा
रीलटकैं अलकैं। मुषऊपर अलकैंछ
बिऐसी। चंदवदी दोनागनजैसी। करा
नफूलसंगफूमकेमलकैं। सबसषीय
नकेभूषनफलकैं॥४४॥ चौपाई॥ चंपा
कलीनौलडीमाला। चंदनहारसुपहरैं।
बाला। कठलाजैसैंगलेजनेऊ। औरदि
येचौकीमहाअनेऊ। फूलमालसषियां।
सबपहरैं। गुंजनकीमालाहियलहरैं।
बांहनमैंबाजूबंधबांधैं। बंकबलाबांह
नपरसांधैं। सदासुहागनपहरैंचूडी। सु
बकपहेलीबंगरीरूडी। कंगनीऔरप
हरैंजहांगीरी। रतनचौकआरसीधीरी॥
छापछला औरपहरैंमूंठी। नूहसतपह
रैंअजबअनूंठी। पावनमैंपगनेवरबा
जैं। नषसषलौंआभूषनसाजैं॥४५॥ चौ
पाई। फूनककुनकनांचैं औरगावैं। छुम
कछुमकनिरतैंऔरधावैं। कबहूंथेई
थेई थेई थेई करैं। कबहूंकरऊपर।

करधरैं। कबहूं घिननघिननथंगमोरैं।
भावबतायतानबहुतोरैं। कबहूंकरसु
गायगतवालैं। सांगउपांगबतावतहालैं
होत्रनुरागरागबहुगावैं। घुंघरूकीग
तत्रधिकबजावैं। कोईनांचैंकोईगावैं
कोईमरदंगकोईतालबजावैं। बैंनसरूं
कोइकरराजे। कोऊतंबूरानारीसाजे
ऊपंगलीयैंकरकोऊसहेली। अमृत
कुंडलीकोऊत्रलबेली। कोईबीनको
ईलियैंमुहचंगा। मगनरूपसबहीनि
जसंगा॥ ४६॥ दोहा॥ कहाबुधिकहाकि
हसकूं। रासकेलकोसाज। बाजेहैंबहु
भांतिके। बरनतआवैलाज॥ ४७॥ कबहूं
करसंकरमिला। नृत्तिनतश्रीगोपाल। क
बहूंबैठेसांवरो। नृत्ततसुंदरबाल। ४८
॥ चौपाई॥ कबहूंहसकरनिकटबुला
वें। कबहूंफूलमालपहरावैं। कबहूं
मंदमंदमुसकावें। बैंनसेंनदैंनसबबा
तावैं। वृंदाबनमैंऐसीलीला। वरनदा
सकोजहांवसीला। जोकोईइनकोध्या

नलगावै। अमरलोकनिहचैकरपावै। सि
मटोमनकबहूंनहिंफूटै। सोवृत्तजागत
ध्याननछूटै। जोकोईइनकोध्याननकरि
है। नरमनेरमचौरासीपरिहै। सुरनरमु
नसबहीमिलधावैं। शिवब्रह्मादिकअंत
नपावैं। बेदबिनायहभेदनपावै। आपन
रमओरजगभरमावै। बेदपुरानसंहितागा
वैं। चारौंजुगहरिभक्तबतावैं। ४९। दोहा।
।। इतवृतिभटकौजगफिरै। कीनौंनांहिबि
वार। सत्यपुरसजान्यौंनहीं। कैसैंउतरैंपा
र। ५०।। चौपाई।। द्वापरबीत्यौकलिजुगआ
यौ। राजाकूंसुषदेवसुनायौ। कलिजुगकी
ऽबुधबताऊं। सुनजूपरिक्षितकहूसम
झाऊं। ओछीबुधमनुषकीहोगी। सकल
बिकलओरमनकेरोगी। सूक्ष्मज्ञानमा
हाअभिमानी। नहींमानिहैंबेदपुराना।।
परमेस्वरकीनिंदाकरिहैं। भूतमसानीचि
तमैंधरिहैं। षेत्रपालभूमियांमानैं। किरता
मकूंकरताकरजांनैं। परमेस्वरकीबातन
मावै। ऐसोऊततरसुरतबतावै। कहैंराम।

कहांहैनाई। हमकूं तदेह दिषाई। ५१॥ दोहा॥ वक्त्रञ्जौरहरिकी बिमो। सातदीपनौषंड। वरनदासकहैसुनञ्जौधरे। किनराचौ ब्रह्मंड। ५२॥ नक्तिबिनादीषनहीं। इनमैंन नहरिरूप। साधनकूंपरगटभयौ। बिनांभक्तिहरिगूप॥ ५३॥ चौपाई॥ साधसंतकीनिंद्याकरिहैं। भजनकरेतासौंवऊभ्रृरिहैं। करिञ्जनिमानञ्जापमैंजरिहैं। गुरकोकहेनैकनहींकरिहैं। पंथषडेकरिहैंछत्रीसा। भरमभूजतजहैंहरिईसा। डिंभरूवकीसेवाकरिहैं। रूवेपंथनमैंजारलिहैं। गऊब्रह्मणनिष्टलहोई। बापपूतमैंपरिहैंदोई। बिद्यादानकपटमोहारा। राजाडषडबितसंसारा। बेदपढैंकरिहैंञ्जनिमानां। हमपंडितञ्जौरसबञ्जज्ञानां। पडषुरानभेदानहिंजानें। साधनसंऊगरोबऊगनें॥ ५४॥
चौपाई॥ पंथषुनाहरिकूं बिसरावैं। मूषेबारबिबाद बढावैं। बिबिचारनहायहैवऊनारी। बोलेंरूवबऊतपरकारी। सुषदेवकहैराजासंबैनां। सोञ्जबदेषेञ्जपनेंनैनां। रा-

जाडांडबोधकरलूटैं। पूजैंभ्रतरामसंहूटैं। ग
ऊबिष्टासोषातीजांनी। पंडितदेषबकुअग्नि
मांनी। डिंभकपटबकुपूजादोरी। कलि के जाहर
पूजैंचोरी। पंडितबेदपढैंबिसरावैं। स्यानेभो
पेकूंसिरन्यावैं। हरिकेसाधनकूंबिसरावैं।
तजैंरामअोरनकूंधावैं। अोरदमकेडूकपं
थनिहारे। वरचाकरिकरिसनीबिचारे। पप
॥चोपाई॥ इनकेबडेजुज्ञानीलये। पंथीभ्रल
नरममेंगए। पंथनमेंकोपूरोभयो। काहूनैं
परचोनदिदियो। हरिकीभक्तसदाचलिअ
ई। बेदपुराननमेंजोगाई। इनकूंसमभ्रन
एजोज्ञानी। नाभाजिनकीभक्तबषानी। जि
नकीमिहमासबजगजानी। सबजानत
हैंचतुरज्ञानी। पीपासदनांसेंनानाई। धनं
जाटअोरमीरांबाई। नामदेवरैदासचमा
रा। तुलसीमाधोमीरबिचारा। कूबाकुम्हा
राफत्तूसधा। सेऊसम्मनरंकाबंका। पद्
॥चोपाई॥ करमेतीअोरकरमांबाई। दास
कबीराबानीगाई। जैदेवाअोरनरसीमा
हता। दासमलूककडामेंरहता। अंतानं

दकीजअौरजंगी। देवमुरारनिपटसर्बंगी।
नरहरलालदासहरिबंसा। रंगनाथबनवा
हज॰ रीहंसा। नानकसूरदासअौरदाम्ब। सनक
८ सनंदनकहियेआइ। ध्रुप्रहलादनत्रीह
१ नसोरी। हनूंमानसंकरअौरगोरी। बाल
नीकअमरीकसुदामा। मोरध्वजराजासं
गामा। बऊतकनकअौरजोनये। नांवन
जानूंजातनकहे। कईकोटबैश्नोंबांद
सबहीगायेमुकतकेनांके। चरनदासह
रिभक्तिबिचारी। सुमरसुमरभ्रुहवोनरन
री। ५७॥ दोहा॥ लिषपढसममफबिचारका
र। सदाकरोहरिध्यान। कृष्ष्नभक्तिडिढका
रिगहो। मिटैंसकलअज्ञान। ५८॥ छप्पै॥ ड
हरेमैमेरोजनम। नांवरनजीतबषानौं। मु
रलीकोसुतजान। जातदूसरपहचानौं। बा
लअवस्थामांहिबऊरदिल्लीमैआयो। रा
मतमिलेसुषदेव। नांवचरनदासधरा
जोगजुगतहरिभक्तिकरि। जुगलध्यान
डिढकरगहौ। ब्याधासकलबिसारिकैं। ह
रिचरनमनसनरह्यौ। ५९। कवित्तसांगान
८

मुकटजटितसिरअधिकबिराजतंगदैं
बसुरियाअधरधरं। संषचक्रगदापद्मी
बराजत। कोटमदनछबिबरनंनं। गिर
वरनषधारैंअसुरनमारैं। संतनकेडष
हरनंनं। जनचरनदासचरननकोचे।
रो। सदारहे गिरधरसरनं॥ ६०॥ कबित्त
सांगीत॥ कुंमकुंमकाबिंदंदिपंमालं॥
उदद्जातडतहरनंनं। मकराकृतकुं।
डलअतिराजत। क्रमकदामिनीछबिध
रनं। कटकिंकनपैंजनपगबजत। मुक
तमालसुरिसुरिबरनं। जनचरनदास
चरननकोचेरो। सदारहे गिरधरसरनं
६१॥ कबित्तसांगीत॥ सुंदरबाललालसं
गलीयें। रासकरतमनमगनंनं। घुमरघु
मरधकधककरनिरतं। षुटरषुटरन
टकबरनं। मक्करमक्करधनबजतगज
त। ऊनककऊनकऊनऊंकरनं। जनचर।
नदासचरननकोचेरो। सदारहे गिरधर
सरनं। ६२॥ कबित्तसांगीत॥ रासरचावैं
सबसुषपावैंसांवरेबदनछबिबरनंनं

धुधकधुधक धू धूकरनिरतं। तातात्रिकितीत
तात्रिकिती धिननननं। झुनकझुनकनूपर।
झुनकारतं। झनकझनकझनझननननं।
जनवरनदासवरननकोवेरो।सदारहो।
गिरधरसरनं।१३। ।कबित्त। नंदकेकुंवा
रहूंतोकहूं बारबारमोहिलीजियेजबार
श्रोटअपनीमेंकीजिये। कामश्रोरक्रोध।
कोकाटोजमबेडाछुटु। मांगूंएकनाममो
हिनक्रिदानदीजिये। श्रोरकोछुटावो।
आससंतनकोदीजेसाथ। बृंदाबननि।
वासमोहिफेरहूंपतीजिये। कहेवरन।
दासमेरीहायनोहिदासस्यामकहूंमें।
उकारमेरीसरवनसुनलीजिये।१४। ।
।कबित्त। उंहीहाथकुवगहकेपूतनाके
प्रानसोषे। पायउंवीपदवानिजधामकूंसि
धारीहै। उंहीहाथश्रीधरकोमुषमांडोदही
सेतीछातीपरपांवदेमरोरजीमडारीहै। उं।
हीहाथकुबरीकोकुबकाढसीधाकियो
उंहीहाथमस्तगगजषेंचमृतमारीहै। उं।
हीहाथबांहवरनदासकहेश्रायगहो।

वेही ह्वाथ जमनां मैं नाथ्यो नाग कारी है ॥ ६५ ॥ इति श्री मथुरा मंडल परम पवित्र सकल सिरोमनि धाम ब्रजचरित्र बर्नन श्री सुषदेव गुसांई का गुलाम ॥ इति श्री ब्रज चरित्र श्री चरनदास जी कृत संपूर्ण समाप्तं ॥ अथ अमर लोक अषंड धाम बर्नन ॥ दोहा ॥ परिणाम श्री सुषदेव कूं । सो हैं गुरू दयाल । काम क्रोध मोह लोभ से । काढे मेरे साल ॥ १ ॥ बानी बिमल प्रगास दी । बुध निर्मल की तात । मो हि मूरष अज्ञान कूं । नहीं आवत ही बात ॥ २ ॥ अमर लोक बर्नन कूं । वे ही करैं सहाय । दिष्ट दिये मम षोल करि । सब ही दैं हदिषाय ॥ ३ ॥ भेद लियो गुरदेव सूं । अद्भुत रचूं गिरंथ । साषी बेद पुरान की लीनी सुनियों संत ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ सनत्कुवार संहिता सुनी । सब कूं सुनकर मन मैं गुनी ॥ बराह संहिता की मली नी । ध्यान बीन करि पोथी कीनी । और पुरानन कूं ले मथ्या । सब कूं मथ करि कीनी कथ्या ॥ ५ ॥ दोहा ॥ पोथी पुस्तग सब मथे । मथ्य साधौं का भेद । भेद पा ।

यबीजककिये।पाये।मेदअमेद।६।नि
राकारतौब्रह्महै।माया है आकार।निरा
कारआकारसैं।न्यारेपुरषनिहार।७।।

चौपाई।। मायाब्रह्मदोउतैंन्यारा।सोनिज
कहियैपीवहमारा।क्षरअक्षरनिहअ
क्षरतीनौं।गीतापदसुनइनकूंचीनौं।।
गीताअक्षरब्रह्मबतावे।क्षरमायासोई
दिष्टदिषावे।निहअक्षरहैपुरषअपार।
ग्यानीपंडितलोहबिचारा।जीवआतमा
परमातमदोऊ।परमातमजानतहैकोऊ
आतमचिन्हपरमातमचीन्हों।गीतामध
कृष्णकहदीन्हों।मायाउपजैबिनसैअ
तिही।चेतनब्रह्मअमरहैनितही।पार
ब्रह्मपरमातमजानौं।चरनदासकेसोम
नमानौं।८।।दोहा।।अमरलोकबिवपु
रसहै।ब्रह्मजुसबकेमांहि।मायादरस
तहैसबै।ब्रह्मदीषतहैनांहि।९।।चौपाई
।।अबसुनअमरलोककीबानी।तिर
गुनरहितपरमसुषदानी।तेजपुंजके
उपरराजै।अंहबैराटसंबाहरगाजै।ता

कूंजोतकहतनरलोई।तेजपुंजकहि-
यतहैसोई।सूरजमंडलताहिबतावैं।जो
गीजोगजुगतसूंपावैं।सूरजमंडलजैहै
वीरा।वालोकैंकोईपैहैबीरा।कोटभा-
नकोसोउजियारो।तेजपुंजकोरूपबि-
चारो।तीनलोकसूंबाहरहोई।सातनव
नसूंबाहरसोई।ताकेऊपरअबवला-
लोका।पापपुन्यदुषसुषनहिंसोगा।काल
नज्वालअवधनहिंहोई।रनजीतदासज-
हांसुरतसमोई।महाअगोचरगुप्तसुगुप्ता
जहांबिराजतहैंभगवंता।१०।।चौपाई।।:।
अमरलोकगोलोककहावै।चौथापदनि
बीनबतावै।अगमपुरीबेगमपुरगांऊं।
कहाबुद्धिसोसबगतगाऊं।कछुयकब
नेबताऊंवाको।ब्रह्मसुतसतजुगमैंन
षो।षुद्रपदीपदहैसेतअकारा।सबब्रह्मं
डनसूंहैन्यारा।जोकोईजायबहुरनहिंआ-
वै।आवागवनसकलबिसरावै।जोकोई
गयोबहुरनहिंआयो।देहीदिब्यरूपअ-
तिपायो।सोलहबरसउमरनितरहै।आ-

श्रम
२१२
12

जरअमरनिधआनंदलहै।बूढाबालाहोयन
तरनां।षोडसअंगनरूपजहांधरनां॥२१॥चौपाई॥
तत्वसरूपीकायापावै।भवसागरमेंबहुर
नआवै।पांचतत्तबिनहैथिरथायो।नांवह
बन्योंनकिरतबनायो।ओरछोरकुछदीष
तनांही।कबसंहै ओरकबसंनांही।हैअ
डोलमरजादनताकी।बेपरवाहनबेदयोंभ
षी बेदपुरानपारनहिंपावैं।कछुकछुधर
ध्यानबतावैं।अनंतभानकोसोउजिया।
रो।पिंडब्रह्मंडदोऊतैंन्यारो।लोकमध्यअ
बचलनिजधांमां।सेतरूपअगमपुरनां।
मां।अगमपुरीनिरधारासूची।हंसनहैं
जिनकीमतऊंची।बेहदलोकबन्योंअ।
तिनारी।असंषभांनकीसीउजियारी॥२२॥
दोहा॥हदकहूंतौहैनहीं।बेहदकहूं।
तौनांहि।ध्यानसरूपीकहतहूं।बैंनसैंन
केमांहि॥२३॥चौपाई॥अतिऊजलरबिदि
ष्टनवहरे।मनिहीरालालोजहांगहरे।का
ईरंगकेहीराभाषे।कलसकंगूराऽस्थि।
रराषे।ताभीतरबहुडरमअसोका।अ।

फल श्रौर पात फूल इक संगा ४

ऐसे रूष फल लगे निरोगा। कल पहरू रूष बड़
रंग बिरंगा। कोमल दल सोभा अति भारी॥
अजर अमर सदरस न अधिकारी। चेतन रू
प गहर अति छांई। साध रहत तिन की पर
छांई। षोडस स्नांन सम देह स्वरूपा। हरि र
सम धर्म तें निधरूपा। उन रूषन के निव
निव मंदर। अन गिन महल महा मव सुंद
र॥ २४॥ चौपाई॥ महल महल पर धुजा प
ताका। परसोतम अरष नांवलि षराषा। ध
जा पताका लहरत ऐसें। षिमत बीजरी ब
जत क जैसें। रत्न जटित तिन की अंगनाई
बैठत उठत चलत हरषाई। काम क्रोध नहीं
लोभ अधीरा। निर्मल दिव्रा सील गुन धीरा
जहां न आलस नींद जंभाई। तृष प्यास म
लतान हिं भाई। मैल पसीनों औसनों हीं॥
दिब्य देह धर रहे गुसांई। एक रूप एकै ग
ति पाई। एक बरन एकै सब दाई। संसे सो
ग रोग नहिं दहैं। मगन रूप मन आनंद ल
है॥ २५॥ चौपाई॥ षोडस बरस अवस्था
नित ही। गुन पोरष हरिजन के अति ही। दि

बन्नूषनदिबबस्तरअंगा। स्यामगातसुंद्र
रछबिअंगा। जुलफैंलटकरहीकजिया
री। कुंडलछबिसोहतअधिकारी। नासा
मोतीबकसुढारा। सुंदरतिलकलगतअ
तिप्यारा। दीरघदिरघकलअरुनाई। मा
थेमुकटजटितललिताई। घरघरदिबअ
सनसिंघासन। औरमहासुषहैंहरिदास
न॥ १६॥ दोहा॥ नबमेटनअौरतिमहरन।
तुमहिनिवाऊंसीस। चरनदासचरनन
एसो। नक्षिकरोबकसीस॥ १७॥ सुषदेव
गुरुकिरपाकरी। दीनौंनेदलषाय। साध
नकेपगझ्जतें। सकलबाधमिटजाय॥ १८॥
आसपासहरिजनरहैं। मध्यईसदरबा
र। रसिककेलबजकुंजहैं। ललितह्वा
रहैंचार। राजमहलजनपतरहैं। कापैब
रन्यौंजाय। गिनतसारदाछबिअधिक।
गौरीसुतथकजाय॥ १९॥ चौपाई॥ अनं
तभांनकोसाऊजियारो। वामंडलकोरू
पबिचारो। समतुलऔरकासकूंलाऊं।
बैनसैंनदेताहिबताऊं। वेदसरवंदवो

अमर: १२ सु१ 13

12

रनवीन्हों। दिष्टांतदैनकूंपटतलदीन्हों ॥
आदिअनादिभरातमधामां। जेसेंआदि
पुरसघनस्पामां। सेतरूपसरूपसुगंधा।
सद्जमहकजहांउनतसुगंधा। वारहा
रवडुबाजनबाजें। अनहदसहमहा।
धुनगाजें। दिव्यरूपजोलगेकिवाडा। ति
नकेआगेबागसुढारा। हरीबागअद्भुत
हेनाई। दुजेहारमहाअरुनाई। २१॥ चौ
पाई॥ तीजेहारबागपियराई। चौथेऊ
दोहेथिरथाई उनबागनकेआसापा।
सा। बहुतमनवमजहांसाधनिवासा। मे।
डीमंडफबहुतसुढारी। सेतबरनसुंद
रअधिकारी। साधसंतजहांहरिजनप्या।
रे। दासभावनावनासूरे। षोडशभानंनकी
सुंदरताई जगतजीतडहवेजोजाई। सा।
षाभावडंडस्वतवंदवांई। सषीभावनी
तरकूंजांई। धरैंसरूपअनपमनारी। स
दासुहागिनहरिपियप्यारी। परमपुर।
सपरसोतमपावें। निकटरहेंनितकेल
बढावें॥ २२॥ चौपाई॥ वारेंमुकतज।

हांकरजोरैं। मानबतायतांनबज्ञतोरैं। द
रसनकारनकीसुषदाई। धरमसरूपरहैं
हरषाई। रत्नजटितजहांभूमिसुहाई॥
कोटमांनन्हबिरहतलजांई। एकसमौं
नितरूतन्हबिपावत। सीतउश्नपावसन
हिंआवत। रूतबसंतप्यारीन्हबिसोहैं।
बनघनकुंडलतामनमोहैं। निजहंद
बनहैंबहांई। ताकोअंसकछूहजमां
हां। दिब्यफूलफूलेबज्ञरंगा। बिनेरूत
फूलेरंगबिरंगा। सकलसषीबिवरनह
रिसंगा। गोरीसषीस्यामहरिअंगा॥२३॥
दोहा॥ पुहपज्ञुफूलेरूतबिनां। मौरैंनां
कुम्हिलांय। कईबरनकईरंगसौं। अ
तसुगंधहरषांय॥२४॥ चौपाई॥ उनपु
हपनकोनांवनजानूं। कहांनांवलेता
हिबषानूं। बज्ञतरहरूकुंडरूनघनछांई।
फलअोरफूललगेवनमांहीं। काहूउ
रमनफलनहिंफूला। उहपहूपलेअ
पहीफूला। कोऊलालरूपक्रेछायो॥
कोऊसेतरूपमनभायो। रंगरंगकेहु

रूवषानें।सोपरसोत्तमकेमनमानें।ब
नकेमांहिबजतजहांक्यारी।उहपरा
गबबिन्यारीन्यारी।कईभांतिकीबास
तरंगा।मगनरूपबोलतसुरनंगा॥ब
नबिचसेतरूपछबिनांनां।गोलचौंतर
रूपनिधानां।इकसरवेतनपरमसुढो
ला।कोटभांनछबिअमरअडोला।२५
चौपाई॥जहांपरकमांसषीसहेली॥
बारहभांनरूपअलबेली।दिमदमक
जहांहीरालागे।सातरंगकेझिलमिलं
ताके।ऊदालालसेतऔरपीरा।हरित
स्यामलहरीअतिधीरा।तापरचौसठषं
भोदमके।मांनौंकोटिभांनछबिझमकें
षंभन लगेलालऔरमुक्ता।पन्नाल
गेबेलकीजुगता।मूंगालालपिरोजाना
री।ध्यानधरोताकोनरनारी।एसबलगे
बषानूंऔसें।जैसीजुगतलगीहैंजैसें।ज
ड़लालनकीबिद्रुमडारी।पन्नापातहा
रूगतधारी।चुन्नीपचरंगफूलसुहाए।
फलमुक्ताहलझुकतझुकाए।औरब

×चेतनआनंदरूपकीशोभा×

नीबक्कचित्रकारी।बेलबंककबूटाअधि
कारी।हीरामोतीचेतनहोई।जानेंसाधू
अमर बरलाकोई॥दोहा॥ताकीछबिअतिल
१५ लितहे।सोनासरससुजान॥लगेचंदो
15 वादिव्यअति।चेतनकरोबषान।२०॥।
चौपाई॥लगेचंदोवाझालरमोती।मा
नोंउडगनझिलमिलजोती।झालरबना
चंदोवाकेरी।दिव्यदिष्टकरिसाधनहेरी
तापररंगमहलकीसोभा।अस्थिरइक
मरनीतसुढारी।बनेंझरोषाअद्भुतबा
री।अद्भबकंगूरासुबकसुढारे।चोस
वकलसलगेंअतिप्यारे।रत्नजडता
कीषिड़कीसोहें।ताकेआगेंदिनकर
कोहें।नीतझरोषाकलसनमांही।न
गपन्नालागेसबठांई।२०॥दोहा॥म
निहीरामानकलागे।रंगमहलकेमां
हि।बिनउहचेनिजधामके।क्योंहंदी
षतनांहि।२९।आसपासबकुंडहे
बीचलालकोधाम।चरनदासकूंद्रो।
जये।सबियनमेंबिसराम।३०।जैसें

चौसठषंनहैं। तैसैं कहूं बषान। छत्रसिंघा।
सन बरनहुं। औरस षियन की आन। ३१॥
चौपाई॥ तीसषंनमैं षंनानीस। तामैं चौदा
हषंनाईस। परम बिछौना है थिरथाए। मं
नौं मूरजनलहू बिछाए। तापरसिंघासन।
बडभागी। सेतरूपचेतन अनुरागी। सिंघा
सनपरकछु बिछायौ। सोना ताकी कहत
लजायौ। धरी गेंदवात किया नीके। छतर
सोहै ऊपर पियके। पियकी सोभा कहा।
बषानौं। आदि अंत ताकोन हिंजानूं। अ।
जरहुरस परसोतमस्वामी। सबजीवन।
को अंतरजामी। पारब्रह्म अबिचलअ।
बनासी। बायें अंगरूपकीरासी। ३२॥ चौ
पाई॥ गोरीराधाछबस्यामघन। सिंघासन
परललितमुदितमन। आसनजहां अ
षलजगदीसा। मुकटचंद्रिकासोहे सीस
मकराकृतकुंडलछबि छैसी। जगमैंक
हाबषानौं जेसी। जुलफैं स्याम नवंगमक
री। कजियारी औरघूंघरवारी। सहजसु।
गंधरहै महकाई। तांबी चिकनी औरबा।

ऋ.म. १६
16

लषाई। बांकी भौंह कुटिल अनियारी। तिरछी पलकैं लागैं प्यारी। रसके मांते घूमघुमारे। ललचौंहैं जगदैं कजियारे। बांके दीरघ और ललचौंहैं। चितवत सषियनके मन मोहैं। सुबक अतुला कनां कमैं सोहैं। ध्यान करत मेरो मन मोहै। ३३॥ चौपाई॥ बिजरीसी मुसकान पियाकी मन बैंचन औरन्ना लहियाकी। बदन स्याम घनक हा बषानें। कोटमांन छ बिमुष परवारूं। दिबनी मों अंगमांही सोहै। सूरज कोटकला छबि मोहै। कंठी कंठ धुकधुकी झमकै। ताम धिको सुनम निअतिदमकै। मुतियनकी माला बनमाला। जलसें दे बिधाम की बाला। दिबबघीगल जिंदजडाऊ। नौरतनन के बाजूबाजू। पुंहची कडा कहा छबि गाऊं। समतुल ताकी कहा बताऊं। दिबजहांगीरी दोऊ करमांही। ताकी सम कछु कल मैं नांही। ३४॥ चौपाई॥ रतनचौक मैं लाल बिराजे। सोभा गावत मो मन लाजे। रत्नचौक है पीअ हथेली। लगी जंजीर मुंद

रियनमेली। चौकीसुघरदियैपरराजे। क
टिकिंकनघूंघरूधनबाजे। जुगलचरा
नपैंजनझुनकारैं। दिबटोरेतिनमैंचना
कारैं। कोटचंददसनषपरवारूंतलव
नविद्नइकीसनिहारूं। बावैंअंगरा
धकाप्यारी। कोटचंदन्नविमुषपरवारी
जुगलसषीलियैंचंव्वरढुरावैं। दीयदर
षमहासुचपावैं। षंनषंनढिगसषीसहे
ली। चौदहषडीईसअलबेली। २५। चौ
पाई। औरसषीबङतकवंद्वगाऊं। सो
भाजिनकीकहनलजाऊं। नितकिशो
रीगोरीसारी। पांचतत्नतिरगुनतेंन्यारी।
दिबबस्तरदिबभूषनजांनां। अधिकरू
पछबिबारहमांनां। कजियारीकचल
टकेंबैंनी। मुतियनमांगभरैंछबिपैंनी।
चूडामनिगदनोंअतिनीको। सीसफूल
औरबैंनौंटीको। करनफूलसंगबंदी
लागी। झुमकेथिरकेंमहासुभागी। अं।
जनअंजेनैंनठगारे। तीषेअनियारेपि।
यप्यारे। घूंघरवारीअलकैंलटकैं। बेस

अमरः
१७

17

रनासाछबितियैंमटकैं।३६॥चौपाई॥वं
पाकलीनौलडीमाला।चंदनहारसुपहरैं
बाला।कवलाऊसैंगलेजनेक।औरहिये
वोकीमहाअनेक।सषीसिंगारहारसब
सांधें।बाजूबंधबांहनपरबांधें।सदासुहा
गनपहरैंचूडी।सुबकपहूंलीबंगरीरू।
डी।कंगनीऔरपहरैंजहांगीरी।रतनचौक
छबिलगीजंजीरी।छापछलाऔरपहरैं।
मुंदरी।नुंहसतपहरैसुंदरअंगुरी।पाइन
मैंपगनेवरबाजैं।नषसषलौंआनुषनसा
जैं।औरसषीबिषरीबनमांही।सोकाहू
बधगिनीनजांई।३७॥दोहा॥सुंदरछा
विपियरेबसन।फुंडसबिनकोजांन।को
ईपुंजऊटेबसन।सुघरसंवारीआंन।३८।
लालबसनबऊकसषी।सेतबसनबा।
ऊनार।लीलबसनबऊनामिनी।सबके
रूपअपार।३९।हरेबसननारीघनी।घा
नीगुलाबीनेस।बऊतफुंडकईरंगसौं।
गायसकेनहीसेस।४०॥चौपाई॥निजा
बनचौसवषंनेमांहीं।होतअषंडरास।

वंदवाई। कुंदसबेयोंनवनवनआवें। ज
लसजलसलालनढिगधावें। रासकेल
षेलैंबजरंगा। सदाबिहारकरैंपियसं।
गा। कबहूंघुमरघुमरघुमरावें। नैनसें
नदैभावबतावें। कबहूंथईथेईथेई।
थईकरैं। कबहूंअंगुरीनासाधरैं। क।
बहूंकरउवायुगतवालें। सांगउपांग
बतावतहालें। कबहूंठुमकठुमकप
गधावें। घुंघरूकीगतअधिकबजावें।
हांअनुरागरागिनीगावें। बाजेअद्भुत।
अधिकबजावें। ४१। दोहा। कहाबुध
कहाकहसकूं। रासकेलकोसाज। अ।
द्भुतलीलाह्वेयरही। बरनतआवेलाज
४२। अषंडधाममलीलाअमर। नितवृंद
बनरास। नितबिहारजहांहोतहै। चा।
रनदासकोबास। ४३। गौरीसुतनहीगा।
सकै। नहीसारदाबाम। चरनदासकह
बुद्धहै। बरनसकैनिजधाम। ४४। बडी
दयामोपैकरी। कृष्णकुंवरसुनलाल।
बानीआपबनायकै। कीनोंमोहिनि।

अमरः
१८
18

हाल।४५।मम हिरदे मैं आय कै।तुम।
हि कियौ परगास।जो कुछ करो सो तुम
कहो।मेरे सुष संनास।४६।आदि पुरा।
स परमात्मा।तुम हि निवाऊं माथ।चर
नन पास निवास दै।कीजै मोहि सनाथ।
४७।तुमरी नत्ति न छाडहूं।तन मन सि
र क्यौं न जाव।तुम साहिब मैं दास हूं।म
लो बनौ है दाव।४८।सुषदेव गुरू कि।
रपा करी।मरष नयौ प्रबीन।मम मस्त।
ग पर कर धर्यौ।जान निपट आधीन।।
४९।कोट नांव को फल लहै।तिरबैं ना
स्नान।सो नागावै लोक की।मरष होय
सुज्ञान।५०।पढै सुनै जो ग्रा तिसौं।पावै।
भक्ति जलास।नित उव कर तू पाठ यह।
चरन दास कहि नास।५१।जेम बढै आ।
घ सब हरै।कलह कलपना जाय।पाव
कर्या लोक को।ध्यान करत दरसाय॥
५२॥इति श्री अमरलोक [illegible] निजधाम
निज अस्थान परमोतम पुरष बिराजमा
न ग्रामे नरोडर्ली मो॥इति श्री सुषदेव।

जीकेदासचरनदासजीकृतअमरलोक
लीलासंपुर्णसमाप्तं ॥ अथषटरूपमु
कगुरुचेलेकीगोष्टलिष्यते ॥ दोहा ॥ श्रीः
॥ संपरदासुषदेवमुनि। चरनदासगुरुद्वा।
र। परमधरमनागोतमत। नक्तिअनन्यवि
बचार ॥ १ ॥ छप्पै ॥ बोधरूपसोगुरुषमहा
विज्ञाउजागर। अज्ञानतिमिरकूंहरकर
नज्योंकोटप्रभाकर। सोवेदूनकेविदेह
देहजिनधारीकीन्ही। रहेराजकेमांहि
सुरतकबहूंनदिंदीन्ही। औरजिनके
सिषसुषदेवहैंनगवृतमतपरगटकि
यो। चरनदासपरिनामकरितनमनध
नवारनदियो ॥ २ ॥ छप्पै ॥ गंगजमनके
बीचजूहांनिजडेरादीन्हां। मनमाताब
कुरूपषैवअपबसकरिलीन्हां। उगा
सहघनघोरतरअनहदधुनबाजा। जा
तेपांचपचीसनयोपूरनसबकाजा। अ
ष्टजोगकूंसाधतुमनएरूपअद्भुतबरन।
जनछोनापरिनामकरिसुचरनदास
तारनतरन। ३ ॥ चौपाई ॥ महाराजगुर

बंदन करूं। चरन तुम्हारे माथा धरूं। चर-
न दास सगुर मो सनि वाऊं॥ दे पर कर्म्म ना ब-
लि बलि नाऊं। जो कोई सरन तुम्हारी आ-
वै। डब धमडं दतिमरन मजावै। दास तु-
म्हारो बानती करै। तुम किरपा ते व सा
गर तिरै। तुम प्रगटे कुग में उजियारा॥
ज्यों सूरज निकसे संसारा। सो व ततेन
र दिये जगाई। जीव उबार नक्कि फैलाई
किरपा सागर सिंध अपारा। अमी पिवा
य करो मोहि पारा। दुसर कुल जेन मैं।
सुष दाई। जन ह्वौं ना की करो सहाई॥४
॥दोहा॥ जो जो आये तुम सरन। सो सो
उतरे पार। बहुत क नर गुर सरन बि-
न डूब गये मक धार। ५। चरन दास सगु
र देव जा। पंथ बतावो मोहि। नक्कि आप
नी दा जिये। तन मन अरपू तोहि। ६। क
र जोरूं बिनती करूं। नक्कि करो मोहि
दान। जन ह्वौं ना आयो सरन। अपनो
करि मोहि जान। ७॥ चौपाई॥ बूस रू
प के सें कर पै है। जीव नाव के सें न स।

जेहै। हमैंकोनकहांतैंआयो।जेहंक
हांकोंनडुनलायो।उतपतपरलैकेसें
होई।किरपाकरोसुनावोमोई।जीवब्र
ह्मकेसंहोयजावै।देहममतकेसैंनस
जावै।ज्योंकाज्योंदाजेसमफाई।नासंपा
रअविद्याजाई।त्यागूंकहाकहाछुन
राषूं।कासूंमोंनगहूंकहानाषूं।संजा
मकहा।कोंनविधसाधूं।अंतध्यानक
हाआराधूं।बरनदासगुरतिमरनजावै
।आनमज्ञानध्यानसमफावो।दोहा
निरगुनसरगुनरूपदोदाजेनेदबताय
छोंनापरकिरपाकरो।१छतहूंसिरना
यु।९।सासनिवाबिनतीकरूं।अरजा
करूंमहाराज।संसैसकलनिवारिक
रि।छोंनाकेकरिकाजु।१०।मुक्तनेदा
षटरूपहैं।तिन्नतिन्नकहदेव।कोक
रनीकहावासहै।कहोमोहिगुरदेव।
११।।गुरबचन।।दोहा।।धनछोंनापूछ
नकरी।धन्नतुम्हारीबुध।सरवनदेवि
तवनकरो।सकलकहूंमैंसुध।१२।छि

पीबातसबहीकहूं। कछूनरापूछेद। मे
रीतेरागोष्टकूं। सुनेंसुमेटषेद। १३। ऊन
षट्मु भमरनदुषसबमिटें। चोरासीकेत्रास॥
२०
ज्ञानहोयश्रोगनछूटें। पावेंमुक्तनिवा
20
स। १४॥ कुंडलिया॥ सालोकमुकत।
सांमीपता। श्रोरकहियतसारूप। चोथी
तोसाजूजहे। करनीमहाअनूप। करन
रमहाअनूपरहनकोईबिरलापावे। पं
चममुक्तबिदेह। सोईसतगुरसमकावे।
छठीसुजीवनमुक्तहे। अवरजनेदअप
र। निन्ननिन्नसबहीकहूंसुनछोनां
उरधार। १५॥ दोहा॥ सालोकमुकतप
हलेंकहूं। सबसेंछोटीहोय। संसार।
ज्ञानेंनहीं। समझेसाधूकोय। १६॥ चोपा
ई॥ करनीतोहिबताऊंसारी। जोहरिजी
कूंलागेप्यारी। जासूंरीकेंगेहरिराया॥
चरनकंवलकीकरिहैंछाया। जीवत
सुषद्मगतमेंलेहें। अंतलोकमेंबासादे
हें। तनछूटेंजालोकबिराजे। बेकुंठ।
लोकमेंनिर्नेराजे। उनकेसुषक्षोंकहा

बतावै। जो कोई जाय सोई फुन पावै। कर
नी कहं सुनों अब जेती। निहचै मुक्त हो
य जासेती। तीरथ बरत करै चित लाई। प
रसै बिष्णु महा सुषदाई। आन देव की करै
न पूजा। हरि बिन राषै नांव न दूजा। बरन
दास कहै सब सुन लीजै। ह्यौं नाम न मैं नि
हचै कीजै।१७। दोहा। कथा सुनै चित।
दे न करै। करै कीरतन ध्यान। बंदन का।
रि सुमरन करै। नांन्हां पन की आन।१८।
कपट कुटलता सब तजो। सुबुधि राषै म
न मांहि। औसें परमारथ सधे स्वारथ।
सनीन सांहि।१९। चौपाई। सील हि मांज
न सत संग रहो। सत्त सत्त मुष सेती कहो।
परदारा परधन तें डरो। मद न मोह तज
नो जलतिरो। रामनाम अंतर गह राषो।
कूप बवल कडवा मत नाषो। नाम समा
न और न हि होई। नर नारी सुमरो कौं न
कोई। नाम बिचारें आपा सूझै। देह संजे
रगा ब्रह्म कूं बूझै। नाम बिना कोई साधन
साधे। जैसे बांझ पूत आराधे। अन्न बिनं

×हर घर रवा मैं मन कूं जारो कुबुध्य रमता सकल निवारो×

ऊसैंतुसकूटै।पावैकहानगनकूंलूटै
२०॥दोहा॥जोगजज्ञतपनामबिन।से
वीअफलहोजांहि।फलसैंबलकोसे
यकर।कहानिकासैमांहि।२१।नामलि
येंपातिगकटैं।उदवेहरिकेदेस।ब्रौं
नाकेगिरहाजपो।केअतीतकेनेस॥
२२।नृषेनोजनदीजिये।प्यासेदीजैनी
र।छौंनामीगबोलिये।द्योहजडायेंव
र।२३॥चौपाई॥रोटीमैंटुकरादेषा
वो।सरक्षाहोनरउदरजिवावो।बिन
सरक्षकोईडंडनकीया।यहउपदे।
ससहजमैंदीया।जातबरनमैंनेदुन
राषो।नृषामांगतिद्याना।षो।तनमन
बचनसकलसुषदीजे।सबजीवनक
१रिद्याकीजे।तजअभिमानदीनना
गहियै।जोकोईकहैतोसबकासहिये
आगैसोंहंसदीजेनाई।पापतापडब।
जोहिनसाई।हेसरायकाजगतबसे
रा।ह्यांनहितेरानिहचलडेरा।बरन
दासकहैअैसाकरो।जोड़जोड़घरमें

षटमु॰ २१ २१

मतधरो।२४॥दोहा॥जोकुछबनैंतोछुन्य
करि।ऊथासकतकेदाय।अबतारथ
कीकहतहूं।जाबिधयासनरन्हाय।२५
चौपाई॥चरनपयादेतीरथजइयै।ना
वीपलकरामसुषकहियै।पापपतियह
नांहीलाजे।चलतैंदयाधर्म्मीहांकीजे॥
जोजनदूरैगैरकरबासा।तीरथरजन
हिंकरैनिवासा।परबीकेदिनतीरथजा
वे।पहलैंअपनीगैरहीन्हावे।महासुध
होकीजेदरसन।तीरथदेवहोयजब
परसन।फूलपानमिष्टानचढावो।करि
करिदरसनमासनिवावो।तीरथमांहि
पांवनहिंदीजे।आवाहनकरकरजल
लीजे।एकतीरथाबाहरन्हइयै।बसन
निचोड़ानांहींचहियै।२६॥दोहा॥जल
चूवतपातगनसैं।मनसुधनिर्मलअंग।
चरनदासकहैयाजुगतसं।जोकोई।
न्हावैगंग।२७॥चौपाई॥उंहांगैरआ।
वैऊहांउतरा।ऊबधोबसननिचोड़ेसु
घरा।अपनीसरधाद्विजनुगतावे।अैसैं

तीरथकरफलपावै। ऐसेंतीरथहोय
तोकीजै। नांहीइनमेंचितनहिंदीजै। ती
षटमु-रथबरतकरैनरलोई। तामेंपापक्षुना
२२ नहिंहोई। मेलाजानतमासेजावें। नीर
३२ केफलकैसेंपावें। कूदकूदजलगदला
करें। करेंअवज्ञानांहीडरें। समकैंनां।
मूरषअज्ञानें। साधनसंकगरोबजुग
नें। ऐसेंदुष्टमुकतनहिंपावें। फिरफि
रजूनासंकटआवें। २७। दोहा। तीरथ
न्हाबिधजुगतसूं। मुकतहोनकीरीत
बर्तकहूंविधदूसरी। जनछोनाकेप्री
ति। २८। चौपाई। ग्यारसबरतीऐसेंरा
हय। जसेंधर्मनीककूंचहिये। सांचाबा
तैबताऊंतोहा। गुरमुषदेवबतायोमो
हा। नोमीनेमकरेचितलाई। दसमीसं
जमजुगतबताई। ग्यारसबर्तबताऊं।
नीका। सबहीबर्तसरोमनटीका। नि
रजलकरेनीरनहींपरसे। उहफाटै
जबसूरजदरसे। एकपहरकेतड़क्के
ड़ागे। जबहीसुमरैंकरनेलागे। कर

दिवा रसशुद्ध करि काया। जाकै बैठै नव
नमं काया॥ कोठे के पट दे कर राषै। नर
नारी सौं बचन न राषै। कुंड का ढै बैठै ति
ह मांही। ताके बाहर निकसे नांही। कर
आवाहन आसन मारै। बर्त करै बैराग
हिं धारै। जप गुर मंतर के हरि ध्याना। जा
कूं नेक न हो बिसराना॥ ३०॥ दोहा॥ जे
तेरे गुर ने कहा। जा का कर तू ध्यान। बै
ठ अस्थिर नो पहर। करो बर्त पहचान।
३१। बर्त करैं त्यों हार सा। नां नां रस के स्वा
द। जोग करैं तप नां करैं। सब करनी ब
रबाद॥ ३२॥ चौपाई॥ पांचों इंद्री बर्त क
राजे। पलक झांपनैं नैन पट दीजे। इत वि
त मन दोनां हि चलावो। आष कूं नहिं रू
प दिषावो। सरवन सबद न षड़ये नाई।
तुचा न सपरस अंग लगाई। षट स्वाद
न जिभ्या दीजे। नासा गंध सुगंध न लीजे
औसा बर्त करै तो बती। मुकत होय गया
रस का करता। औसा बर्त जो तारै पारा। बै
रना तिरत न लागे बारा। बजुर घाद सा

रस

बादरस्रावै। स्रपनी सरक्षा विग्रजिवावै। स्रै
साबर्तमुकत विधकहियै। सतगुर केबा
लककूंवहियै। २३। दोहा। विक्षनक्क
तीरथकहा। बर्तकहा सबषोल। यह
करनी सालोककी। चरनदासकहीबो
ल। २४। यहकरनीरहनीरहै। मिटैपा
पकेथोक। चौरासीजरमनमिटै। बसै
बिष्णुकेलोक। २५। इतिसालोकसमाप्त
[illegible]। १। अथहरीसामीपमु
क्त बर्नन। दोहा। गुरबचन। सामीप
मुक्तअबकहतहूं। अंगअंगसमझा।
य। जिंहसाधनहरिकूंमिलै। चरनकंव
ललिपटाय। १। चौपाई। सेवगहोह
रिसेवाकीजे। तनमनसुरतजहांलैदी
जै। जगतबासनासोराबिसारे। दासात
नहोटहलुनिहारे। मनसोंहरिकीकी
जेपूजा। हबिनराषेताव्नहूजा। स्रन
न्यनक्कगोबिंदकूंप्यारी। जोकोईकरै।
सोईअधिकारी। आनधरमसबवित
सौंत्यागै। हरिकेचरनसरनहांलागै। ।

षटमु
२३
23
मुक्त

गिरहनकूतरसोंननमानें। मंगलदेव। कीसेवनगानें। तीरथबर्तसुकर्महिघर पे। जोकुछकरेसुहरिकूंअरपे। सामीप्यमु क्तकीयहबिधकहिये। बरनदासता संपदलहिये। २॥ दोहा॥ कहाराजस मानसो। पूजाकहियेंदोय। बर्नतिहूंअ बमानसो। छोंनासुरतसमोय। ३॥ करस्नानपवित्रहोय। खेतिलकऔरछाप। अतिहाप्रेमऔरनेमसों। हरिसेवाअस्थाप। ४॥ चौपाई॥ मनमेंमंदरसुंदरर चिये। तामेंहरिकीसेवासचिये। कंचनम हलबहुतअस्थानो। नवनतिबारीऔर कहुंनानो। कांचमहलकीसोनानारी रंगमहलसुंदरअधिकारी। जहांबिरा जैलक्ष्मीनाथा। आपनकूंभक्तदेषसाथा दासभावहोसेवाकीजे। निकटबिराज प्रेमरसपीजे। भोरभयेंसोवतहरिजागें हाथजोरगाढोरहेआगें। अंजालेपानी नरलावो। हरिजीकूंदातोंनकरावो। मु षधकालसबदेहधुलावो। देहअंगो।

षटमु
के२४

४५

छागातउछावौ।५॥दोहा॥पीतंबरकीधो
वती।लैहरिकौंपहरावः।नषसषललषछ्री
बदेहकी।अपनेंनैंनरिकाव।६॥चौपाई॥
सिंघासनपरलैबैगवौ।नौतमबागाचुंना।
पहरावौ।जैसेवस्तरतोमनभावैं।रातेपीरे
सेतसुहावैं।मस्तगऊपरमुकटधरावौ।नष
सषभूषनललितकछावौ।लेदरपनमुष
छबिदिषलावौ।दपरकमांबलिबलिजा
वौ।हाथजोरफिरगढौरदे।इकटकदेषै।
दिष्टनबहे।फिरभोजनकीअज्ञालीजै।स
कलसौंजसजबिंजनकीजै।नांनांबिधके
बिंजनकीजें।ताभोजनसौंहरिजूरीझैं।आ
सनवौकेमांहिबिछावौ।तापैमहाबिष्नु
बैगावौ।थालकटोरेधरतिंहगांई।नांनां
बिधभोजनलिंहमांही।सोरनझारीजल
भरधरियै।भोगलगेजबगढौरहियै।७॥
दोहा॥आदिछुरसजीवनलगें।तंवगदो।
करसेव।भोजनकरअचवनकरैं।दो।
रअंगोछादेव।८॥चौपाई॥हाथपौंछ
फिरबाहरआवैं।संवारपांनदेबीरीषा

वैं। काचमहलमेंसेजसुधारो। ऐसीसेवा
मनमेंधारो। हरियोढेंजबचरनपलोटै। अ
पनेंनागजांनतमोटै। जबजागेंमुषनीर
धुलावे। सिंघासनपरलेवेगवो। फिरया।
ढाहायवंवरढुरावै। हीयेंजलसहरष।
मुखपावै। संध्यासमेंआरतीकीजे। तनम।
नसकलनीछावरदीजे। तवहीसोंपदगा
वनलगिये। एकपहरऐसेंहीतकिये। अ
ज्ञालेफिरसेजविछावो। फूलपांनतिंहनि
कटधरावो। हरियोढेंजबपांवपलोटो।
तुमसोवोतोचरननओटो। ९। दोहा। ६।
द्विविधयहजामानसी। मनमेंकीजेमीत। आ
वपहरसागोंघरी। टहलकरनकीचीत।
॥चौपाई॥ ध्यानमध्यहरिरूपविचारे। नष
सषलोंछविफलकनिहारे। दासअंग।
निसवासररहे। अनन्यभावडिढहीका।
राहे। हरिकीसेवानिहवेगानें। वारवा
र:सुतिवषानें। मोहलोनत्यागेजवका।
म। देहछुटेपुंन्हवेहरिधाम। देहअनूप
घरेदिवनारी। निकटरहेकेनरकेनारी।

दासअंगहोसेवाकरै।हरिकेनिकेनिकट
सदाहीरहै।।११।।दोहा।।साधोंकारनलेतहैं
हरिजगमेंअवतार।जहांतहांजनसंगा
लियेंषेलतषेलअपार।१२।सदारूपनि।
रषतरहैं।रहैंनिकटजनजांन।चरनदास
कहैंसामीपता।ऐसीबिधपहचान।१३।।
इतिश्रीसामीपता।।मुक्तसंपूर्नीस
मा।।३।।अथतीसरीसारूपमुक्तबर्न
ते।।:गुरुबचन।।चौपाई।।सारूपमुक्त।
बिनप्रेमनपावै।लगैनेहआपाबिसरा।
वै।षानपांनसुधरहैनकोई।आवैप्रेमजा
यबुधषोई।हकधकरहैकभीवहरोवै।
नैनमूंदकरिप्रेमसमोवै।पांवडिगमगे।
अकबकबानी।प्रेमलटकयोंजायपि
छानी।उमंगउलासकभीवहगावै।का।
बहूंहंसेमगनहोजावै।जागतध्यानध्या
नकरसोवैं।राषेध्यानआपकूंषोयैं।जे।
सरूपकोजाकूंध्यानां।सोईहोतहैता।
हिसमानां।चरनदाससारूपबषानी।।
छोनाबेदपुरानननजानी।१।कुंडलिया।।

षटमु
क्त२५

25

इहबिधध्यानसदाकरै। आपाआपबि
सार। जैसैंभृगीकीटकूं। करैआपउनि
हार। करैआपनेंरूपकोइसाक्षजन।
बूझै। धरैचतुर्भुजरूपबरनइजानहि
सूझै। चरनदासकहैसुनऊधोंमनजी। या
हीमुक्तसारूपता। अबतोसौंचौथी
कहूं बेदकहीसाजूजता॥२॥ इतिती
सरीसारूपमुक्तसंपूर्णं॥ समाप्तं॥ अ
थचौथीसाजूजमुक्तबर्ननं॥ दोहा॥
सिध्यबचन॥ तीनमुक्तजेतुमकही॥
सोआईमनमोर। जनऊधोंनासाजूजता।
भ्रवतहैकरजोर। १॥ गुरबचन॥ तत्त्वमि
बनांसाजूंजता। पावतनांहीकोय। साधे
जोगबैरागकूं। लहैतत्त्वकूंसोय। २। सिध
बचन॥ तत्त्वमिलनकीसाधनां। कहो।
मोहिसमझाय। कहाजुगतकहाध्यान
है॥ भ्रवतहूंसिरनाय। ३॥ गुरबचन॥
तत्त्वपदारथकठिनहै। बिनांजोगअभ्या
स। जिंहसाधनसबहीमिटै। मिलसमा
धमेंआस। ४॥ चौपाई॥ आसनसंजम।

जुगतअहारो। सहजसहजकीधारा। नधारो। इं डिनकेगुनलैमेंगारो। तन। कूंबसकरमनकूंमारो। इं डिनकोस्वामीमनजानों। मनकोस्वामीपवनपिछानों। पवनकोस्वामीअनहदनादा। नादकोस्वामीकहीसमाधा। जबलगरहेसुरतफुनजागी। तबलगकहियेधानसुनागी। सुरतलीनहोवहीसमाधा। मिटेंबासना षेदअगाधा। वारोंअंतसकरनमुनाई। नानांबीजनउपजेआई। सबैबासनादग्धकरावो। गर्भजोंनसंकटनहिंआवो। असेंजनममरनमिटजाई। सुनछोंनाचरनदासबताई। ५।

दोहा॥ नवोंद्वारकूंरोककर। दसवेंकाढेधान। साजहजमुकतसोईलहे। पावेपदनिर्बान। ६। मुंडजेंबडीजुषेचरी। बंधोंबडाजुमूल। नारिनबडीजुसुषमनां। रहैजुनिगुराभूल। ७। सिद्धपदमआसनबडे। केवलकुंभकमांहि। बानीवारोंमेंपरा। इं हिसमतुलकोईनांहि। ८। चारअ

षटमुद्रा ३६

26

वस्थामैंबडी। तुरीअवस्थाजान। जहां सब्वतानंदहै। नहीं मूलपह्चान। सीपर मसुन्नसोध्याननां। जहांलीनमनहोय। जापनअजपाजापसा। चरनदासलहै। कोय। ॥ २० ॥ साजेनमुकतवहीजानियैं। जो तमैंजोतसमाय। परमधरमनागोतमत। तामेंदियोदिषाय। ॥ २१ ॥ इतिसाजनमु क्तचौथीसंपूर्णा। समाप्तं ॥ अथपांच वीं बदेहमुक्तबर्नते ॥ गुरबचन ॥ दोहा ॥ बिदेहमुक्तअबकहतहं। पा रमहंसकोभेद। जातेंदेहअपाधकी। सा बहीछूटैंषेद। १। चौपाई ॥ सांष्यजोगा कीधारनलीजे। नित्यअनित्यबिचारना कीजै। नीरछीरकरिन्यारोन्यारो। देहअ पाधदेहसिरडारो। आतमरूपआपपप हचांनौं। आपनकूंआतमहींजांनौं। आ तमनित्यअनित्यसुकाया। देषेसुनेंक हेसोमाया। तूंनहिंदेहनइंद्रीबाचा। चि तबुधमनअहंकारनराचा। पंचबिषे पांचौंतततनांही। तीनौंगुननांहीतोमां

षट०
+२०
27

हीं।पावैंइंद्रिनकेरसत्यागो।देहमोहत
जअग्यानमपागो।रोगभोगसुषरहैनको
ई।बर्नआसरमजांहिलहकोई।।बिदेहमु
क्तऐसैंकरपावै।चरनदासयहबिधा।
समझावै।२।।दोहा।।देहजुदाकरदेहमैं
रहज्यौंपरस्थान।दुषसुषमानेंनांहिंनें
बिसरैदेहाज्ञान।३।चौपाई।।काहूकी
संक्यानहिंमानैं।रावरंककूंनांपहचा
नैं।सिंघसर्पकोभैनहिंब्यापै।कायाले
खतजेजबआपै।पावकसस्त्रको
भैनांहीं।उत्तममधमलषैनकांई।रो
गहोयसहजैंभुगतजाई।जतनकहा।
पहलैंबिसराई।करमधरमऔरनें
मअचारा।कौनकरैनहिंदेहसंभा
रा।बालकतनसहजैंहोई।अपनीसु
गतनइच्छाकोई।बिदेहमुक्तपरग
टदसाई।रहनगहनताकीसमझाई
होयपरमगतकहाबषानैं।जौंनासु
कोहोयसोजानैं।४।।दोहा।लछनमु
क्तबिदेहके।कहेतोहिसमझाय।।

जीवनमुक्तबतायाहूं।सुनहौनाचित
लाय।५।इतिपांचवीबिदेहमुक्तसंपू
र्णसमाप्त।अथछठ्ठागजीवनमुक्तवर्न
ते।गुरबचन।।चोपाई।।जीवनमुक्ताव
हीकहावे।जीवतजनममरनछुटजा
वे।जगतबासनारहैनकोई।जीवअ
वस्थानांहीहोई।।बंधमुक्तकासंसानांहि
१।आतमरूपलषैघटमांही।जडकूंचे
तनरूपबनायो।ब्रह्मज्यूंजबनासी
माया।सबहीब्रह्मआपब्रह्महोई।इ
ष्टादिष्टनआवेकोई।कामक्रोधमदक
रसंउपजे।मोहलोभकबजूकासूंनिप
जें।बेरशीलिवहकासूंकरे।काकीसर
नकौनसौंडरे।वरनदासऔरगकुर
केसा।जेसेंबिषअमृतहैजेसा।२।दोहा
रावरंकसबएकसे।नारकुरषसबएक
जैसैंमांटीएकही।बासनबनेंअनेक।
२।चोपाई।।ऐसेंसबकूंब्रह्महीजानें।
ब्रह्महतसोंब्रह्मपिछानें।नाहरनाग
पश्रब्रह्मरूपा।पानीपावकब्रह्मस्वरू

पा।तौजबकासौंकोवृहजागै।कासूंडरे
कौंनसंगलागै।जीवृतमरैजाहिकोमा
षटमु· रै।शस्त्रछेदनपावकजारै।ब्रह्मरूप
२९ आनंदकुलासा।इछ्याडुईगलाईआ
28 सा।दुषसुषरहितपरमगतपायैं।जा।
वृनमुक्तानरमजलायैं।आपब्रह्मसब
हीब्रह्मदीषे।ऐसीविद्यांगुरसंसीषे॥
सुनहौंनाचरनदाससुनावैं।लक्षन।
जीवृनमुक्तदिषावैं।३।सिषबचन॥।
करनीजीवृनमुक्तकी।ब्रह्महौंनकी
कौंन।सतगुरमोहिबताइयै॥छूटसंक
टजौंन।४।गुरबचन॥जीवृअविद्यास
बमिटै।इछ्याडुईनसाय।चरनदास।
यौंकहतहैं।जीवृब्रह्महोजाय।५।चौ
पाई॥पहलैंब्रह्मज्ञानकूंपावै।दूजैस
तगुरब्रह्मलषावै।तीजैब्रह्मजोगक
रनाई।चौथेब्रह्मरूपहोजाई।ब्रह्म।
ज्ञानवृहब्रह्मपिछानैं।कायाबचन।
परेहीजानैं।पांचतत्तसौंन्यारासोई।दे
षेसोततदरसीहोई।ब्रह्मजोगीब्रह्म।

होगलतानें। याकानेदगुरुसैंजानें॥ अ
मलवहैआपैब्रह्महोई। आपैब्रह्मब्रह्म
जगजोई। जबवहहोवैजीवनमुक्ता। जि
हकारनजोगीबहुजुगता। मनकीकर
नीतनसोंन्यारी। चरनदासकहैमोहिं
पयारी॥ ६॥ दोहा॥ रूहमुकतकोभेद
जो। तिन्नतिन्नकहदीन। जाकूंलेहिर
देधरो। छौंनासिषपरवीन॥ ७॥ सिषब
चन॥ चरनदासकेचरनकूं। बारबा।
रपरिनाम। छौंनाकेसंसेहरे। दियाप।
रमसुषधाम॥ ८॥ इतिषट्रूपमुक्तगुरुचे
लेकीगोष्टसंपूर्णंसमाप्तं॥ अथश्रीसु
षदेवजीकेदासचरनदासजीकृतजो
गसारलिष्यते॥ छप्पै॥ गुरुजनकको
सिष्यतासकोदासकहाऊं। सदारहूं
हरिसरन। औरनांसीसनिवाऊं। साध
नसूंयहीचहूं मोहिहरिनकबतावो॥
मायाजालसंसारताससूंबेगछुटावो।
गुरदेवनगुरदेवयहीसुनलीजिये। चर
नदासनककृपाकरिदीजिये। १। छप्पै
कूं

जोग
२९

गुरईस्वरगुरईसरीकगुररामबतावैं।गु
रकाटैंजमफांसबिपतसबअघैनसा।
वैं।गुरदेवनकेदेवहैंवब्रह्मआदिलष
वैं।गुरजोसागरतारपारवंहलोकबस
वैं।चरनदासयहजानिकैसतसंगत
हरिकूंतजो।सुषदेवचरनचितलायकैं
सोकुंजकानडुबक्षतजो।२।छप्पे।।पग
तसुद्धजबहोयसाधकेमगकूंधावै।।
हस्तसुद्धजबहोयदोऊकरसीसनि
वावै।नैनसुद्धजबहोयसाधकेदरस
नपावै।रसनसुद्धजबहोयरामगुनमु
षसंगावै।मनचरनदाससबसुद्धहोय
जबचरनपरससुषदेवके।आतमतं
त्रबिचारकैकरदरसनअलषअभेवके
के।३।दोहा।।डषमेटनसुषकेकरन।।
चरनदासवेसाध।दाताज्ञानबिज्ञानके
देवैंमताअगाध।४।परकम्मातुमरीक
रूं।औरनिवाऊंसीस।मायाजीतूंहरिज
डूं।नककरोबकसीस।५।नंदरामबि
नतीकरै।सुनोंईसगुरदेव।तुममहीदाता

नक्रके। जोगजुगतकहदेव।६। चौपाई॥
गुरबचन॥ इडापिंगलासुषमनधारो॥
आसनबज्रनागनीटारो। द्वादसअंगुल
गहो। बेधषटचक्रकरलीजे। जबबाजेअन।
हदतूर। जहांमननिजकरिदीजे। षचरी
मुद्रात्रिकुटीआवे। अंमृतपिवेपरमसुष
पावे। मेरडंडकूंज्ञानचलावो। सुनसिषर।
जबनगरीपावो। जानगरीमेंचंदनज्ञान
पुंहचेसाधचतुरसुजांन। जहांजातपांत
नांवनहिंनाता। सेतस्यामपीतनहिंराता।
जोगजज्ञतपजहांनदांनां। तीरथबर्तजि
हांनहिंन्हांनां। किरियाकर्मजहांनहिंपू
जा। मेंअंनतहहै एकनदूजा। जहांसांझद्यो।
सनहिंराता। एकेब्रह्मअषंडबिधाता। च
रनदासरामकीघाटी। पुंहचेगुरमतसरे
ओछीबुधबादबकजगनें। करनीकरे।
सोपूरा।७। सिषबचन॥ चौपाई॥ मन
क्यांकेसेंबसमेंलाऊं। क्योंकरअनहद।
सुरतलगाऊं। क्योंकरमूलचक्रआरा।
धूं। जोगजुगतकेसेंकरिसाधूं। केसेंअन

हदतरवजाऊं। क्यौंकरगगनमंडलघर
छाऊं। कैसैंसकतीवदैग्रकासा। सुन्नसि
षरमैंपाऊंबासा। इंद्रीमनमोहाथनग्रावैं।

जो॰ यु॰ ३०

ग्रोरपवीसोंवक्तसमावैं। जोगजुगतक
हुकैसैंकरहूं। कैसैंकविनपंथपगधरहूं। नि
तउवमनसाडायनदहै। वैवलचितग्रस्थि
रानहिंरहै। नंदाकहैसुनोंगुरुदेवा। मन
केजीतनकोकहुभेवा। ५। दोहा। जोगजु
गतमनहोयबस। इंद्रिनकोसिरदार। ज
बपवीसोंथकरहैं। पवनमिटैबिकार। ६।
जोगजुगतकोभेदयह। तिन्तनिलसम
भाव। पहलैंहींकहाकीजिये। सबसंदेह
मिटाव। १। चौपाई। गुरुबचन। कामक्रो
धपहलैंपरहरै। मोहलोनचितमैंनहिंधरै।
तजैगर्बग्रौरकरैबिचारा। पापपुन्यसूंर
हैनियारा। जन्नसत्तमनधीरजग्रानैं। ग्रा
सातिग्राडबधननानैं। सीतलहिमांसंतो।
षीहोई। बुधबबेकमनराषैसोई। परतिर
याकूंमाताजानैं। जंतरयौंना देवनमानैं।
तजैकीमियांजगमैंनाहीं। समभदेषग्रा।

112A

पितामाताकैनहीं। नहींकुटंबकोसाज। स
हजोवाहिनरंकता। नांकाहूकोराज। घ
आदिअंततताकेनहीं। मध्यनहीतिंहा
मांहि। वारपारनहिंसहजिया। लघुदी
रघनीमांहि। ७। परजेमैंआवैनहीं। उ
तपतहोयनफेर। अजरअनादीसहजिया। घनेंहिरानेहेर। ८। जाकेकिरि
याकरमनां। षटदरसनकोभेष। गुन
औगननहिंसहजिया। औसाउरषअ
लेष। ९। रूपनांवगुनसंरहित। पांचत
त्तसंदूर। वरनदाससगुरनैंकही। सहजे
छिपाहज्हूर। १०। आपाषोजैंपाइये। औ
रजतननहिंकोय। नीरछीरनिरताय। के। सहजोसुरतसमोय। ११। इतिसम
चिदानंद॥ अथनिसअनित्यसांख्यम
तकाअंगबर्नते॥ दोहा॥ भिन्नभिन्न
दोनोंकरै। वहीसांख्यमतभेद। जीवन
औरवदेहसो। मुक्तपायतजषेद। १। जा
ग्रतऔरसषोपती। सुपनअवस्थातीन।
कायाहीसोंहोतहैं। घटैंबढैंहोयछीन। २।

तुरियाइकरसआत्मा। इनतैंपरैनिहार। इ
ह्रीमनगहनांसकैं। सहजोतत्त्वअपार। ३।
जिन्याबाषसकैनहीं। सरवनसुनैंनना
हि। नैंनबिलोकसकैंनहीं। नासातुवान
पाय। ४। अनिनेहीसूंजानियें। चितबुध
थकथकजोहि। तीनजोतिअहंकारक
सोनीपावैंनोहि। ५। जाकेरसनहींरूपनं
गंधनहींवागोर। सह्वनहींसपरसनहीं।
सहजोवहकछुओर। ६। गुनतीनोंसैंहैप
रे। तामेंरूपनरेष। बोधरूपहोसहजिया
ब्रह्मदिष्टकरदेष। ७। इतिसांख्यमतनि
त्यअनित्यनिर्गुनसंसैनिर्वरनमकारीतका
अंगबर्ननं। दोहा। निराकारआकारस
ब। निर्गुनऔरगुनवंत। हैनांहीसूंरहित
है। सहजोयोंभगवंत। १। नांवनहींऔर
नांवसब। रूपनहींसबरूप। सहजोसब
कुछब्रह्महै। हरिपरगटहरिगूप। २। क
हाकहूंकहांकहूंसकूं। अवरजअलष
अभेव। सुनैंअवंजोसोलगे। सहजोब्रह्म
अलेव। ३। वहीअंसपरगटभयो। ईस्व

रलीलाधार॥ मांहि ऋजुधा और हज॥ कौ
तगकिये अपार॥ ४॥ वार बीस औतार धर।
जनकी करी सहाय॥ राम कृष्ण हरनन ये
मिहमां कही न जाय॥ ५॥ नक्क हेत हरि आ
इया॥ पिरथी नारउतार॥ साधन की रिछ्या
करी॥ पापी डारे मार॥ ६॥ निर्गुन सों सर्गुन
नये॥ संत उधारन हार॥ सहजो कौ डंडौत
है॥ ताकूं बारम्बार॥ ७॥ ताके रूप अनंत
हैं॥ जाके नांव अनेक॥ ताके कौतग बज
त हैं॥ सहजो नांनां नेष॥ ८॥ गीता में श्री कृ
ष्ण ने॥ बचन कहे सब षोल॥ सब जीवन में
मैं बसूं॥ केवर कहा अडोल॥ ९॥ मैं अषंड
ब्यापक सकल॥ सहज रहा नरपूर॥ ज्ञा
नी पावैं निकट ही॥ मूरष जानें दूर॥ १०॥
जोगी पावैं जोग सूं॥ ज्ञानी लहैं बिचार॥ स
हजो पावैं नक्क सों॥ जिन के प्रेम अहार॥
११॥ धन्न जसोधा नंद धन॥ धन ह्ज मंडल
देस॥ आदि निरंजन सहजिया॥ नये ग्वा
ल के नेस॥ १२॥ चौपाई॥ नेत नेत कह बेद
पुकारैं॥ सो अधरन पर मुरली धारैं॥ जाकूं

सहज
११४

114

ब्रह्मादिकमुनिध्यावैं।तादिसूतकहनंद
बुलावैं।सोसनकादिकअंतनपावैं।सो
सषियनसंगरासरचावैं।संजमसाधना
ध्याननआवैं।सोग्वारनसंगषेलमचा
वैं॥अनंतलोकमेटैंउपजावैं।सोमोहन
ब्रजराजकहावैं।निर्बिकानिर्नैनिर्बांनां
कारनसंतधरेतननांनां॥निर्गुनसर्गुन
भेदनदोई॥आदिअंतमधएकहीहोई॥
गूंगेकोसुपनोंयहबाता।सहजोकहेकै
नकेसाथा॥१३॥दोहा॥निर्गुनसर्गुनए
कप्रभु॥देषासमझबिचार।सतगुरनें
आंषेंदई॥निहचैकियानिहार॥१४॥सह
जोहरिबहुरंगहै।वहीपरगटवहीगूप
जलपालेमेंभेदनां॥ज्योंसूरजअोरधूप।
१५॥चरनदासगुरकीदया॥गयासकां
लसंदेह॥छूटेबादबिबादसब॥भईस
हजगतलेह॥१६॥गुरबिनमारगनांमिलै
गुरबिनलहैनज्ञांन॥गुरबिनसहजो
धुंधहै॥गुरबिनपूरीहांन॥१७॥सतगुरबि
नभटकतफिरैं॥परसतपाथरनार।स

हजो केसैं मिटतहै॥ जमजाम की पार॥१९
महजैं नौग्रह देवता। पितर सती अरु त। सह
जो केसैं सुलफहै॥ होयरहो सुत कस
त॥१९॥ गुरकूं जानत हैं नहीं॥ बनतासु
नके मोह॥ साधनकी निंद्या करैं॥ हरि
सौं राखैं द्रोह॥२०॥ अननन्य न कछु तप जेन
हीं॥ गुरसौं नाहीं सार। सहजो मिलेन सि
धकूं॥ ज्यौं तलाव को नीर॥२१॥ जनक ब
दे हा परम गुर। दादा गुर सुषदेव॥ सहा
जो की डंडोत है॥ चरनदास गुरनेव॥२२
॥चौपाई॥ हरिप्रसाद की सुता नाम सह
जो है॥ दूसरकुल मैं जनम। सदा गुर व
रन सहाई॥ चरनदास गुरदेव नेव मो
हि अगम बताया॥ जोग जुगत सैं हरि ला
न सुलन करि दिह दिषायो॥ और सब
साधन परिनाम करि कर जोरू सिर ना
यके॥ यह दान मोहि दीजियै नैक
हूं चितलायके॥२३॥ इति श्री सहजो
बाई कृत [illegible] सहा
ज प्रगास सबद अंग ग्रंथ संपूर्ण समाप्त॥

सहज
११५
115

॥श्रीसुषदेवायनमः॥अथग्रह्मोके
मंगलाचरनकेदोहा॥श्रीगुरस्तुति
बर्नते॥ब्रह्मरूपआनंदघन॥निर्बिक १
रनिर्लेव मंगलकरनदयालजी॥ना
रनगुरसुषदेव॥१॥सतियनमैंतुमस
त्तहो॥सूरनमैंहोबीर॥जतियनमैंतुम
जत्तहो॥श्रीसुषदेवगंभीर॥२॥पततउ
धारनतुमसुने॥धर्मचलावननेव॥सं
कटसकलनिवारियै॥जैजैश्रीसुषदे
व॥३॥चिंतामेटनमोहरन॥दुरकरन
जगबाध॥गुरसुषदेवक्रपाकरो॥बर
नलगेसबसाध॥४॥दातावारौंनेदके
श्रीसुषदेवदयाल॥चरनदासपरह्वू
जयै॥बारमबारक्रपाल॥५॥अथग्र
ह्मलिष्यते॥रागकल्यान॥नमोसुषदेव
होचरनपरवारनं॥दुंदसंकटहरन
करनसुषमंगलं॥परमआनंदघनसं
तकेतारनं॥नांवतकत्यागबैरागहै
मुक्तलौं॥तीनहूंगुननतैंनिर्बिकारं॥
महानिद्राकामओरक्षमचाधैरहो॥सि ११५

305

रूवेरीमईफिरैलारं॥ ज्ञानकेरूपअोरस्व
पसबमुनिनमैं॥ दयाकीनावकियेजीव
पारं॥ उदैभागौतमतज्ञानपरगटकियो॥
तिमरकियाहूरअोरधर्मधारं॥ मोहद
लजीतअनरीतकेषंडनं॥ नर्ककेडिढ
करनलौबिडारं॥ चरनदासकेसीसप
रहाथनितहीरहै यहीमांगगुरूबार
बारं॥ ६॥ अथचरनौंकेशद्धोंकेमंगला
चरनके॥ दोहा॥ दसचिह्नदहनेंचर
न॥ बावैंहैंदसएक॥ जिनकेनिह्चल
ध्यानतें॥ कटैंजुविघनअनेक॥ १॥ श्री
सुषदेवअज्ञादई॥ चरनदासकुवार॥
सोअबबर्ननकरतहूं॥ सहूमांहिस्तार॥
२॥ ॥ रागकल्यान॥ चरनविह्
नचितलाव॥ फिरतेराजनमनहोगा॥ प
दमकलकच्छबिनिरषनैंनभरि॥ अंकु
समनअटकाव॥ छत्रकलसकमल
जौराजत॥ धुजाधेनपदनाव॥ संषचक्र
अोरकलससुधाहद॥ तासौंचितउरका
व॥ स्वस्तकजंबूफलकीसोभा॥ जासौंसु

रतलगाव़ ॥ अर्धचंदषटकौंनमीनबुंद। ऊरध्वरेषलषवाव़ ॥ अष्टकौंनतिरकौं नविराजै ॥ धनुषबरनउरधाव़। कोट कामनषऊपरवारूं। न्नुपरसुंदरपाव़।

॥ श्रीसुषदेव़विदनपदबरनें। सोतू हियमैंलाव़। चरनदाससहितराषमो रनिस। बारबारबलजाव़। ६ ॥ रागक ल्यान ॥ सतगुरपांवौंन्तूतत्रतारो। जन

भजनभके लागे ही आये॥ देमंतर अब
तिन्हें बिडारो॥ कामक्रोधलोभमोहगर
बनै॥ मनबौराय कियौ अपनायौ॥ जि
नके हाथपरो जियमेरो॥ घेराघेरी बज्र
डुषपायौ॥ एकघडीमो हि नाहि तनांही
लहरवढाय के बजतनवायो॥ कपजो
घरघरद्वारनचा वैं॥ अन्नमहरिकोनां
वछुटायो॥ अबकै सरनगही देवमुरा
री॥ चरनहीदासअयानें॥ किरपाकरि
यह व्याधछुटावो॥ गुरसुषदेवसयानें॥
१०॥ आरतीरागभैरौं॥ मंगलआरतीकी
जैप्रात॥ सकल अविद्याघटगई रात॥
सूरजज्ञान नयाउजियारा॥ मिटिगये
औगुनकुबुधबिकारा॥ मनकेरोगसो
गसबनासे॥ सुमतनीरजलह्हजपरगा
स॥ जैसेऔरनरमनहीं वहराई॥ द्वैबधा
गई एकता आई॥ जातबरनकुलसके
नीके॥ सबबसंदेहगये अबजीके॥ घट
घटदरसेदीनदयाला॥ रोमरोमसबहो
गई माला॥ दिष्टनआवैदुषजगजाला॥

आरती
११७
117

कागपलटगतभएमराला॥अनहद्बा
जेबाजनलागे॥वोरनगरियाननजनज
गागे॥वरनदासगुरफिरीडहाई॥मंगा
लगावैसहजोबाई॥११॥आरती॥आरत
आदिपुरसकीकीजे॥साधोअगमअप
रअचलमनदीजे॥अदुतआरतीउंका
रा॥तिरदेवाहोयजगतपसारा॥पहलै
मछरूपहरिधारो॥बेदल्यायसंषासुर
मारो॥रईसुमेरसेसकीनेता॥चौदहर
तनमथेदधसेती॥रूपबराहधरहरिधा
ये॥हिरनाछिसहनधरतील्याये॥षंभ
फाड़हिरनाकुसमारो॥नरसिंघहोयप्र
हलादउबारो॥बावनहोयकरबलछ
लतीने॥तीनलोकतीनोंडंगकीने॥पर
सरामहोयशस्तरधारे॥छत्रीसबेनिक
छकरडारे॥रामरूपरावनदलमलिय
लंकाराजभभीछनमिलिया॥कृस्नह
पकैकंसपछारो॥दरसनदेभुजसक
लउधारो॥जगन्नाथअवरजगततेरी॥
आगैंसिद्धरिद्धरहैंचेरी॥निहकलंकनि

लिप्त निरासा॥ संतन लसुरत लियोजहां ब
सा॥ हरि हैं एक रूप बहु धारे॥ निराका
र आकार निरारे॥ दस औतार आरती गा
ऊं॥ निर्भै और अमै पद पाऊं॥ चरनदास
सुषदेव बतायो॥ निर्गुन हरि सर्गुन होय
आयो॥ १२॥ आरती॥ आरती रमता राम
की कीजे॥ अंतर्ध्यान निरष सुष लीजै॥ चे
तन चौकी सत को आसन॥ मगन रूप त
किया धर दाजे॥ सोहं थाल लषें चमन धरि
या॥ सुरत निरत दोऊ बाती बरिया॥ जोमा
जुगत सूं आरती साजी॥ अनहद घंट आप
सूं बाजा॥ सुमत सांझ की बरियां॥ आई पां
च पचीस मिल आरती गाई॥ चरनदास सु
षदेव को चेरो॥ घट घट दरसै साहिब मेरो
१३॥ आरती॥ आरती करत हंस मन मेरो
वार पार कछू दीषन तेरो॥ अमर अडोल
निःइछ न नेषा॥ तिरगुन रहित रूप नहिं
रेषा॥ चेतन आनंद नित निरधारा॥ निराका
र निर्लिप्त निरा॥ निराकार आको बिबर्ज
त॥ निर्गुन और सर्गुन तेरा गत॥ हाछपी।

आर्ति:
११८

118

वस्त्रीरसीसघनेरे। कैसैंत्रारतीकरूं उ
तुमेरे। सोहंबातीघीवस्त्रषंडा। एकही
जोतबलेब्रह्मंडा। तुहीथालतुहीत्रार
तीसाजै। तुहीघंटातुहीझालरबाजे। व
रनदासमुषदेवलषायो। सुरतथकी
वेपारनपायो॥२४॥ आरती॥ आरतीगं
गामाईकीकीजे। बसबेकुंगमहासुष
लीजे। स्वर्गलोकसूंगंगात्राई। शिवकी
जटामेंत्रानसमाई। सेवाकरभागीरथ
लीनी। मृतलोकमेंपरगटकीनी। फूल
पानमिष्टानचढावो। करकरदरसन
सीसनिवावो। सीसन्हावान्हायजोके
ई। पापकडेंत्रारनिर्मलहोई। चरनदा
ससुषदेवबषानी। पततउधारनसुरि
सुरिजानी॥२५॥ आरती॥ गगनमंडल
मेंत्रारतीकीजे। उत्तमसौजसकलस
जलीजे। सुषमनइंघ्रतकुंनधरावे। म
नसामालनफूलचढावे। घीवस्त्रषंडा
सोहंबाती। त्रिकुटीजोतबलेदिनरात
पवनसाधनाथालकरीजे। तामेंवोमु

षमनधरदीजे। रबिससिहाथगहेतिं
हमांही। षिनदहनेषिनबावेंलांई। स
हंसकंवलसिंघासनराजे। अनहद
झालरनितही बाजे। इंद्रबिधआरती
सांचीसेवा। परमभरषदेवनकोदेवा।
चरनदाससुषदेवबनावे। ऐसीआ
रतीपारलंघावे॥ २६॥ रागबसंत॥ ऐ
सेंपारब्रह्मषेलतबसंत। कबहूंएक
कबहूंअनंत। जैसेंहाटकएकभूषन
अनेक। बरनबरनकेधरतभेष। टूट
गहनांगलजोजाय। फिरवाहेतोफि
रबनाय। आपीबिष्णु ब्रह्मामहेस॥
आपिधरतीआपसेस। आपिसुरनर
मुनहजान। आपधरतऔतारआन
आपीरावनआपराम। आपीकंसा
आपस्याम। आपनकूंचढमारें आप॥
आपअपनकोजपतजाप॥ चरनदासइ
कंगीआपादेष॥ हरिकहियतहैंतेरनेे
ष। सुषदेवदयातेंपायोभेव। तातेंआप
अपनकीलागोसेव॥ २७॥ रागबसंत॥

राग॥ः
२२९
119

घलौरामनामलेलेवसंत। नक्ककरोमि
लसाधसंत। मातपितासुतदाराजान
सबस्वारथकेसंगीपिछान। तोहिज।
नमतसबजनघेरोत्राय। तैंत्रापत्राप
नपौदियोबंधाय। स्वाँसनिकसरइज
यदेह। सबकुटंबसंगातीनरोगेह॥
जबसबहीमिलकरतजैंनह। कहैंबे
गनिकासोरहीबह। कहैंघाटबिन्नौ।
नाद्योहनिकास। त्रौरजारद्योहमुष।
लजतास। त्रैसजनेसंगकीकोंनत्रा।
स। तातेंहरिजनजलतेंहरिजसास। इन
स्पगोतजाहरिसांप्रीत। त्रपनेंजलकी
नकरीचीत। सुषदेवकहैंनरत्रजहूंचे
त। वरनदासतजोक्योंनजगासंहेत॥२५॥
रागबसंत॥ मेरेसतगुरषेलतनिजव
संत। जाकीमहिमांगावतसाधसंत। ज्ञा
नबबेककेफूलेफूल। जहांसाबाजा।
गत्रौरनकमूल। प्रेमलताजहांरही।
फूल। सतसंगतसागरकेकूल। जहांन
रमवडतहैज्योंगुलाल। त्रौरच्योवाचर

वैनिरहवैबाल। सीलछिमांकोबरषैरं
ग। कामक्रोधकोमानतंग। हरिवरवा
जितहैअनंत। सुनमुक्तिहोतसबजी
वजंत। ग्यानधरमसबजांहिषाय। रा
मनामकीजैहोय। जहांअपनेपि
याकूंढूंढलेव। औरचरनकवलमैं
सुरतदेव। कहैचरनदासछषटुंदजं
हि। जबप्रीतमसुषदेवगहैंबांहि।४१।
रागबसंत॥ षेलोनितबसंतषेलोनि
तबसंत मिलसाधसंगमैंनितबसंत॥
जहांफूलजुफूलेचाररंग। भक्तिग्यान
औरजोगअंग। रंगजुचौथाहैबैराग॥
बिषैबासनादेइत्याग। भंवररहोयसं
घजुकोय। जीवनमुक्ताकहियेसोय
भेऔरभर्मसबछूटजांय। आनंदपद
मेंरहैसमाय। चंदनेचरचाअतिसुबा
स। महकरहीह्वांआसपास। जिहसु
गंधसीतलताहोय। तापतपतसबजं
हिषाय। चरनदाससदरिवरनमांहि। सी
सदियैंबहुपापजांहि। प्रीतमसुषदे

वैं अनंद ॥ काटनिवारैं सकलफंद ॥ २०॥

शब्द: १२०

रागबसंत ॥ ऐसैं हू लकुंवर षेलत बसं
त ॥ जाको सुर नर मुनि पावैं न अंत ॥ संग
लयैं बज ग्वाल बाल ॥ और फेंटन मैं नर
नरगुलाल ॥ सब बस्तर पहरैं लाल ला
ल ॥ गर सोहत सुंदर गुंज माल ॥ कोऊ ता
लबजावत है मृदंग ॥ कोऊ डफ रबाब म
ज्ञवर मुहचंग ॥ कोऊ ढोल तंबूरा बीन च
ग ॥ कोऊ गावत सुर दै दै ऊमंग ॥ जब आई
राधिका सषिन साथ ॥ कोऊ केसर गागर
लियैं हाथ ॥ गहछिरकत बहौ गोपीनाथ
कान्ह बेंदा दई हरिज़ू के माथ ॥ इक का
जर नैंनन आंजो आय ॥ सुष चोवा वदन अ
बीर लाय ॥ लीनें बरछत्तु कूं दियो उढाय
हंम करत परसपर मन के नाय ॥ यहु कौ
तग ब्रज बाढो अपार ॥ मिलनाचत कूद
न गोपी ग्वार ॥ देषि मोहि रहौ बज देवना
र ॥ ऐसो अद्भुत अवरजरस बिहार ॥ यहु
सुष [illegible] कापै कह्यौ जाय ॥ सनकादिक
नारद रहे लुभाय ॥ सुषदेव गुरु नें दियो ।

120

दिषाय॥चरनदासध्यानमैंरह्यौसमाय॥
२१॥रागबसंत॥उसझैमनगरकोकठि
नपंथ।कोईधुंहचैबिरलासूरसंत।तप
सीपंडतकाजीसेष॥बहुतवलेधरनां।
नांभेष॥जोगीजंगमजटाजूट॥बिवक।
नककामिनीलियेलूट॥जिनलोभका
मकीनेंबिध्वंस॥औरामेटदियोकुलगे
तबंस॥जिनमनइंद्रीकियेनसमजार।
जोईभवसागरसंभयेपार।गयेपरमध
मजहांनितग्रानंद।जहांरैनहोमनदी
सूरचंद।चरनदासदयाश्रानमइकंग
लहैनेहनगरमिलसाधसंग॥२२॥होरा
रागकाफी॥ज्ञानरंगहोहोहोहोरी॥नि।
हरूपाबहुरूपधरेहै॥नांनांभेषकरोरी
देषननिकसीश्रपनेपियाकूं॥समझ।
भवनपौरी॥बुधबिचारसिंगारसजोहै
निहचैमाथेरोरी॥जीवनमुक्तजलास
बदो है परगटषेलमचोरी॥षेलतषेलत।
श्रापनबिसरोलागीकौंनठगोरी॥आ।
पाषोजरामहीपायेमैंनांहीनिकसोरी॥

२२४

की

वरनदासनहीहरिहीहरिहैसब। आप
हीआपरहोरी। उपजैकौनकौनअबि
बनसै। बंधमुकतकिहगैरी। ११। होरी
रागधमाल।। साधोसुंघटनरमउगाय
होरीषलीयै। बेदकुरानलाजतजबौरी
इनमैंनाऊरकैयै। सिरसंसुकवऊनार
वदरिया। पियसोंरंगबढैयै। रूपनरेष
नसूरतमूरत। ताकेबलबलजैयै।। अव
लअजरअबिनासीसोंही। सनमुषदर
सनपइयै।। मतवेदनआनंदसदाही।।
निर्भैनालनबजइयै।। पापपुन्यकीसंका
त्यागो।। तहांमरजादनपइयै।। अोलान १
रबिवारीजैसें। यौंआपनबिसरइयै। व
रनदासबासनातजकै।। सागरबूंदसम
इयै।। १४।। होरीधमाल।। साधवलीतुम।
संनारी।। जगहोरीमचरहैनारी। डिंनपा
षंडगहैकरमैंडफ।। रूबैडरूबडकीना।
री।। तिरगुनतारतंबूरासाजैं।। आसातिम्र १
गतधारी।। पापपुन्यदोऊलेपिचकारी।।
छूटतहैंबारीबारी। सनमुषहोकरजो

Margin: आ॰हृ॰ १२१ / 121 / हो

१२२

नरषेलौ॥ताकेछींटलगीकारी॥लोनमो
हभ्रमनिमाननरोहै।लेमायागागरडारी।
राजापरजाजोगीतपसी॥नीजरहेहैंसंसा
री॥कुबुधगुलालउडारमुषमींडो॥कामक
लाउटलीमारी॥जुगजुगषेलतयौंवलि
आई॥काहूनैंनांहींहारी॥जडचेतनदो
ऊरूपसंवारे॥एककनकदूजानारी।पां
चपचीसमलियेंसंगअबला॥हसहंसमि।
लगावतमारी॥चतुराफगुवादेदेछूटे॥
मूरषकूंलागीप्यारी॥चरनदाससुषदेव
बतावैं॥निरगुनिम्पानगलीन्यारी॥२५॥हो
रीरागसोरठ॥हिलमिलहोरीषेलईहो
बालमांघरपाइया॥पांचसषीपचीससस
हेली॥आनंदमंगलगाइया॥समकबू।
फकाचोवाचरचा॥नरमगुलालउडाइ।
या॥डुईगईजबईद्याकेसी॥षेलनस।
कलबहाइया।चरनदासबासनातज।
के॥सागरलहरसमाइया॥२६॥होरीरा
गसोरठ॥कासूंषेलैकोहोरियांहो।बाल
मांनहींमैंनहीं॥अबीरगुलालअरगजा

नांहीरंगनहींगागरनहीं॥तालमृदंगझं
झडफनांहीं॥रागनहींरागननहीं॥फांग
महींनांवाघरनांहीं॥कंथनहींकामनां
नहीं॥वरनदासनहींतबहरिककुके
सो॥सबकुछहैऔरकुछनहीं॥२७॥
होली॥आदिनिरंजनअलषअरूपी
रूपरंगदिषलावैरे॥आपहीदेषैआपदि
षावै॥नांतिनांतिगतलावैरे॥आपही॥का
न्हआपहरिबाला॥परगटबनबनआ
वैरे॥आपहीफागआपहीषेलै॥आप
हीनांचतथकावैरे॥आपहीतालमृदंगझं
झडफ॥आपहीआपबजावैरे॥आपहीता
नमानसुरतोरे॥आपहीरीझरिझावैरे॥
आपहीबोवाचंदनछिरकत॥आपगुल
लउडावैरे॥केसरघोलआपलेदोरे॥
आपहीछिपछिपजावैरे॥आपहीनरपि
चकारीमारे॥घूंघटषैंचबनावैरे॥आप
अबीरआपनेंमुखपर॥आपनेंहाथल
गावैरे॥आपहीरसियाआपछबीली॥
आपहीसैंनबतावैरे॥आपहीफगुवा

आपहीमांगे॥ आपहीगारीगावैरे॥ आत
मरामआदिरंगहोरी बिरलाजनकोई॥
पावैरे॥ याहोरीकाषेलअनूपा॥ चरन
दासदरसावैरे॥ २८॥ होरी॥ राग धना
सरी॥ साधोबुधबबेकसंभारहोरीषेलि
ये॥ सांष्यजोगकीजुगतसूं॥ कीजेनित्य
अनित्यबिचार॥ मायासकलनिवारि
केरे॥ आतमरूपनिहारपांचतत्ततीनों
गुनपरगट॥ इनकोदोदिनफाग॥ इक
रससतपदजानलेरे॥ ताहासूंमनपाग
निहचैचोवालाइयेरे॥ नरमगुलाल
उडाय॥ देहकरमकेरंगकीरे॥ गागर
देहढरकाय॥ जीवनमुक्तजुफगुवापइ
ये॥ गुरकेचरननलाग॥ जोकोईअैसी
होरीषेले॥ ताकेऊंचेभाग॥ चरनदास
कहैसुषदेवबताई॥ हमहूंषेलेजाग
पीतमपातमजिततितदेषे॥ दोषगयो
औरराग॥ २९॥ होलीरागधनासरी॥
गुरहूताबिनांसबापीवनदेषोजाय॥ ना
वैतुमजपतपकरिदेषो॥ नावैंतीरथा

राढ़: १२३

123

न्हाय॥ पांचसषीपचीससहेली॥ अतिचतुर अधिकाय॥ मोहिं आयानीजानिके मेरोबाल लियोलुकाय। बेदपुरानभागवतढूंढी सुरतसमृतसबध्याय। आनधरम औरक्रियाकरममें दीनोंमोहिभरमाय॥ नटकतनटकतजबमैंहारी॥ चरनसषी गहे आय॥ सुघटेसाहिबकिरपाकरिके॥ दानों अलषलषाय॥ देषतहीसबभ्रमभैभागे॥ सिरसौंगईबलाय॥ चरनदासजबप्रीतमपायो॥ दरसनकियेअघाय॥ ३०॥

होरीरागधनासरी॥ हरिपिवपाइयासषी चरनमेरेनाग। सुषसागर आनंदमैं॥ मैंनितउठषेलूंफाग। बेदावेदनन्नातिकोसषी केसरेज्ञानघसाय॥ सुहपबाससंजोवहकीनो॥ ताके अंगलगाय बेरंगीकेरंगसौं॥ सषीगागरलईभराय। सुन्नमहलमैंजायके॥ सषीपिवपरदईढरकाय॥ नरमगुलालजबकरलियोसषी॥ बालमगयोडराय

सतगुरनें अंजन दीयौ। तब सन मुष दर
से आय। ताली लाई प्रेम की। अनहद ना
द बजाय। सर्ब मई पिव पाय कै। हम आ
नंद मंगल गाय। रल मिल प्रीतम होग।
ये। सषी डुई गई सब भाग। चरनदास सुष
दिव दयासों। पायौ अटल सुहाग॥ ३१॥
होरी राग धनासरी॥ मेरौ चित उत बेलन
जाय। फागुन नित जहां उलटा षेल। नेंद
जहां उलट उलटा मारग है तहां। बिन मुष। टा
ब्रह्मा करत बेद धुन। बिन मन सें कर ध्या
न। बिन रसनां नारद गुन गावै। सनका
दक बिन ग्यान। बिन पग निरत करैं जहां
रंभा। बजत ताल मुदंग। बिन बदरा नि
तही झर लागी। बरषत इंद्र तरंग। बिन
बोयें माली के आली। बिरछ रहे बज फू
ल। नांनां भांति भ्रमर फल लागे। बिन डा
ली बिन फूल। बिन संजम बिन साधन।
पुंहचे। चरनदास उपदेस। आतम राम।
रकं गर्इ करस नां रहां बाध कलेस॥ ३२॥
होली राग धनासरी॥ साधो मन माया के

शब्द:
१२४

124

रंगसब जगरंगरह्यो। मूरषमखेषेल
के अंधरे। नांनांस्वांगबनाय॥ आसाध
रधरनांवनलागे॥ बोवार्वदूलगाय।जो
गकरैंसिद्ध आवैंवादहैं॥ मानबडाईहे
त। राजबासनानोगलोकके॥ कामीक
रवतलेत॥ पच अगनीबहुतापनला
गे॥ बहुत अरधमुषफूल॥ बहुतक
दोड़ैंअवसूवतीरथ॥ तोनगलीगये
भूल॥ चरनदासगुरतत्तलषायो॥ दी
न्हेंषेलछुटाय॥ सहजोबाईसीसनि
वावे। बारबारबलजाय॥ ३३॥ होरीरा
ग सोरठ॥ होरीषेलसषीपियसंगा॥ तेरे
सिरचूनरपचरंगा॥ सीलछिमांलेष
लनलोगे॥ नाजेक्रोध अनंगा॥ इडा
पिंगलाकोमारगरूकगयो॥ सुषमन
गली अनंगा॥ सुन्नमहलमेंवांदनहु
वा॥ बिनसूरजबिनचंदा॥ अनहदडो
रपकड़जहांधाये। सोहंसोहंमंदा स
रमकरमदोऊरंगबहाये॥ नरमगुला
लउडायो॥ दासकुंवरचरनदासगु

रूनैं। फागत्र्प्रबंडबनायौ॥३४॥ होलीध
माल॥ मोहनचतुरसुजानमेरेघरहोरी
षेलनआयोहो॥ पीतबसनपियरेआ
नूषन॥ पीरोतिलकबनायोहो॥ सषा
रीलालहीलालगुलालउडावत। ग्वा
लबालसंगलायौहो॥ करनकनक
मबकेपिचकारी। गावतनाचतधायो
हो॥ सषीरीआनअचानकहरिनेंमेरे।
मुषचोवालपटायौहो॥ केसरमांही।
घोरअरगजा। मोतनपैडरकायोहो
सषीरीअपनेंहाथसंवारपानदे॥ हार
हियेपहरायोहो। रीझरिझाओरनोज
निजाकर। उरआनंदबढायोहो। सषी।
रीमेंल्हवाकेजायअचानक॥ काजरनें
नलगायो॥ मुरलीमहपीतंबरलेकर।
लीलंबरजुउढायोहो॥ सषीरीजासुष
कूंब्रह्मादिकतरसें॥ सेसपारनहिंपा
योहो॥ चरनदासकूंजानआपनों॥ सो
सुषदेवदिषायोहो॥ ३५॥ रागकडषा॥
साधोगुरदियाजोगइहबिधकमायो॥

मूलकूंसोधसंकोचकरिसंषनी॥षेंचआपा
नउलटोचलायो॥बंधपरबंधजबबंधती
नौंलगे॥पवननजइथकितननगरजाअ
यो॥द्वादसापलटकरसुरतदोदलधरी
दसौंपरकारअनहदबजायो॥रोकजब
नवनकूंद्वारदसवेंचढो॥सुन्नकेतषत
आनंदबढायो॥सहंसदलकंवलकोरू
पअद्भुतमहा॥अमीरसउमंगआकरा
लगायो॥तेजअतिपुंजपरलोकजहां
जगमगे कोटरविजोनपरगासलाये
उनमनीओरचितहेतकरबसरहो॥दे
षनिजरूपमनवांमिलायो॥कालओर
ज्वालजगब्याधसबमिटगई॥जीवसं
ब्रह्मगतबेगपायो॥चरनदासरनजीत
सुषदेवकीदयासुं॥अनेपदपरसअब
गतसमायो॥२६॥कडषा॥साधोपिंडब्र
ह्मंडकीसैरगुरगमकरी।परसियाजु
गतसंअलषराई।सहजहीसहजपग
धराजबअगमकुं।दसोंपरकारझंग
डबजाई।षोलकपाटओरबज्रद्वारा

वहा। कला के भेद कुं जी लगाई। पहला
के महल पर जाय आसन किया। दुसरे
महल की षबर पाई। तीसरे महल पर सु
रत जा बस रही। महल चौथे जहां अमी
गाई। पांचवें महल कुं साध कोई पाय है
महल छठे वां दिया गुरु बताई। सातवें
महल पर कोट सूरज दिपे। आठवें महा
ल अगम गुसांई। रूप अद्भुत तहां अध
क अचरज जहां। देषिया दरस सब बिप
त जांई। सुषदेव की सहां सूं आर नाग हा
रे। आपने पीव के भवन आंई। चरनदा
स आपा दिया जेमण्याला पिया। सीस स
द के किया जपांई॥ ७॥ कडषा॥ सा
धो पर सिया देस जहां नेम नांही। घाट
त सल षज हां बाट सू के नहीं। सुरत के
चांद ने संत जांई। चंद षोडस दिपै गंगा
उलटी बहै। सुषमना सेज पर लंब दम
के। तास के उपरे अमी का ताल है। झि
लमिली जोत परगास क्रम के। वार जो
जन परे सुन्न स्थान है। तेज अति पुंज

परलोकराजे। द्वारपछमक्षसेमेरद्दीडंड्ड
हो। उलटकरस्थ्रायपद्याजेबिराजे। नूरज
गमगकरैषेलअगाधहै। बेदकहेबन
हीपारपावें। गुरमुषीजायहैंअमरपद
पायहैंसीसकालोनतजपंथधावें। ती।
नसुन्नछेदकरपरमचौथबसे। जनम।
औरमरनफिरनांहिहोइ। चरनदास
करबाससुषदेवक्कसीसरं। झूजब।
गमघरीअमरसोइ। ३१५। साधोगुरद।
याआपकूंयोंबिचारा। कछुओरसांच
कूंसमझकरिमूलस्ं। मायाओरब्रह्म
कूंकियान्यारा। पांचओरतीनगुनदेह।
कोगावहे। तासकूंलगतहैंसबबिका
रा। ब्रह्मअडोलअब्बोलअन्नोलहै। औ
रनिर्लिपहरिनिर्बिकारा। जाकेरूपन
हिंरेषओरनांवस्वरतनहीं। साइनिज।
तत्तहैनिराकारा। सुरतओरनिरतदो
ऊजहांथकरहैं। तहांबिनग्यांनअति
हैउज्यारा। बिनांगुरमुषीकोइभेदहूंचा।
द्धांनांसके। कनकओरकामिनीघेर

राग्र: १२६

126

^रागकड़
षा

मारा।चलैसोईसंतनि।बीनहोयसरमं।
ज्ञानऔरध्यानकोकरअहारा।आवा
औरगवनकीटूटफांसीगई।पायोगु।
रुभेदगया।तिमरसारा।चरनदाससु।
षदेवमिलेमरमसबदलमलै।पाया।
नजसदनअबगततनिहारा॥ ॥राग
सारंग॥ कोईजानैंसंतसुजानउलटभे
दकूं।बिरछचढामालीकेऊपरधरती
चढीअकास।नारपुरषबिपरीतभये
हैं।देषतआवैहासा।बैलचढासंकरके
ऊपर।हंसब्रह्माकेसीस।सिंघचढोद
बीकेऊपरगुरदीकीबकसीस।नावच
ढीबटकेऊपरसुतकीगोदीमाय॥।
जोतउलटदीअमरनगरको।तीअरथबि।
ताय।चरनदाससुषदेवसहाई।अब
कहाकरिहैकाल।बैंबईउलटसर्पमैं।
पैवी।जबसंनयेनिहाल॥ ॥रागसोर।
ठ॥कुलवंतीकामिनगारीहै।पालाप्या
यपियाबसकीनों।सुघरसयानीना।
रीहै।निसदिनपियसंगचढीरहतत॥

धनधनगगनमंझारा हो॥ हमकूं बालम नै

शब्द: कनवा है॥ जबसूं सकलबिसारी हो॥

१२७ हमदासी और तुम नई राना मि हमां अ

127 धक अपारी है। नवरगुफा मै सेज बिछा

ई॥ जगमग जो नउज्यारी है। रंगमहल मैं

मानसरोवर॥ और तिरबैनान्यारी है॥

सौंनपटा लाजुगनूं झमकै॥ दामन की

चमकारी है। तिरदेवा सुरनरमुनजेते॥

पावतनार सुखारी है। मगानन ये है छक

न छकोरी॥ आनंद होरहो जारी है॥ चर

नदास गुरकिर पासे ता॥ आतमराम वि

यारी है। जोगेसर खस्नाम्र तनेरा। पावत

जगडुषडारी है। धु॥ रागबिलावल॥ पी

वै कोई यह प्याला मत वारा। सुरनरमु

नजाम धकूं तरसैं। गुरबिन लहै नबारा

सदर के घर नावी ओटे। ब्रह्मा अगनज

राई॥ सोसाधे और बिष्णु चुवावै। पावै सा

ध अघाई। सीताप्याला नर नरदेवै॥ हनू

मानहं कारे। व्यास सेस नारद सनका

दक॥ किरिया नांहि बिचारे॥ नोधन नेम १२८

औरसंजमपूजा॥बिसरीसबकहाकहि
ये॥घूमतरहैमहारसछाके॥सुरगमु
कतनोखहिये॥श्रीसुषदेवसुधारसइ
हत॥नितप्रतअचवनकीन्हा॥चरनद
ासपैकिरपाकरिकै॥निजप्रसादकरि
दीन्हा॥धर॥रागधन्यासरी॥औधूऔ
सामधरापाजे॥बैठगुफामेंयहजगबि
सरे॥चंदसूरसमकीजे॥तहांकलालच
ढाईभाठी॥ब्रह्मज्वालपरजारी॥नरज
रप्यालादेतकलाली॥बाढैनक्कुमारी
माताहोकरज्ञानषड्गलेकामक्रोधकूं
मारे॥घूमतरहैगहैमनचंचल॥उबधा
सकलबिडारै॥जोजाबेयहप्रेमसुधा
रसनिजघरसुहवैसोई॥अमरहोयअ
मरापदपावे॥आवागवननहोई॥गुरसु
षदेवकियामतवारा॥तीनलोकतिण
बूझा॥चरनदासनहीरहाबासना॥आ
नंदेआनंदसूझा॥धर॥रागसारंग॥सा
धोयहप्यालामतवाराहै॥अवधैगाको
ईजोगजुगंता॥चितुस्थिरमनमारहै॥

ग्रा॰ह॰ १२९

128

वंदसूरदोऊसमकरराषे॥ब्रह्मज्वाल
अंतरबैरै।मुद्रालगोषेचरीजबरहा।बंक
नालइंद्रहतफिरै।सबरगुफामेंनादीआ
वे।नत्त कन्नकसुषमनचुवे॥सुगुरा
पीपीरहितनयेहे॥बिनपीयेउपजेमुवे
सोसनकादिकनारदसारद॥औरपी
याजेनाथहै॥सिधचौरासीहरिपदब
सी॥मगनभयासबसाथहै॥रामानंद
कबीरनामदेव॥अमरभयेजिनजिन
पिया॥गुरसुषदेवकरीजबकिरपा।च
रनदासकूंसोदिया॥४४॥रागधन्यास
री॥सोसाधो ऐसेंजोगजुगतगतनारी।
धरतीबंधलगायजुगतसूं॥मूंदलईनै
नारी॥आसनपदमभयाडिढकीन्हों॥
हिरदेचिबुकलगाई॥वंदसूरदोऊस
मकरराषेनिरतसुरतघरआई॥ऊप
रषैंचअपानसहजमें॥सहजैप्रानमि
लाई॥पवनफिरीपछमकूंदौरी॥मे
रहीमेरचलाई॥ऐसैंहीलोकअमर
पदउदुचे॥सूरजकोटउजारी॥सेत

सिंघासनसतगुरपरसे॥ करिदरसन
बलिहारी॥ आपाबिसरपरमसुषपायौ
उनमनलागीनारी॥ चरनदाससुषदे-
वदयासूं॥ जनममरनछूटीबारी॥४५॥
॥रागधन्यासरी॥ सोगुरगमअष्टबिध
जोगकमायौ॥ आसनअचलमेरकि
यासीधे॥ कसबंधमूललगायौ॥ सं-
जमसाधकलाबसकीनी॥ मनपवना-
घरआयौ॥ नौदरवाजेपटदेराषे॥ अर
धेउरधमिलायौ॥ नागिनलैपैंडोकरि
पेठे॥ सकतपतालगईहै॥ कांपोसेस
कमठउकलानौं॥ सायरथाहदई॥
है॥ उलटचलेमदफोरहकीसौं॥ गा-
येअनैपदमांहीं॥ अतिउजियारोअ-
द्भुतलीला॥ कहनसुननगमनांहीं॥
जितनएलीनसनैसुधबिसरी॥ छूट
जगतबियाधा॥ चरनदाससुषदेव-
दयासूं॥ लागासुन्नसमाधा॥४६॥
रागबिलावल॥ ऐसारूपअनूपहै॥ घ
टमांहिबिराजे॥ सुरनरमुनिऔरदेव-

१

शब्द: १२९ 1.29

तासबह्यमैंगाजे॥मातदीपवीदहनवा
न॥आपकहोयराजे॥अष्टसिद्धनौनिद्ध
मैंसबगतसौंछाजे॥बिमलरूपअद्भुत
महा॥ससिसूरजलाजे॥शब्दअषंडतहे
तहै॥अनहदधुनबाजे॥सहंसकवल
दलपैंबरी॥सिंघासनसाजे॥चरनदास
आतमनयौ॥जहांडुबधमराजे॥४७॥
राग आसावरी॥साधोनकनफाकरल १
जे॥दिनदिनकायाछीजे॥मकरतजे
तौमक्कामनमे॥कपटतजेतौकासी॥अ १
रतीरथसबहीजगन्हाया॥नांहिछूटी
जमफांसी॥नालतलैतिरबेनीराजेबि
रलाजनकोईन्हावे॥सुगुराहोयसोनि
तउठपरसै॥निगुराजाननपावे॥काय १
मंदरमेंहरिकिदिये॥बेदकुरानबतावे॥
हिंदुतुरकदोऊमिलनरमेंध्यषेकूंसि
रन्यावे॥जंतरमंतरमूरतमूरत॥नाहि
इमाननलावो॥निर्गुननांवजपोअज
पामें॥उलटआपलौलावो॥चरनदास
सुषदेवदयासों॥असोध्यानकरीजे॥ १२९

बंगआरतीसदाअषंडत॥ अनहदमैम
नदाजै॥ ४८॥ रागमलार॥ वापदराम
संकरनेह॥ बिषकीबूंदनपइयैजित
कां॥ बरषतइहतमेह वमकतबिजर १
गरजतगगना॥ बाजतअनदघोर॥ या
हमनथकितगलतजितपावौं॥ मिट
हैनिसओरनोर॥ जाग्रतमिटकरसुप
नोंमिटहै॥ मिटहुसषोपतजाय॥ षट
रितुपइयैनांदिनओधू॥ एकहारसद
रसाय॥ बिनहांजोतैंबिनहांबोयेंउप
जतषेतहैधार॥ लागतअवरजफलम
हामुक्ताबिनहांसींबेनार॥ राजागुरसुष
देवनबाटें॥ सबहीकरेंबकसीस॥
वरनदासरासमबपावे॥ मिलहैबिस
वेबीस॥ ४९॥ रागसारंगमलारवासो
र८॥ साधोअजबनगरअधिकाई॥ औ
घटघाटबाटजहांबंकी॥ उसमारगह
मजाई॥ सरवनबिनबजबानीसुनियै
बिनजिभ्यासुरगावे॥ बिनांनैनजहांअ
वरजदाषे॥ बिनांअंगलिटावे॥ बिनां

नासिकावासमुहपकी।बिनापांवगिरा
वढिया।बिनाहाथजहांमिलोंधायके
बिनपाधाजहांपढिया।अैसाघरबडा
भागीपाया।पहरगुरूकाबाना।निहा
चलहोकरआसाभारी।मिटगयाआव
नजाना।गुरसुषदेवकरा।जबकिरपा
अनमेबुधपरगासी।चौथेपदमैंआ
नंदरारी।चरनदासजहांबासी।५०॥
रागसोरठ॥ अैसादेसदिवानारेलोगो
जायसोमातोहोय।बिनमधवामतवा
रेफूमें।जनममरनडषषोय।कोटचं
दसूरजउजियारो।रबिससिपुहवत
नाही।बिनासीपमोतीअनमोलक।बा
ऊंदामिनझमकांही।बिनरूतफूलेफू
लरहतहें।अंमतफलरसपागो।पवा
नगवनबिनपवनबहतहै।बिनबाद
रझरलागो।अनहदसबनवरगुंजारें
संषपषावजबाजें।तालघंटमुरलीघन
घोरा।भेरदमामेंगाजें।सिंघगर्जनाआ
तिहीभारा।घुंघरूगतकनकारें।रंभा।

शाह:
१३०
130

निरतकरैंबिनपगसों।बिनपायलझनझन
कारैं।गुरसुषदेवकरैंजबकिरया।औ
सोनगरदिषावै।चरनदासवापदकेप
रसैं।आवागवननसावै।५१।रागमल्हा
र।।साधोनाईझिलमिलरूपअपारा।स
हजसुन्नमैंमोतीबरषैं।बिनदामिनच
मकारा।बिनकरतालबजतदिनराती।
बिनमुषमुरलीबाजै।बिनपगनिरत।
घूंघरूझनकैं।संषमहाधुनगाजै।बिनं
सिंधजहांगर्जननारी।बहराआनंदपा
वै।मगनभयेवेदकेबक्ता।जबऐसीछा
कछावै।कागापलटभयेगतहंसा।सुध
बुधतनबिसराई।चित्तऽस्थिरचंचलम
नथाका।पांचौंउलटसमाई।चरनदास
गुरुभेददियोतब।अगमदेसगमपाई।
आतमरामबिनोदमहाई।अजबनग
रसुषदाई।५२।रागमलार।।गढपतग
गनचढामनमेरा।पांचपचीसपकडब
सकीन्हे।उलटमचक्रदिसफेरा।मूल
बांधनैंनाडीसाधी।पवनचढीमगमा।

रा। मानदीपनौबंडलषेहग। बिनरबि।
ज्वा उजेरा। घनबिनदामिनदधिबि।
नमुक्ता। सोह्मनैंननहेरा। दोसुनछेद
महासुनउंहवे। जहांनमरातेरा। जगा।
तनजीवनहींजमडंडन। तहांकिया
हमडेरा। चरनदासकोआतमरामा॥
उंहचो नवनसवेरा। ५३॥ राग आसाव
री॥ साधोकरनीकीगतन्यारी। बिनक
रनीकथनीहैऐसी। ससिबिनरैंनअं
धारी। ज्योंपाराबूटीसंगमिलकैं। तन
पावकमेंदीन्हां। भस्मनयेंऐसीगत
पलटी। तांबाकंचनकीन्हां। ज्योंलोहा
किरकटकाषाया। मलकरमुकरसं
वारा। जबवामेंसबघटपरगासें। चंद
सूरऔरतारा। जापदकेंसनका दिक
धावे। स्योंब्रह्मामुनिदेवा। चरनदास।
कहैंआतमकरनी। पायोभरननेवा॥
५४॥ राग परज॥ गुरूहमारेप्रेमपिया।
योहो। तादिनतेंपलटोनया। कुलगो
तनसायोहो। अमलचढोगगनैंलगो।

अनहदमनछायोहो।तेजपुंजकीसे
जपै।पीतमगललायोहो।गयेदिवाने
देसडे।आनंददरसायोहो।सबकि।
रियासहजैंछुटी।तपनेंमतुलायोहो।
तिरगुनतैंऊपररहूं।सुषदेवबसाये
हो।चरनदासदिनरैंननहीं।तुरिया।
पदपायोहो।५५॥रागपरज॥गुरूम
रअलषलषायाहो।देषतहीअैसैंगा।
ई।जललौंनघुलायाहो।नषसषढूंढू
आपकूं।कहींआपनपायाहो।रामही
रामाहोरहा।हममलगंवायाहो।बंर।
तकरैंहमहोंदितो।साबनेंमतुलाया
हो।फलवाहनवारोगयो।हरिदरहि
रायाहो।ज्ञातामिटज्ञानूंमिटो।और।
भेदमिटायाहो।सोचसमकसबही।
गई।चरनदासनसायाहो।५६॥राग
परज॥सुधारसनीकीलागीहो।पी।
वतहीभईएकता।मनउबधानागी।
हो।सतगुरसूंकुंजीलई।निजगुफाउ
घारीहो।संतनमैंप्यालाफिरै।पीवैंबा।

राम्ह
१३२
132

रीबारीहो।उगत्तरीरहैंगगमें।अचवैब
डभागीहो।उहवैनांप्यासरहैं।मूरषनि
रभागीहो।अमरलोककीगमपरी।औ
रअनभैजागीहो।सकलसत्राछाकीर
हे।बिषआसात्यागीहो।चरनदाससमक्ष
प्पाइया।कुलगोतबिसाराहो।पद।राग
पाज।।जिन्हैंहरिनक्कपियारीहो।मा
तपितासदजैंछुटे।छूटेसुतऔरनारी
हो।लोकभोगकीकेलगे।समझसुति
गारीहो।दांनलाभनहींचाहियैसब
आसाहारीहो।जगसोंमुषमोडैरहैं।।
करैंध्यानमुरारीहो।जितमनवाला।
गारहै।नईघटउजियारीहो।गुरसु
षदेवबताइया।प्रेमीगतन्यारीहो।।
चरनदासवारींबदसों।औरेकलुम
रीहो।।पद।रागपरज।।रामधनजोको
ईपावैहो।राजबडाईइंद्रपदवीसु
रतनलावैहो।आठसिद्धनोनिद्धके।
लालचनहींलागैहो।तिनलोकतुछ
जानिके।तामैंनहींपागेहो।अर्थधा

मकाममसोकूं ॥ करनीनहींवानेंहो वा
रंमुकतबैकुंठेलो ॥ कछूबस्तनजानें।
हो। सबसेनीवाहोवलै ॥ सुषफूलैनना
षहो ॥ हिंसाअकसबासनाकोईनैक
नराषैहो ॥ साधनकीकरवाकरी ॥ जब
वूहधनआवेहो ॥ चरनदाससेरंककूं
सुषदेवबनावेहो ॥ ५९ ॥ रागपरज ॥ रा
मगुनकोईनजानेंहो। सेसमहेसगने
सओरब्रह्मानरमनुलानेंहो ॥ सुरनति
रतबुधगमनहींसबदेवछकानेंहो। स
नकादिकनारदकूंहारेकौनबषानेंहो
जोगीजंगमरिषमुनी। तपसीसुरज्ञानें
हो। ध्यानलगावेंअंतनपावेंरहैलुभानें
हो ॥ पसूमनुषकहांकहसकें ॥ बिषर।
सलिपटानेंहो ॥ चरनदाससुषदेवदया
निजरूपसमानेंहो ॥ ६० ॥ रागसारंग ॥
पूरबी ॥ पांवनमोहिलियोललना ॥ ना।
सातुवाओरसरवनियां ॥ नेननओरस
नां ॥ एकएकनेंबारीबांधी। गहगहलले
जोंहि ॥ निसदिनउनहींकेरसपागो ॥ घा।

रमैंवहरतनांहि॥ अलपतगंगाजमीनां

आद: मरगाज्यैं॥ होरहोपरआधीन॥ अपनौं।

१३३ आपसंजारतनांहीं॥ बिषेबासनालीन

133 हूंकुलवंतीटौंनासांषो॥ अनहदसुर

मैं. तधरूं॥ गगनमंडलउलटाकूवा॥ तासूं

नीरनरूं॥ भवरगुफामेंदीपकेबालूं॥

मंतरएकपढूं॥ कामक्रोधमधलोभहौं

मकरि॥ बालमेंचित्तहढूं॥ जतनजतन

करिपावहुटाऊं। फिरनेंहींजाननद्यूं

चरनदाससुषदेवबतायैं॥ निजमनहीं

करलूं॥ ६२॥ रागसोरठ॥ अरेलैगुरके

बचनचित्तधररे। छिनछिनतेरीआवा

घटतहै॥ बेगसंभारोघररे। सीलछिमां

जतडिढकरराषो॥ गरबगुमाननिवा

रो। पांचोंइंद्रीबसकरअपनैं॥ मनग

नीमकूंमारो॥ कायाकोटबुहारसुगा

तसूं॥ सतसिंघासनधरियै॥ तापरबैठ

अमरपदवीले॥ राजअसैंडरकरियै॥

सबअमलवलैजबतेरो॥ तोसमऔर।

नकोई॥ सेवगसाहिबलोहाकंवन॥ १३३

बूंदसमंदर होई ॥ बिघनकलेस आपदा नासै ॥ निर्मल आनंद पावे ॥ चरनदास सु षदेव दया सूं [illegible] समकावे ॥ ६२ ॥

राग सोरठ ॥ जो नर इक कृत नूप कहावे ॥ सत सिंघासन ऊपर बैठे ॥ जतही चवर दुरावे ॥ दया धर्म दो ऊ फोज महा ले ॥ नक्र निशान चलावे ॥ धुन्न नगारा नौबत बाजे ॥ डर जन सकल हलावे ॥ पाप जलाय करे वो गानो ॥ हिंसा कुबुध नसावे ॥ मोह मुक हम काढ मुलक सूं ॥ लाबे रागबसावे ॥ सांध न नाय बजि तिन जे ॥ देदे संजम सा छा ॥ राम डहाई सिगरे फेरे ॥ कोई न उठावे मा था ॥ निरै राज करे निहचल हो ॥ गुरसुषदेव सुनावे ॥ चरनदास निहचे कर जानों ॥ बिरला जन कोई पावे ॥ ६३ ॥ राग सोरठ ॥ जब गुर शब्द नगारे बाजे ॥ पांच पचीसों बडे मवासी ॥ सुन के डंका भाजें ॥ डिढ दस्तक लेज्ञान जसा वल ॥ जाय नगर के मांहि ॥ हरि के दाम जन के मांगे ॥ चित्र चौधरी पां

अहः
१३४
134

हो॥ कानूगोयलोनके षोटे॥ छलबल
पाहोऊवै॥ कामकिसानमोहमुकद्दम
सबैबांधकरलूटे॥ तिस्नाआमिलमध
कोमांतो॥ पकडुगांवसोंकाढै॥ मनरा
जाकोनिहचलफंडा॥ प्रेमप्रातिहितगा
डै॥ सुबुधदिवानसीलकोबकसी॥ जत
कोहाकमनारी॥ धर्मकर्मसंतोषसिपा
हो॥ जाकेअग्याकारी॥ सावाकारिंदापट
वारी। धीरजनेमबिचारैं॥ दयाछिमांऔ
रबडीदीनता॥ षरीजमांसंभारे॥ ममत
होयवौकसकणाकरिकै॥ सुमतजे।
वडीमापे॥ दरसनदरबधानकोषूरा।
न। बांटापावैआपे॥ श्रीसुषदेवअमल
करिगाढो॥ सबसदेसबसावे॥ चरनदा
सहंजिनकोनायब॥ ननपरवानापावे
१४॥ दोहा॥ संतसमानननसूरमां॥ कहैं
चरनदासबिचार॥ टेकगहैमनमुषव
लै॥ बांधप्रेमहथियार॥ १५॥ रागसोरठ
नांकोईसंतसमाननसूरा॥ मोहसहित
सबसैनामारी॥ असेसांवतपूरा॥ छिमा १३४

कीढालगहीकरअपनें॥बांधैसततर
वारा॥करमनरमकेदलकूंपेलैं॥पि
लपिलबारमवारा॥सुरतकीतारहिर
देकोतरकस॥ध्यानकमानबनावे॥
प्रेमहाथसोंषैंचनलागें।चोटनिसानें
लावे॥बुधबबेककटारीबांधे॥बूकन
बिलासकीबरछी॥सतगुरसौंहियरे
बैंधैकहकहबतियांतिरछी॥चिंतमें
वावचोगुनौंउनके॥सुनसुनअनह
दतूरा॥अगमपंथसौंपगडिगावे॥हो
यजोयचकचूरा॥मनउलासआसध
रपियकी॥सुन्नषेतमेंधावे॥चरनदास
सुषदेवकहतहैं॥अमरलोकपद
पावे॥६६॥रागभैरव॥आसावरी॥
साधूपैजगहैसोईसूरा॥काकेमुषपर
नूररहैजब॥बाजेमारूतूरा॥कलगी
औरगजगाहबनावे॥इनकापरनडहे
ला॥मांडतनेषबनायचलतहैयहनहि
सहजसुहेला॥याबानेंकोनेंमयहाहै॥
पगधरफिरनउठावे॥जोकुछहोयसो

आगेही आगे॥ आगेहा कूं धावै॥ रणमें

पैठझाड़ाझड़ बेलै॥ सनमुषशस्त्र षावै

षेतनछोडै छांई क्रू कै॥ नब हांसो ना पावै

गुरसुषदेव दियो हेहेला॥ असा होय संग

आवै॥ चरनदास बानां संतनका॥ तोले

सीस चढावै॥ १३॥ रागसोरठ॥ आसा

वरी॥ साधो टेक हमारी असा॥ कोट जा

तनकर छूटे नांही॥ कोऊ करो अबके

सी॥ यह पग धरा सेनालअवलही॥ बो

लबुक सोई बोलै॥ गुरमारगमें लेमन

दानों॥ अब इत उत नहिं डोलै॥ जैसें सूर

सती और दाता॥ पकडी टेक न टारै॥ त

नकर धनकर मुषनहिं मोडै॥ धर्मन अ

पनों हारै॥ पावक जारो जलमें बोरो॥ टू

कटूक करडारो॥ साधसंग तहरिनक्क

नछाडें॥ जीवन प्रान हमारो॥ पै जनहा

रू दाग न लागे॥ नैकन उतरै लाजा॥ च

रनदास सुषदेव दयासे॥ सबविधसुध

रैकाजा॥ १४॥ रागसारंग॥ साधो टेक ग

ई जाको सब गयो॥ लाज गई और काज॥ १३५

गयेसब॥ बचनधर्मकबूनांरह्यौ॥ जग
मेंहांसफौसहियमांहां॥ कायरपनयौं
दहगह्यौ॥ अबपकृतायेंहोतकहाहै॥ तू
हपानपनेरोबहगयौ॥ पेजतजीमुषका
रोजवौ॥ धृगधृगजीवनतासको॥ बोफ
गयौ ओछेकीसंगत॥ यहपरतापकुबा
सको॥ चरनदाससुषदेवकहैयौ॥ टेका।
नदेवोसिरदेवौ॥ बारबारनदेहनपइ
ये॥ अपजसजगमेंक्यौंलेवौ॥ ६८॥ राग
सोरठ॥ साधोनेषवहाजामेंटेकहै॥ टेक
नहींतोकहानरोसो॥ टेकबिनांनरत
कहै॥ टेकबिनांकैसासतवंती॥ टेक
बिनांनहिसूरमां॥ टेकबिनांदाताभीनां
हां॥ टेकबिनांजोगाबूबनां॥ टेकबिनां
नहिभक्ताहरिको॥ टेकबिनांनहिंसिद्ध
है॥ टेकबिनांसबनरमतडोलें॥ टेकबि
नांनहींरिद्धहै॥ साधसंतओरखेदकहा
तहैं॥ टेकपकडवढक्षामकूं॥ चरनदास
सुषदेवबतावें॥ टेकमिलावैरामकूं॥ ७०॥
रागसोरठ॥ साधोजोपकडीसोपकडी॥

अंबतौटेकगहीसुमरनकी॥ ज्यौंहारल
कूंलकड़ी॥ ज्यौंसूरानेंअस्तरलीनों॥ ज्यौं
बनियेंनेंतषडी॥ ज्यौंसतवंतीलियोसिं
धौरा॥ तारगहीज्यौंमकड़ी॥ ज्यौंकामा।
कूंसिरियाप्यारा॥ ज्यौंकिरपनकूंदमड़ी
ऐसेंहमकूंरामपियारो॥ ज्यौंबालकूं।
कूंममड़ी॥ ज्यौंदीपककूंतेलपियारो॥
ज्यौंपावकंकूंसमरी॥ ज्यौंमछरीकूंनार
पियारो॥ बिछुरेंदीषेजमरी॥ साधोंके।
संगहरिगुनगाऊं॥ तातेंजावनहमरी
वरनदाससुषदेवडिढायो॥ औरछुटे
सबगमरी॥ ७१॥ रागसारंगवाबिलाव
ल॥ जोनरइतकेनयेंनउतके॥ उतकूं।
प्रेमनभक्तनहिंउपजी॥ इतनहिंनारीसु।
तके॥ घरसेंनिकसकहांउनकीनों॥ घ
रघरभिख्यामांगा॥ बानोंसिंघचालनेंड
नकी॥ साधनयेंअकिस्वांगी॥ तनमूंडा
पैमननहिंमूंड्या॥ अनहदचितनहिंदी।
न्हा॥ इंद्रीस्वादमिलेबिषियनसौं॥ बक
बकबकबककीन्हा॥ मालाकरमेंसुर

नहरिमें ॥ यहसुमरनकहकेसा ॥ बा
हरनेषधारकरबैठे ॥ अंतरपैसापैसा
हिंसाअरुकसककुबुधनहिछोडी ॥ हिरा
दे सांचनआया ॥ चरनदाससुषदेवक
हतहैं ॥ बानांपहरलजाया ॥ ७२ ॥ राग
बिलावल ॥ वहबैरागीजानियै ॥ जाके
रागनदोष ॥ निरबंधहोयजगमेंफिरै
चाहैसिद्धनमोष ॥ पांचनकूंएकैकरैअ
नहदमेंरोक ॥ तिरगुनतैंउपरबसै ॥ ज
हांहर्षनसोग ॥ मनमूंडैतनसाधकै ॥ बा
धासबडार ॥ तत्वतिलकमाथेदिपै ॥ मो
नाअपरमपार ॥ मालास्वासउसांसक
हिरदेअस्थान ॥ अलषपुरषसूंनेहरा
तिरकुटीमधध्यान ॥ कामक्रोधमोहले
तनां ॥ यहनेमअचार ॥ सुषदेवकहीच
रनदाससूं करैब्रह्मबिचार ॥ ७३ ॥ रा
गबिलावल ॥ छोछेसुमरनकहासरै ॥ म
नकेरागसोगनहिषोये ॥ हिंसाडूबेअ
कसजरे ॥ नारीसुतसूंमोहकियोहै ॥ नै
कनहरिकेप्रेमअरे ॥ कुलनातेपरवा

रसंग्रारे।साधनकौनहिंटहलकरे।माला
तिलकसुधारसंवारे।राषतन्नलबलमा
करघनें।अंतरओरनिरंतरवारें।सिंघ
गऊमुषरहलवनें।असोनक्रमुक्रनहिं
पावे।कर्मलगेंओरनर्कपरे।जमकेडं
डदहनपावककी।जनममरनयोंनां
हटरे।लक्षनप्रेमसहितजपकीजे।भी
तरबाहरजघरनचे।चरनदाससुषदेव
कहतहें।हरिरीझेंजगबाधवचे॥७४॥
राग बिलावल॥सांचासुमरनकीजियें।
जामेंमीननमेष।ज्यौं आगेसाधोंकियौ।
बानीमेंदेष।टेकगहोद्रिढनक्रकीनो
धाहियधार।संतनकीसेवाकरो।कुल
काननिवार।जासंप्रेमाऊपजे।जबहार
दरसाय।आगेपीछेहीफिर।अनुछोड
नजाय।चारमुकतबांदीनवें।सिधचर
ननमांहि।तीरथसबआसाकरें।अघदे
षनसांहि।कहेंगुरूसुषदेवजी।चरनदा
सगुलाम।ऐसीधारनधारिये।रहियेंनि
हकाम॥७५॥राग बिलावल॥मालाफे।

रीकहा भयो। अंतर का मन कान हिं फेरा पापकरत सबजनम गयो। परनिंद्या परनारन न लै। षोट कपट की और न भयो। कमक्रोध मध लोन न षायो। द्वैरहो मरष।मोह भयो। ऽ निया सांव समक घर कीनो। धनजोरन को परन लयो। दया धरम दोऊ मारग छोडे। मंगतन कूं न हिं दान दयो। गुरसौं कूं न गल साधन सें। हरिको नांही नहजयो। चरनदास सुषदेव कहत है। के सैं क हियें मुक त हयो॥ ७६॥ राग बिलावल॥ असा सुमरन कीजियें। सुनहो मन मेरे। रसना राम उचारीयें। करमाला फेरा। निंद्या अक सन राषीये। काहू दुष न हिं दीजै। संतन सें सनमुष रहो। गुरसेवा लीजे। भूषे भोजन दीजियें। प्यासे नीर पियावो। सबसें नीचा होवलो। अभिमान न सावो। सतसंगत मैं मिल रहो। गुरमा त सौं रहियें। और न धरम न हिं चालियें। जमउंडन सहियें। तामस कूं बिषजों तजो। सुषदेव बतावें। चरनदास हरि हरि जपें।



मुकता होजावै ॥ ७७ ॥ रागसोरठ ॥ अरे

नर अफलजनममतषोरे ॥ ज्यौंतेलीको

वैलफिरतहै ॥ निसदिनकोलूंभोरे ॥ नक्क

बिक्क नैंषरहो आये ॥ ढोवत बोझा रोड़े ॥

सांझ नयें वाकूं वाकोपतकूंड़ेपर छोडे ।

नरमतनरमत मनुषनयहोऊ वे आय

वढोरे । लषचौरासी जूंनभुगतकर । फि

रतामैंनपरोरे ॥ अबकेचुकैंबडापछते

हो । मानबचनमोरे । चरनदाससुषदेव

कहतहैं । हरिपदसुरतधरोरे ॥ ७८ ॥ रा

गबिलावल ॥ नक्कगरीबीलाजियै ॥ तजि

यै अभिमानां ॥ दोदिनजगमैंजावनां ॥ आ

षरमरजानां ॥ पापपुन्यलेषा लिषेजमबे

वाध्यानां ॥ कहाहिसाबतुमदेउगे ॥ ज

बाजायदिवानां ॥ मातपिताकोईक्कांन

हीं ॥ सबहीबेगानां ॥ दरबजहांकुछवेन

हीं ॥ नहींमीतपिछानां ॥ एकसीं एकही

होयगी ॥ क्कांसांचतुलानां ॥ काहूकी ।

चालेनहीं । छानेंदूध औरपानां ॥ साहि

बैंकरबंदगी ॥ देनूंषेकूंदानां ॥ समझो

वैसुषदेवजी। चरनदासमस्र्यानी॥ ७९ ॥

रागबिलावल॥ करैंप्रनुमोनेहरा॥ मन मालीयार॥ कहागरबजियमेंधरै॥ जीवनादिनचार॥ ग्यानबेलगहटेककी॥ दयाक्यारीसंवार॥ जतसतडिढकोबाजहा। बोवोतासमझार॥ सीलछिमाके कूपकोजलधेंमअपार॥ नेमडोलनराषेंवके। मीवोबागबिचार॥ छलकीकरकूंकाटकै। बांधोधारजबार॥ सुमनसुबुधकिसानकूं। राषोरषवार॥ धर्मगिलोलजुप्रीतिकी। हितधनुषसुधार॥ कवक पटपंछनकूं। तासंमारबिडार॥ भक्तिनावपोधालगैं। फूलेरंगफूलवार॥ हरिरसमांतोहोयकै। देषलालबहार॥ सतसंगतफलपाइयै। मिटैकुबुधबिकार॥ जबसतगुरापूरामिले। वाषैअमृतसार॥ समझावैसुषदेवजी चरनदाससंजार॥ तेरीकायामेषिलै सांवोगुलजार॥ ८० ॥

रागभैरौ॥ बेगगुरुसुचलीताबेला॥ सुबाहोयरहैरैनअकेला॥ दयाछिमारष

रामसुहाती॥ बातकहैकडवीनहींताता।
विनजावेउपदेसनदीजे॥ तरकीमीवा
खानहीकीजे॥ मौनगहैथोरासाबोले
पलकनमिलैनैनरहैषोले॥ दिष्टराष
नासाकेआगे॥ सत्यबचनमीगामुषन
षे॥ रसनाउलटकाकासबदावै॥ बिन
हीबादलजलबरषावै॥ पवनसाधम
नकूंवहरावै॥ कामिनकनकरूपबि
रावै॥ आसनअडिगसुरतअनहदमें॥
अंतरषोलमिलेनहींजगतें राम वरनदा
ससुषदेबबतावें। असाहोयमहंतक
हावे॥ ॥ रा ग भैरूं॥ क्रोधमंतको
वरितसुनाऊं। मिन्नमिन्नपरगटदिषा
लाऊं। क्रोधमंतजबतापरआवै। तन
मनकीसबसुधबिसरावै। नेनांलाल।
बदनकारो। रोमरोमव्यापेहत्यारो॥ म
हावंडालनीचअतिघोरी॥ अतिबि।
परीतबुधकरैओरी॥ अपनेहाथआप
कूंमारै॥ अपनेकपडेआपहीफाडै॥ मुं
हडेफाडैहाथा॥ कहैबहकतीबाता॥

हांफेबज्ञतन्रापकूंगाला॥जेवतन्रावेप
टकेधाला॥कबक्तिंज्ञास्तरमारनला।
गे॥कबक्तंकूयेपडनेंमागे॥नलाक।
हैताहिंमोगसुनावे॥बुरेमलेपरईस्व
लावे॥सबलदेषसालाहोजावे॥निव।
लदेषबज्ञढुंदमचावे॥याकाजतनक
रोमनमावे॥वरनदासमुषदेवूबतावे
८२॥रागकल्यान॥वहराजासोयहा।
बिधजानें॥कायानगरजातबोगनें॥का
मक्रोधदोऊबलकेसूरे॥मोहलोमन्रा
तसांवतसूरे॥बलन्रपनोंन्रभिमानदि
षावे॥इनकूंमाररहगढधावे॥पांचों।
ध्यानेंदेहऊवोई॥जबगढमेंकूदेमनरा
ई॥ज्ञानषड्गलेढुंदमचावे॥कपटकुट
लतारहननपावे॥छुनछुनऊजेनहन
सबडारे॥रहतेसहतेसकलबिडारे॥
मनसंबत्यहोयमतसोई॥लक्षनजा
वरहैनहिकोई॥न्रचलसिंघासनजब
तूपावे॥मुकतषवासाववरदुरावे॥न्रा
वोसिद्धजहांकरजोरै॥सोंहांताकेमुष

नहिमोरै॥ निहचलराजअमलकरेश्‌
रा॥ बाजेनौबतअनहदतूरा॥ तीनती
सऔरकोटअवासा॥ वेनीसबतेरीक
रैषवासा॥ गुरसुषदेवजेददियोनीके
चरनदाससमस्तभक्तियोटाको॥ दास
कुवरदयहरहनीपावै॥ थोथीकरनी
कथनीबहावै॥ ५३॥ रागभैरौंवावि
लावल॥ वहपरसोतममेरायारनेह
लगाटूटेनहितार॥ तारथनाऊनबा
तकिरूं॥ चरनकवलकोध्यानधरूं
प्रानपियारामेरेहीपास॥ बनबननां
हिनफिरूंउदास॥ पढूंनगीताबेदपु
रान॥ एकहीसमझूंश्रीभगवान॥ औ
रनकूंनहिनाऊंसीस॥ हरिहीहरिहै
बिसवाबीस॥ काहूकीनहिराषूंआ
स॥ तिश्नाकाटदईहैफांस॥ उहमक
रूंनराषूंदाम॥ सहजेहीहोरहैपूरन
काम॥ सिद्धमुकतफलेचाहूंनांहि॥
नितहीरहूंहरिसंतनमांहि॥ गुरसु
षदेवयहीमोहिदान॥ चरनदासआ

नंदलालीन ॥ ९४ ॥ रागभैरो ॥ रामराम।
रामरामरामराम गावो ॥ मनकेरोगस
कलविसरावो ॥ नामप्रतापसिलाज
लतारी ॥ सोईनामजपोनरनारी ॥ ना
मलेतप्रह्लादउबारो ॥ परगट होय
हरनाकुसमारो ॥ पतनश्रजामेलसा।
बजगजाने ॥ नामलेतवढगयो बिवा
नें ॥ सुवापढावतगनकातारी ॥ नाम
लेतनिजधामसिधारी ॥ सोईनामना
रदमुनंगायो ॥ बेदब्यासमुषपरगट
जनायो ॥ हरिकेनामकोकरो बिचा।
रा ॥ सतसंगतमिलउतरोपारा ॥ ब्र।
ब्रह्मादिकनामउपासी ॥ श्रावसिद्ध
नोनामकीदासी ॥ सुषदेवगुरुनेंना
मबतायो ॥ चरनदासहरिसौंचितला।
यो ॥ ९५ ॥ रागकेदारा ॥ वाबिलावल ॥
सुनोंनाईनामकीमिहमा ॥ सुकवारो।
सिद्धश्रावोंबसतहैतिहमांहि ॥ बाल
मीकसोबनकोबासी ॥ कियेथेजिन
पाप ॥ नयोहैसबरिषसिरोमनजपेउ

लटोजाय। गनकीसी अतिमहापापी॥ सोपदवितकीर। नामकेपरितापसेती। कियोहरिभरसीर। अजामेलसेपतत। कामी। बेसांसौरतकीन। चढबिमानैंग यो सुरभूर। नामसुतहितलीन। औरब ङतैपततताेरे। गिनेंकापैंजांहि। हांन। जपतपजोगसंजम। नामसमतुलनां। हि। ब्यासनारदसौब्रह्मादिक। रटतज कंसेस। गुरु सुषदेव। नामको। च र न सेसकूंउपदेस॥ ८६॥ रागबिलावल॥ हमारेरामनगतधनभारी। राजनडांडे चोरनचोरै। लूटसकेनहिंधारी। पन्न पैसऔररामरूपैयें। मुहरमुरब्बतहा रिकी। हीराज्ञानजुगतकेमोती। कहा कमीदाजरकी। सोंनासीलसंजरन रहें। रूपारूपअपारा। औसीदौलतस तगुरदीन्ही। जाकासकलपसारा। बां टूबङतघटतनहिंकबङं। दिनदिन ड्योढीड्योढी। चोषामालदरबअतिनी का। बहालगेनकौडी। साहगुरुषदेव

शब्द: २४२

१४।

चौताल

२४२

आरी

बिराजै। चरनदासबनजोटा। मिला।
मिलरंकन्रपहोवेगें। कनंनआवेटा
टा॥ ८७॥ रागसोरठ्॥ ब्रात्र्यासावरी॥:
साधोनोधनक्ककरोरे। कलजुगमेंय
हबडोपदारथ। गहगहतारितरोरे।
जेजेयासौं नरसिरोमन। तिनकोना।
मसुनाऊं। बठेकथाबिसतारकहूं।
तौ। यातेंसरहमगाऊं। जनप्रहलाद
तरोसुमरनतें। बंदनसोंअक्रूर। चरा
नकंवलकीसेवासेती। लक्ष्मीरहत
हजूर। बंदनचरबतझप्रथुराजा। उ
तरोभवजलपारा। बलराजातनत्र्या।
पेनकीनों। सदारहेंहरिद्वारा। परम।
दासहनुमतझउबरो। उत्तमपदवा
पाई। सषासुनावतरोहेअर्जुन। ताकी
सिद्धमोगाई। मुक्तनयोहेपरीक्षतरा।
जा। सुनभागोतपुरानां। श्रीसुदेवमुनी
सेवकर्मा। जयेरूपभगवानां। ज्ञानजो।
गबैरागसबनसों। प्रेमभ्रीतिहेभारी।
चरनदासनेंगुरकिरपासों। सांचीबा

रागनट

नबिचारी ॥८८॥ ॥रागसारंगवासोरठ॥ जोनरहरिधनसौंचितलावै जैसेंतैसैं टोटानांही लाभसवायोपावै मनकरकोठीनांवषजानौं मुक्तदुकानलगावै सुरासतगुरसाझीकरके संगनबनजचलावै डंडीध्यानसुरतलेहवै प्रेमनगरकेमांही सीधासाजकारासांचा हेरफेरकछुनांही जितसौदागरसबहीसुषिया राजारामबसाये चरनदासबिनमरहेछांडै जंनीपंथनआये ॥८९॥ ॥रागनटवाबिलावल॥ औरेनरअपनौंलाभबिचार षसषजानौंघटतसदाही ताकूंबेगसंभार जोजायसोबहुरनआवै षरचेंलाषहजार ऐसोरतनअमोलकहीरा तूकरसौंमतडार सतसंगतमेंहिनचितराषो दुष्टनसंगनिवार मायाजालऔरप्रीतकुटंबकी ताकूंमनसेंबिसार कामक्रोधऔरमोहलोभसे परबलबडेबिकार ज्ञानअगनअंतरप

रजाैरा। तासैंउनकूंजार। विषैबासना
इंद्रिनकेसुष। बूड़रह्यौसंसार। चरन
दासकूं नावचढाके। सुषदेवलीया
उबार। ६। रागदेवगंधार।। मनवांरा
मकोबौपारी। हमराबैलचलतनहिं
थाका। हांकहांकहूंहारी। टोटाषाय
नफानहिंलीन्हां। आवगईहैसारी।।
जासौदेमैंटोटानआवै। बनजकरो।
नरनारी। पांचौंचोरसदामगरोकत।।
इनसैंकरछुटकारी। सतगुरसंत्रब
साझाकरले। लूटसकैनहिंधारी। षे
पबवायचलेमारगमैं। हरिकीपैंठउ
तारी। चरनदासकहैसोदागरसोंहू।।
मूरषमुगदअनारी। ६८। रागरामक
ली।। चारबरनसौंहरिजनऊंचे। नये
पवित्रहरिकेसुमरैं। तनकेऊजल।
मनकेसंत्रवे। जोनपतीजेसाषबताऊं
मोराकेऊठेफलषाये। बहुतरिषी।
स्वरहांईरहते। तिनकेघररघपतिन
हिंआये। भीलनीपांवदियोसलितामैं।

शाछः
१४३
143

सुद्ध भयो जल सब को ऊ जांनैं। मंद कु
तौ सो निर्मल ह्वै। अभिमांनी नर ना
ये षिसानैं। ब्राह्मण छत्री भूप ऊ तै ब
ड़े वो जो। संष सुपच जब आयो। बाल
मीक जग पूरन कीनों। जे जे कारन भ
ज स गायो। जात बरन कुल सो ई नीको
जाके होय भक्ति परगास। गुर सुषदेव
कहत है तो कूं। हरिजन सेव चरन ही
दास॥ ६२॥ राग रामकली॥ राम भजैं
ते नर अधिक काई। नामां छीपी कबीर जु
लाहा। सदना जात कसाई। स्यौरी की
कहा जात बषानूं। सब जन परगट गा
ई। धना जाट रैदास चमारा। सैन भगत
भयो नाई। दादू दुनियां सब जग जानें
ऊंची पदवी पाई। दास बिदुर दासी सु
त कहियै। हरि नैं नाजी षाई। पनही प
हरैं कैरैं करैषी चरी। करमां भोग लगा
यो। बालनीक जग पूरन काजैं। पंडव
न के घर आयो। करनी नीच ऊंच ह्वै क
रनी। यह ही सम भ्रम मन नाई। चरन दास

१२०

कहीदासकुंवरसूं। जातपांतनहीका
ई॥ ५७॥ रागबिलासवा धनाश्री॥ श्री
बकैकरोसदायहमारी। दुष्टदलना
औरनकूबचावन। असीसाषतुम्हा
री। जनप्रह्लादअसुरगहबांध्यो। ली
नौषड्गनिकारी। हिरनाकुसहनदा
सउबारो। नरसिंघकोतनधारी। षेंच
ग्राहगजबोरनलागो। रामकहोइका
बारी। सुनतपुकारपयादेधाये। तज
कैगररसवारी। द्रोपदलाजउतारन
कारन। ल्यायेसभामझारी। दीनानाथ
लईसुधबेगी। बाढोचीरअपारी। जिन
जिनसरनगहीसंकटमैं। कहांपुरषक
हांनारी। वारोंजुगहरिकिरीसहाई। रि
षकनयेमुरारी। गुरसुषदेवबतायो।
ताकूं। संतनकोरषवारी। चरनदासय
कहारेतेरे। मुनपोरषदियेडारी। ५८॥
रागबिलासवासारंग॥ राषोजीलाजग
रीबनिवाज। तुमबिनहमरेकौनसंवा
रे। सबहीबिगरेकाज। नकिंबहूलहरि

राग॰ १४४

144

नामकहायो। पततउधारनहार। करो।
मनोरथपूरनजनके। सीतलदिष्टनिहा
र। तुमजिहाजमैंकागतिहारो। तुमतज
अंतनजाऊं। जोतुमहरिजीमारनिका।
मो। औरठौरनहिंपाऊं। वरनदासअनु
सरनतिहारी। जानतसबसंसार। मेरी।
हंसीसोहंसीतिहारी। तुमहूंदेषबिचा
र। ६५॥ रागपंचम। वाकउषा॥ राषियेला
जमहाराजगोपालजु। दीनजनसरन।
आयेतिहारी। लग्योमोध्यानउिन्चर।
नहींकेवलमैं। कीजियेक्रपासुनहोबि
हारी। बिषैजंजाररसस्वादघेरोघनौं। पां
चहूंचोरउषदेंहनारी। नीचबकउष्ट।
बलवानपछीसठगातकेनिसद्योसा।
हीघातडारी। पकरगजराजकूंग्राहषैं
चातबे। टेरदेहेरकीनीपुकारी। गडैत
जधायआयेछुटोतुरत। हराहियेबा
धतनबिपतटारी। छत्रअटलकियोप्र
ह्लादकूंदरसदियो। दासहनुमानसौं
प्रीतभारी। भीलनीऔरकामीअजामे।

लसे। अधमअतपततगनकाउबारी। पांडुसुतजबवायेजरतअगनसुं। जो पदीचीरबाढौअपारी। नामदेसैनपीपा कबीरासदन। नरसियादासमीरांउ। धारी। कोटअनगिनजगततारदियेप लकमैं कहोमेरीसुरतक्योंबिसारी॥ ताबिनांकहांजाऊंकहोंवौरनां। तेरा ईद्वारकोहोंभिषारी। सकलसंसैदूर नतुही तारनतनेंस्यामसुषदेवगिरध रमुरारी। दासचरनदासकोंआसरो। तुहीहै। आपनोंजानलीजेसंभारी॥ २६॥ रागधनाश्री॥ हरिजीसंकटबेगनिवा रो। जनकूंभीरपरीहैभारी। चक्रसुदर सनधारो। कंसनिकंदनरावनगंजन। हिरनांकुसगढमारो। दुष्टदलनअरु नक्रउधारन। जनप्रह्लादउबारो। पां चोंपंडवराषलियेहैं। कैरौंदलसंघा रो। जिनजिनदोषकियौसंतसौं। सोसो ईहनडारो। निर्भैनिकरैजनतेरा। अ

१२

सोसमौं बिचारो। चरनदास केघटमैंबेरा तिन कूं क्यौंन बिदारो॥ ६७॥ रागबिला वल॥ प्रभुजी सरन तिहारी मैं आयौ। जो कोइ सरनतिहारी नांही। नरम नरा मडखपायौ। औरन के मन देवीदेवा मेरे मन तुंही भायौ। जब सें सुरत संभा रीजग मैं। औरन सीस निवायौ। नरपत सुरपत आस तिहारी। यह सुनकर मैं धायौ। तीरथ बरत सकल ह्म त्यागे॥ चरनकंवल चित लायौ। नारदमुनि औ रस्यो ब्रह्मादिक। तेरोई ध्यान लगायौ॥ आदि अनाद जुगादि तेरा। जस वेद पु रानन गायौ। अब क्यौंन बांह गहो हरि मेरी। तुम काहे बिसरायौ। चरनदास कहै करतातुंही। गुर सुषदेव बतायौ॥ ६८ रागसोरठ॥ अबजग फंद छुटावौ जी हौं तौ चरनकंवल को चेरो। परारा छौं दरबार तिहारे। संतनमांहि बसेरौ। बिनां कामनां करूं चाकरी। आगौं पा

शाह्ः १४५

145

हरेनेरो। मनसबनेंकृपाकरिदीजे
मोहियहीबकसतेरो॥षानैंजादकदीमी
कहियो॥तुहीश्रासरोमेरो॥झिड़कबि
डारोतऊनछोडूं॥सेवासुमरननेरो॥
काहूश्रौरश्रानदेवनमोंरहोंनहींउ
रझेरो। जैसैंराषोत्योंहींरहहूं। करली
जोसुरझेरो। तेरेघरबिनकहूंनमेरो॥
ठोरठिकानोंडेरो। मोसेपततदीनको
हरिजी॥तुमहींकरोनबेरो। गुरसुषदे
वदयाकरिमोकूं। श्रोरतिहारापेरो व
रनदासकूंसरनहैराषो॥यहीइनामघ
नेरो॥ ९ ॥रागकेदारा॥ श्रबकेतारहो
बलबार। बूकमोंसोंपरीनारी। कुबुध
केसंगमार॥नोसागरकीधारतीछण।
महागंधीलोनार॥कामक्रोधमधलोभ
नंबरमें॥चितनधरततहांधार॥मछज
हांबलवंतपांचो॥थाहगहरगंभार। मो
हपवनकझोरदारन॥डरपैलोतार। ना
वतोमझधारनरमी॥हियेबाहापार॥
चरनदासमकहैंकोईनांहिसंगी॥तुमबि

नोहरिहार॥१००॥रागबिलावल॥नमो

राग: नमोश्रीरामजी॥देवनकेदेवा॥स्योंना
१४६ रदसनकादिलौं॥कोईलहेनभेवा॥ए
146 जोनिरगुनसौंसरगुनभये॥कौतगबि
स्तारे॥साधनकीरिछ्याकरी॥दानेंदलमा
रे॥जसरथसुतभूलेकहैं॥कोईजानत
नांहीं॥इकमतश्रीडदिषाइया॥श्रप
नेंमुषमांहीं॥गौरानेंपरचोलियो॥सिव
नेंषबनायौ॥देषेरूपश्रनेंतही॥जबम
नबौरायौ॥श्रादिनिरंजनएकहै॥ह्वा
जानहिकोई॥सुषदेवकहीवरनदा
सहूं॥नितसुमरोसोई॥१०१॥रागबिल
वल॥नमोनमोगोबिंदजी॥हौंदासति
हारो॥चौरासीदुषसबहरो॥श्रावागव
ननिवारो॥कर्मनकोफेरोफिरूं॥नहि
पायोनेरो॥श्रबकेश्रैसीकीजियो॥दी
जेचरनबसेरो॥पततउधारनतुमसु
नें॥बेदनमेंगाये॥श्रजामेलगनकाति
रे॥लेपारलंघाये॥एजीगुरसुषदेवबा
ताइयो॥गही तुम्हारीश्रासा॥श्रानधा १४६

रमकूंछोडके॥ नयोवरनहींदासा॥ १०२॥ रागबिलावल॥ हमारेवरनकवाल कोध्यान। मूरषजगतनरमताडोलै वाहतजलअस्नान। सबतीरथवाहांसुंछ्गटे। गंगाआदिकजान॥ जिनसेवनसबपातगनासै। नितहोवैकल्यान। सिंन्यासीगिरहीबैरागी। हैंसबहअज्ञान॥ हरिसोहीराछाडदियोहै॥ पूजेंकाचपषान॥ हरिचरननकीमिहमांजानें॥ हैवेसंतसुजान॥ जोंइनरमायाकेबेरे॥ इनकूंकहापहचान। वरनदासगुरकिरपाकीनी॥ दीनोंअंजनज्ञान। सांचोज्ञातमसूकपडोहै॥ बिसरगयोसबआन॥ १०३॥ रागकेदारा हरिकूंसुमरसंकटहरन॥ कोटकष्टनिवारडारैं। जगतपोषनभरन॥ भक्तपूरनदेषनिहचलअननबांधोपरन अग्नमेंप्रहलादराषोदियोनांहीजरन॥ गिरसिषरसैंडारदीनों॥ लगोकरुनाकरन॥ दानजानसंभारलीनों॥

×नक्कसमकुछनांहिदाबे जोगजपतपकर्म×

किये।गाढोधरन॥षंजबांधोषड्गकाढ
ज्ञूं: कुष्टलागोअरन॥अबबतातेरोरामकि
१४७ तहे।गहोवाकीसरन॥डावक्षेग्रह
क्षोदनाष्योडारसंकाडरन।मोमेंतो
मैंषड्गषंजेमध्यनारीनरन॥थंजपटक
रनयेपरगटधरोनरसिंघबरन॥अ
सुरमारोजनउबारोउहपबरषेसुर
न।मोहिगुरसुषदेवकहियासेवसो
ईचरन॥चरनदासउपासनाढिढहो
यतारनतरन॥१०४॥रागकेदारा॥
रेनरक्योंगंवावैजनम॥आवतेराजा
यबाती।नांहिजानेमरम।जनमपाह
रिनजनकरले।देहकोयहाधरम॥
लोकऔरपरलोकसुधरेरहेतेरास
रम॥आनधरमबिचारत्यागोमेटघो
घेभरम।चरनदाससतसंगमिलक
रि॥आवहरिकीसरन।रामसुषदाई
सुमरले॥वहातारनतरन॥१०५॥रा
गगौरा॥आवोसाधोहिलमिलहरिजि
सगावें॥ऊंमनकरीतसमकरि॥दि १४७
की

तुमसों रामरिझावे॥ गोबिंदके कौंतगली
लागुन॥ ताको ध्यानलगावे॥ सेवासुम
रनबंदनअर्चन तोधासोंचितलावे॥ अ
बकेअोसरनलोबन्योहे॥ बजरदाव
कबपावे॥ नजनजतापतेरैं तोसागर
उरआनंदबढावें॥ सतसंगतकोसाब
नलेकर॥ मलतामैलबहावे॥ मनकूं
ध्यानिमलकरिउजल॥ मगनरूपहोजे
वें॥ तालषषावजफांझमजीरा॥ मुरली
संषबजावें॥ चरनदासमुषदेवदया
सों॥ आवागवनमिटावे॥ ६६॥ रागमा
रू॥ मोहनजीतुमसाहिबमेरे॥ मेंहूं
दासतिहारी॥ तनमनधनसबतुमप
रवारूं॥ बारबारबलिहारी॥ तुमबिन
हमरेकोऊनांही॥ यहसरवनसुना
लीजे॥ चरनदासकूं वेरनसेती॥ नै
कजुदोनहिकीजे॥ ६७॥ रागमांऊ॥
हूंतोचरनकंवललिपटानी॥ तुमक्यों
नपकरोबांहा॥ जैसीलगनहेमेरेमन॥
कूं॥ तेरेमनकूंनांहीं॥ ऐसाध्यातिकरी

मोहनजानिपटकपटकीसानी। चरन

दासपियमोमनमानें। मैंपियमननहि

माना॥१०७॥रागमांझ॥पियप्यारेजा

जुलफनिहारी। नागनसाअतिकारी

डसगइहिरदेमांझदमारे॥नादिनदि

ष्टनिहारी॥ताकोबिषनषसषलोबा

डोबिथापारअतिभारी॥चरनदास

लहरेंमोहनबिनउतरतनांहिउतारी

॥१०८॥रागमांझ॥छातीदरकीगवन

सुनौंजबतनब्याकुलमनकंपो॥न

ईअवतगिरीधरनापरनैंननदोऊ

पलकंपो॥फिरआईसुरतआहिकर

बोलानैंननचीरबहायो॥चरनदास

मोहनबिछरनसुनघरअंगनानसु

हायो॥१०९॥रागमांझ॥मोहननेंमेरो

मनमोह्यो॥देषतकछूकरडारो॥ता

हीदिनतेंनईबावरी॥ऐसषारोमबिव

रो॥फिरफिरउवतगिरतधरनीपर॥

लगनलहरलहराई॥चरनदासक

छुजीवनकैसो।बिरहनवंगमपाई॥

२।६: १४८

1.48

११॥ राग मोंफ॥ बिरह बिथा न षस षसें
दौरी। नन मैंर हौन लोक्रं॥ मिंतर दौर बै
द कूं लावै। रोग न जानत कोऊ। मन मो
हन दे रूप लुभाना। गिरा सहत ज्यों मा
षा॥ चरनदास ब्रजतन कहा है॥ त
बन हों अब पियां राषी॥ १२॥ राग मोंफ॥
लटक चाल सुंदर तन निरषत। मुष प
र मसि बलिहारी। नैंन हरारे बांका सौं
हैं॥ जुलफन बंग मकारी। हंस हंस ब
चन बान मोहि मारे॥ लगे कलेजे मांहं
चरनदास कसकत निस दिन अब॥
कौं हां निकसत नांहीं॥ १३॥ राग मों
फ॥ मोहन लटक चलन चषवं चल।
रूप सरूप मनारी॥ घर सूं आंगन आं
गन सूं घर। ठुनक ठुनक ठुन कारी
हंस तें फेरै फूल की पाता॥ बात कहत
फरैं मोती॥ चरनदास घायल मायल
नंप। देष परम गत जाता॥ १४॥ राग मों
फ॥ मोहन जी दोऊ जुलफ संवारो॥
सांपन सुत मत वारे॥ झूमत रहत कप

लनऊपरस्यामजनवंगमकारे॥ विषके

नरेनागकेछौंना। मनकूंडरस्नुहमा

रे। चरनदासकोहियोडसलेहैं। जब

कोलहरउतारें॥ ११५॥ रागमांफ॥ पि

यप्यारेजीकोपनकीजे। तुमकूंनहिंबि

निआवे। नेराभौंहमरोरनआगे। मेरो

जीवडरजावे। बचनकठोरकहोजि।

नमुषसों। बरछीअनाजुलागे। चरन

दासथरहरकांपेप्जीमोहनतेरेआ।

गे॥ ११६॥ रागपरज॥ तुम्हारेरूपलुभा

नीहो॥ जातबरनकुलषोयकै॥ नई

ठैमदिवानीहो॥ षानपानसुधसबग

ई॥ औरअकबकबानीहो। तुम्हरेच

रनकंवलमनमेरोरहोलिपटानीहो।

सुंदरसूरतमोहनीमेरेनैनसमानीहो।

तुमबिनचैननानहीदिनरातासुनपि।

यजानीहो॥ दरसदिषावोसांवरेज।

बहियसिरानीहो॥ नांतरतनहगतहो

यहैमानज्योंपानाहो॥ सुषदेवौडष।

सबहरोकाहेबिसरानाहो॥ चरनदा १४९

हमरी

यहसषातिहारीमिलजाछानीहो॥११७॥
रागबिहागरा॥ सुधबुधसबगाईषोयरी
मैंइस्कदिवानीतरफतहूंदिनरैनसा।
षारी।जैसेंजलबिनमीननी॥छिनदेष
मोहिकलनपरतहे॥देषतआषसिरा
नी।सुधआयेंहियमैंदौलागो।नेननब
रषतपानी॥जैसेंचकोररटतचंदाकूं।
तैसेंपपाहास्वांता॥असैंहमतरसतपि
यदरसन।बिरहबिथाइहिभांता॥ज
बतेंमातबिछोहाहूवा॥तबतेंकुछन
सुहानी॥अंगअंगउकलातसषारी॥
रोंमरोंमसुरकानी॥बिनमनमोहननन
दनअंधेरे॥नरनरआवेछाती।चरन
दाससुषदेवमिलावो॥नेननयेमोहि
घाती॥११८॥रागबिहागरा॥नईहूंप्रेम
मेंचूरहो।मोहिदरसनदीजे॥हूंतोदा।
सतिहारीमोहन।बेगषबरआलीजे।
ज्ञानध्यानओरसुमरनतेरो।तोचरन
नचितराषू॥तेराहीनामजपेदिनराता
तोबिनओरननाषूं॥तनब्याकुलजी।

यरौक्षो है। आवत परी आति गल फांसी

तुम तौ निठुर कठोर महा पिय। तुम कूं

आवै हांसी॥ बिरह अगननषसषस

लागी। मन मैं कलपना नारी। गिरो ह

परतन संनल तना ही रहत नवन मैं डा

के बिषषाय तन ज्यू यह काया। कै तुम ह

रे संग रहसु। वरनदास सुषदेव बिछो

हा। तेरी सो नहीं सहसु॥ ११९॥ अथ रास

हके मंगलावरन के॥ दोहा॥ धन स

तगुर सुषदेव जी। मेरी करी सहाय। नि

ज बृंदावन धाम की। लीला दई दिषा

य॥ १२०॥ अब कछु कौतग रास को। ब

रनत है वरनदास॥ लाल लाडिली क

पा सौं॥ पावै निज ब्रजबास॥ १२१॥ राग

बिलावल॥ नृत्त करत छबि सौं बनवा

री। टेर लई सब ही ब्रजबनिता। मुरली

मधुर बजाय बिहारी। सुनत श्रवन

धुन होय प्रेम बस। बिकल भई सुंदर सु

कुवारी। ग्रह के काज लाज तज पिय क

उठ धाई तन न सुरत बिसारी॥ आये गाव

Margin: ३६९ १५० 150 त

नहोंरागमिल।पांचपांचइकइककी
नारी।आवआवइकइककेबेटा।म
रतवृंतसरूपहूंमारी।तालबीनमुद्र
चंगमजीरा।तननततननतंबूरागतन
री।ताधिनांधीनांताधीनांबजतपषाव
ज।घुंघरूझनकझननननझनकारी॥
इकइकगोपिनकेसंगइकइक।सद
स्नेषधरेगिरधारी।ऐसेंरच्योरासको
मंडल।मध्यराधिकाहरिमुरारी।गाव
तगीतिबढायपरस्पर।मानकरतपि
यसोंपियप्यारी।लेतमनायलाडलो
प्यारो।हंसहंसबिहरतदैदैतारी।तत
थईततथईथईथईततथई।उरपा
तरपसांगीतउचारी।नटवररूपकरो
मनमोहन।सेसथक्यौबरनतसोनारी।
नऐचकितसुरमुनरिषकिंनर।बाढी
रैंनसरदउजियारी।चरनदाससुषदे
वस्यामकी।अद्भुतलीलापैबलिहारी।
१२२॥रागभैरौं॥देषसषीरासरच्योसां
वरेबिहारी।ब्रह्माशिवइंद्रसेसनार

रास: १५१

दसेथकितनये। ऐसोकबिकोंनक
रेबर्ननउपमारी। सोहेसिरमुकटऔ
रकुंडलछबितिलकभाल। किंकना
कटपीतंबरनूपरधुनकारी। बजत
नारसुघरसषीराधाजूबंदमुषी। ललि
तादिकसहचरी। सिंगारसोंसंवारी॥
कोऊतंबूराकोऊमुहचंगकोऊब
जावैगतमृदंग। कोऊतालदेतकोऊ
सुरउवानमारी। बंसीमैंकरतगानबां
कीसीमधुरतान। स्यामाजबकरतमा
नस्यामलैमनारी। कबहूंकरजोरदो
ऊनाचतहैंनवकिसोर। कबहूंहरिनि
त्रकरतकबहूंपियप्यारी। ताताताता
ताताथेईथेईथेईहोयरह्यो। बाढीनि
ससरददेषहरिकीनतकारी। गऊवा
नतिनछोडदियेबछरनपेनांहिपिय
मुरलीधुनसुनतमोहेमुनिजनब्रतधा
री। सुषदेवजीगुरूकूंचरनदासबजप्र
नामकरे। रासकोबिलासदियोपरगट
दरसारी॥२२३॥ रासबिहागरा॥ रासमैं

नतकरतबनवारा। मुदितमनोहरा
रंगबढ़ावत। संगसषनंनंदलारी। मो
रमुकुट्ट बिसीसबिराजत। नोकबुला
कसुढारी। करमुरलीकटकाछनीका
छैं। अलकैंघूंघरवारी। राधाजूकेसी
सवेडका। नीलंबरजरतारी। गावैंस
षीस्पामस्पामासंग। नषसषरूपउज्या
री। ताधीनोताधीनोधीनोबजतपषा
वज। तालबीनगतन्यारी। वननवनन
वननूपरकीधुनझननझननझनक
री। थेई थेई थेई थेई नचतदोऊमि
ल। बिहसबिहसमुसकारी। चरनदा
ससुषदेवदयासों। पायोदरसमुरारा।
२२४॥ रामरामकलीनवाभैरौं॥ नृत्य
तगोपाललालनतन्नताथेई। नषसष
सिंगार कियेंराधागरबांहदियैं। सषि
यांसंगनाचतसुरतालतानदेई। तन
ननतंबूरगिगिडधुधकधूमदंगताल।
कमझमझैंझांझबजतबीनबांसुरी।।

झननननझनकारहोतपायलवनका

र।रागगावतकल्यानऔरनटधनासा

री।कबहूंलेकान्हराअलापकबूंसो

रवको।पर्जऔरबिहागरोकेदाराआ

सावरी।कबहुंकेबिभासमालसिरी

ललितरामकली।भैरौंइंबिलावल

धुनधुरपदकोबावरी।सुंदरबजनै

षधैरंरासकोबिलासकरैं।मुनजनम

नहरैं।बढोआनंदउंदगंई।अद्भुतछ

बिकहाकहूंकियासुषदेवंवहूं।ब

रनदासहायरइंबरनकंवलमांही।

१२५।।रागगंधवम।।सषीदोऊरसिक

प्रीतमप्रियाप्यारीमिलषेलतहैंरास।

छबिकहीनजाई।एककीएकसौंसा

रससोभाबनी।निरषसबसुरमुनीर

हेलुभाई।कोऊकरबीनलैसुघरस्व

रतालदै।गावतसांगीतरीझतरिझा

ई।थुंगानाथुंगनाधधकधधूकतं।ब

जतमिरदंगगातअतिसुहाई।तारसु

हूवंगसवरसप्तसौंमुरलीका। मधुरधुन
चतुरसारंगबजाई। नवतदोऊजाव
सौंअधिकबडूचावसौंतततथईथई
थईलगाई। कबहूंपियप्यारीज्मा
नकरलालसौं। कबहूंजुजगहपि
यालेंमनांहीं। धरतसुंदरडगनबजत
नूपरपगन। हसतदोऊल्हसतदियें
गरेंबांहीं। बढीनिससरदकीकोंन।
बरननकरै। सेसहूसहसमुषरहो।
थकाई। [illegible] नाहैंचरनदासैंकिर।
पाकरी। ध्यानकेमांहिलीलादिषाई॥
१२६॥ रागमल्हारगवासोरठा॥ साबिथा
मोरीजानतहोंअकिनांहीं। नषसषपा
वकबिरहलगाई। बिह्वरनउषमन
मांहीं। दिननहिंचैंननींदनहीं निस।
कूं। निरबलबुधनहिंमेरी। कासौंक
हूंकोऊहितनहमारो। लगनलहर।
हरितेरी। तनजयोंछीनदीननयनैंनां
अजहूंसुधनहिंपाई। छतियांदरक
तकरकहियेंमें। प्रीतमहाडषदाई।

जलबिन मीन पिया बिरहनइनधीरजा
 कज्ञकैसा। पंछीजरैदौं लगा बनमें। मे
रागतनईश्रैसा॥ तरफत हूं जियनिका
 सतनांहां॥ तनमें अतिश्रकलाई॥ चरन
दाससुषदेवबिनायौ॥ दरसनद्योसु
षदाई॥१२७॥ रागसोरठ॥ होंश्रं बियां
गुरदरसनकीप्यासी॥ इकटकलागी।
पंथनिहारूं। तनसूं नईउदासी। रैनदि
नांमोहिचैननदाहै॥ चिंताश्रधिकस
तावे॥ तरफतरहुं कलपनांभारी॥ नि
ह्चलबुधनहिंश्रावे॥ तनगयोसूक
हकश्रतिलागा॥ हिरदेपावकबाढी
बिनमेंलेटाबिनमेंबैठा॥ घरश्रंगना
षिनवाढा॥ नीतरबाहरसंगसहेला।
बातनहींसमझावे। चरनदाससुषदे
वपियारे॥ नैननदरसाबे॥१२८॥
रागसोरठ॥ गुरदेवहमारेश्रावोजी॥
बहुतदिननसूंलगोहेउमाहो॥ श्रानं
दमंगललावोजी॥ पलकनपंथबुहा
रूंतेरा॥ नैननपरपगधारोजा॥ बाद।

तिहारी निसदिन देषूं ॥ हमरी और निहा
रोजी ॥ करूं उछाह बजंत मन सेती । आ
गन चौक पुरांऊं जी ॥ करूं आरती तन
मन वारूं । बार बार बलि जाऊं जी ॥ दूप
रकमां सों सनिवाऊं । सुन सुन बचा
नन्न घाऊं जी । गुरसुषदेव चरन कूं दा
सा । दरसन मांहि समाऊं जी ॥ २८ ॥ रा
गसोरठ ॥ वह घर कोन सो लागे मोरे नैं
नां । छोटा उमर भोला पन नारा ॥ जानूं ए
कन बैंनां ॥ जब लागेत बकछू न जानी
अब लागे दुषदै नां ॥ चरनदास हरि कूं
जब देषे ॥ तब पावे सुष चैंनां । ३० ॥ रा
गसारंग ॥ ऊधो क्या जाने हमरे जा वक
चा त्रगबूंद बकोवंद कूं ॥ ऐसें हम कूं
पावकी ॥ नेह कमान बिछर षेंची । मो
रग ये हरि तार की ॥ जाल बियोग दि
ये बिव षड़ के सुधन लई आपार की
चरनदास सषी निसदिन तरफे । ज्यों
मछली बिन नार की ॥ करें कछू और
करें कुछ औरे ॥ आवर जात अहार ।

१

करा

की ॥१२१॥ मंगलराग सूहाबिलावल ॥

चरनदास पिय मोहन प्यारे ॥ मोपै कुछटौं नाकियौ ॥ देषतहा सुधरहानसषारी ॥ पैंचमनकूं लेगयौ ॥ ताही दिनतें नईबौरा ॥ नींद औरगई भूषहै ॥ चितकूं चिंता अधिक बाढी ॥ नैनगयो सबसूं कहे ॥ कहा कहूं कासूं कहूं सजनी ॥ लाजकी मारी मरूं ए कदिन सषी बरस बीते ॥ बिरहपावकमें जरूं ॥ चरनदास सुषदेव प्यारा ॥ कृपा मोपै कीजियै ॥ मोहनके ढिग जाय सजनी मोहि सुध आदीजियै ॥ बिथा मोरी सब सुनावो आड सूं सबउषकहो ॥ वहतुम्हारे लियें तरसैं ॥ तुमक्यौं नां ऊनकूं वहो ॥ ज्यों बने त्यो पिय मिलावो दरसन मोहि दिषाइये ॥ कहूं छल बलबनें तो सजनी ॥ संगहीले आइये ॥ चरनदास जलनागा सजनी ॥ लालहम घर आइयो ॥ जिनसषी मेरे पिये मिलाए ॥ सो सदा।

शब्द: १५४

154

सुषपाइयो॥मेरेमनकूंसुषजुदीनो।
तनकोतपतबुझाइयो॥मोहनकेसं
गरलीमांनाआनंदमंगलगाइयो।
एकसंगजबनोजनकीनोंओरलै।
बालमकह्यो॥वामभैकीकथाअ।
द्भुतव्हसमैंसषानितरह्यो॥वरनद
सपियसबातेरीलागवरनेनसूरह्यो
दासअपनोजानमोहनआपकरबे
नागह्यो॥पानमबैंनागुहनलागेमें
सषीदरपनदियो॥पावपाछेमुषछि
पाकरमंदमंदमुसकादियो॥गुह
छुकेजबपावकरधरो॥हूंसषीपाय
नपरो॥जासमैंपरगुहावैंनासदार
हियोवहघरो॥७२॥रागमंगल॥
सोईसुहागननारपियामनभावई।
अपनेंघरकूंछोडुनपरघरजावई।
अपनेंपियकोनेदनकाहुदीजिये।
तनमरनसुरतलमायकिसेवाकी
जिये॥पतकोअनोवालपालपिय
कोकह्यो॥लाजलियेकुलवंतजतन

मनकेरोगमिटायनांवनिरगुनजपे

हीसरहो।धनधनहोयजगमाहि।सूर
षबहुहितधरे।सबमैंनायकहोयजू
सरवरकोकरे।पियकोचाहोरूपसिं
गारबनाइये।पतिबरताकुलदायमैं
सोतापाइये।नौधाबसतरपहरद्या
रंगलालहै।प्रेमनलकहनधारबिबेक
रवालहै।रंगमहलनिरदोषहमाकिल
मलनरहै।निर्गुनसेजबिछावसमी
करहरनै।मंदरदीपकबालबिनावा
तीघीवकी।सुघरचतुरगुनरासला
डिलीपीवकी।कहैंगुरुसुषदेवयौं।
बालममोहिये।चरनदासलेसीष।।
जुप्रेमसमोइयें।।२३।।रागमंगल।।प
रमसुषीसोइसाधजुआपानांथपे
परनिंदापरनारदरबनांहीहरे।जि
नबालनहरिदूरबीवअंतरपरे।छि
ननहिबिसरैरामताहिनिकटैतके।
हरिचरचाबिनऔरबादनांहीबकै।
कूरकपटछलछंदनगतएसकलनि।
वारियै।जतसतसीलसंतोषछिमा

राह्
१५५

155

हियधारिये॥ कामक्रोधमदलोभविडा
रनकीजिये॥ मोहममतअभिमानअ
कसतजदीजिये॥ सबजीवननिर्वैरित्या
गबैरागलै॥ तबनिर्नेहोसंतगतिका
इनजै॥ कामकरमसबछोडहोयहं
सागता॥ तिष्णाआसजलावसोईसाधु
मता॥ जगसूंरहैउदासजोगचितनाध
रे॥ जबराकेकरेतारदासअपनोंकरे
कहैगुरुसुषदेवजुअैसाकीजिये॥ च
रनदासबिचारप्रेममेंनाजियै॥ २३४॥
रागमेंगल॥ चलाचलीजगगाढअच
लहरिनामहै॥ मालमुलकचलजाय
जायरजधामहै॥ तेलफुलेललगाय
बजतसुंदरगाये॥ नानाकरतेजोग
सोनानरनारहै॥ तेजतमकअरूरूप
जायजोबनघनो॥ सकलबरातजाहि
जायदुलहनबनो॥ रोगारोगअरबै
दजायऔषधजले॥ जोतगवुस्तगट
टबिनसरजहोमिलै॥ ज्ञानापंडितपा
रअधिकबेबसगले॥ गोसकुतबअ

बदाल। पैगंबरसबवलेपकके पीछे ९

श्री रा: कबहीरलगीवला॥ नरपतसुरपतजा

१५६ हिश्रंतवाहीगली॥ रिषमुनदेवतसिध

156 जोगेस्वरजाहिगे॥ जिनबसकी नामो

तसो नानरहोहिगे॥ पांचतत्तगुनती

ननहीवहरायगे॥ स्वर्गमित्पपाताल

सभीरलजीयगे॥ धरती अंबरजाया

जायसमिनांन है॥ वरनदासमुषदेव

दयालियोजानहै॥ १३५॥ रामामंमत्त॥

रहैरामकानामजपेसोनारहै॥ बेदपु

राननमांहिसाषयोहीकहै॥ जनममम

रननहीहोयनजोंनी आवई॥ सत्या

संघासनबेठअमरपुरपावई॥ जमा

जालमकेडंडनरमहुरजांयगे॥ लष

चौरासीबंधसभीकटजायगे॥ नाग्र

हलगैनदेहगेहआनंदरहे॥ डांक

नसर्पनसिंघभूतनाहींदहे॥ साधा

संगतगुरसेव॥ आयघटमैंबसे॥ क

लहकलपनाजायदुंदसंकटनसैं॥

तिलकदिपेलिछ्नाटजुकंवासोहा॥ १५६

नी॥ नौबिमलछ्नअक्षर सहजजातेम
नी॥ ॐवापद्वाहोयजगतसबपगल
गैं॥ उक्ष्वलेमननमांहिकरहांसोंतकें
पापतजेमुषदेषदरसकोईकरें॥ त
जिपिरापतिताहिसुवरनोंआपरे॥ क
हैंगुरुसुषदेववेरनहांदासस॥ सब
मंतरसिरमोरसुमरनिजनामकूं॥ १
२६॥ रागमंगल॥ मनरोगीनयोपिंग
कुबुधविकारसों॥ बाढीबिथाअपार
लोनकेतारसो॥ कर्मनस्योमतहीन
हीनहलसोंभयो॥ पांवपचीसोंघेरा
मोहमदनेंदह्यो॥ कैसेंयहदुषजाय
किछहनकूंचल्यो॥ तबधरेनगुनवं
तबेदसतगुरमिल्यो॥ करगहकि
योबिचारकह्योसमझायके॥ जोकु
छतेरेरोगसुदेऊबतायके॥ महापा
पकीतापचढीतोहिधायके॥ संसेके
सनपातमिल्योहैजायके॥ बिषबिष
मजुररह्योहियेजुसमायके॥ तिश्ना
कीबजप्यासरहीमनजायके॥ सत

१

संगतकोपहाकन्हेंनांहीकीयो इंद्रियानकेरस

रोगबिगडसबहोगयो॥कुसतसंगासे

ग्रहणीजियमांईनई॥ममताकोमल

बडोनृषनातेंगई॥कामक्रोधकोकुष्ट

सकलतनछायके॥सोगसोलको

मूलकलजेआयके॥मायापवनक

कोरसोंसूजनबढतहै॥तिरगुनके

तिरदोषबातबहकीकहै॥चिंताही

कोचीसउठेदिनरातही॥अतिनिंद्या

सेनींदगईतासाथही॥सोसगुमान

पिरायदरदहिंसाघनो॥कलहकल

पनानरमसोंरहतोउनमनो॥औरो

बडेउपाधबडेतेरीदेहमे॥नाजरह्योहै

सरीरपसेवसनेहमे॥इनरोगनकीतो

दसमफायके॥कर्मकरंजवातोडके

सत्तगिलोयले॥जतहोकीअजवायन

आनमिलोयदे॥चितधिरायतान्याय

पीतपापलजरली॥नेंमनोंनसेंधकाना

कीसाडली॥हितकेबर्तनमांहीतिन्हें

भिजोयके॥परमप्रेमजलनामेडारस

मोयदे॥सीलसिलापरपीसो ध्यानउमें १५७

Margin notes:

ग्रह: १५७

157

उअषधदे जबना यकैनी लतिल मेंकंड

पीवतहीसबदोषनसेंगेअंगसों

गसों॥ सुषसुंदरसनचूरनहैगोस्वादह
ताकेपायेंजायजगतकीब्याधही॥ दया
छिमासंतोषयहीमाजूनहै॥ होयअधि
कआनंदतत्त्वपदकूंलहै। गुरसुषदेव
बतावेंओषधसारहे॥ ४३॥ रागकाफी
क्यादिषलावेंशानयेंहकुछथिरनरहै
गा॥ दारासुतऔरमालमुलककाकरु
करेअभिमान॥ रावनकुंभकरनहिरि
नाकुसराजाकरणसमान॥ अर्जुनन
कुलनामसेजोधामाटीहुयेनिदान॥ छि
नछिनतेरोतनछीजतहै॥ सुनमूरषअ
ज्ञान॥ फिरपछतायेंकहाहोयगोजब
जमघेरेआन॥ बिनसेंजलथलरबिस
सितारेसकलसिष्टकीहांन॥ अजहूं
चेतहेतकरिहरिसों॥ नाहीकीपरवा
न॥ नौधाभक्तिसाधकीसंगतप्रेमसौं
हतकरध्यान॥ चरनदाससुषदेवसुम
रलेजोचाहेकल्यान॥ ४४॥ रागमाल
सिरी॥ थिरनहींरहनाहैआपरमोतनि
दान॥ देषतदेषतबंजतकबिनसेआ

चरनदासजीकीबानीसंपूर्ण

ऊतनुमरीबार। जतनकरेकोईनांनांबि
धके॥ बचेनहींनरनार। ऊजोगेस्वरबस
करिमोता। जड़दियेबजरकिंवाड॥
होबेवज्यौंमरनांनांहीमांटीहोयगये
हाड॥ किनगयेरावनकुंभकरनसे।
हिरनाकुसससिसपाल। संकरदियोही
अमरबर॥ जिनकूंसोनाषाएकाल॥ ये
हतनबरतनकाबेकाले॥ वबकलगौं
षलजाय॥ आजमरोकेकोटबरसकूं
अंतनहीठहराय। बीतनअवधचल
बाआवे॥ छोड़जगतकाआस॥ गुरसु
षदेवबिनावैंतोकूं॥ समकवरनहीदा
स॥ ३३९॥ रागमालसिरी॥ छिनसंगाछि
लरूपयेहतनअसार॥ जाकूंमोतलगा
बजबिधसें॥ नांनांअगलेबान॥ बिषअ
रश्रासनरोगबजतहैं॥ औरबिघनबा
जहांन॥ निहचैबिनसैबचेनकोही॥
जतनकियेबज़ुदान॥ गिरहनक्षत्र
देवमनाये॥ साधेप्रानअपान॥ अवरा
जाजावनमरबोसांचो॥ यहझोसरफि

शब्द: १५८ 158

॥ राग बिहागरा ॥

रनांहि। पिछले दिन ठगिये न संग षोये
रहे सो ये ही जाहि॥ जो पल है सो हरि।
कूंसुमरो॥ माध संगत गुर सेव॥ चर
नदास सुषदे व बतावे॥ ये हतन बा।
लू का सा डेरा॥ जेसें दामिन दमक व
मक को॥ छिन नहीं रहत उजेरा॥ मेड
पंडप मुलक षजानो॥ और परवार
घनेरा॥ सो सब को तन गसो दोष त है।
राम संभार संवेरा॥ राज घोडा और षा
करवेरा॥ आप पर कोई न तेरा॥ जिन।
के कारन नर मत डोले॥ कस्ता मेरा।
मेरा॥ थोडे से जीवन के काजें॥ बड
ते करत बषेरा॥ काल बली का षबर
नहीं॥ जब करि है आन के घेरा॥ क
है सुषदे व सम फन रजो है॥ छाड बि।
षे त्र रजेरा॥ चरन दास हरि नाम भज
न बिन॥ केसें होय न बेरा॥ १५०॥ राग
बसंत॥ या तन को कहा गरब करत
है॥ ओला ज्यों गल जावेगे॥ जेसें बा।
सन बन्यो काच को॥ ठबक लगे बि।

गसावैरे॥ कृतकपटऔरबुलबलक
ग्राह्ह: रिके॥ षोटेकरमकमावैरे॥ बाजीगरके
१५९ बांदरकीज्यों॥ नांचतनांहिलजावैरे॥
159 जबलौंतेरादेहपराक्रम॥ तबलौंसा
बनसुहावैरे॥ मायकहैमेरापूतस
पूता॥ नारीकहमवलावैरे॥ पलपल
पलपलपलटैकाया॥ छिनछिनमां
हिघटावैरे॥ बालकतरनहोयफिरबू
ध्र ढा॥ बिरधअवस्थाआवैरे॥ तेलफुले
लसुगंधउबटना॥ अंबरअतंरलगा
वैरे॥ नांनांबिधसौंपिंडसंवारे॥ जरब
+धूर+ रसमावैरे॥ बेदहकीमकरैबजऔ
षद॥ पंडितजापसुनावैरे॥ कोटजत
नसौंबचनकोहो। देबीदेवमनावैरे
जिनकूंतूअपनोंकरजानें॥ दुषमेंपा
सनआवैरे॥ कोईजिडकेकोईअन
षावै॥ कोईनांकचढावैरे॥ यहसगतदे
षकुटंबअपनेंको॥ इनमेंमतउरझा
वैरे॥ जबहाजमसौंपालापरिहे॥ को
ईनांहिछुटावैरे॥ औसरषोवैपरके २५

काजैं। अपनौंमलगंवावैंरे। बिनहरिना
मनहीं झुटकारे॥ वेदपुरानबतावैंरे॥
चेतनरूपबसैघटअंतर। नरमनलें
बिसरावैंरे। जोटुकढूंढषोजकरदेषै
आपनहीमैंपावैंरे। जोचाहैंचौरासी
छूटै। आवागवननसावैंरे। चरनदा।
ससुषदेवकहतहैं। सतसंगतमनल
वैरे॥ १४२॥ रागबरवा॥ तनकातनक
भरोसानांही। काहेकरतगुमानांरे
वोकरलगेनैककरंवलतैं। करिहै
प्रानपयानांरे। ऐंवअकडसबछाड
बावरे। तेजतमकड(वे)तरानांरे। रंव।
कजीवनजगतअवेंना। छिनमांहीभ
रजानांरे। मैंमैंमैंमैंक्योंकरताहै। माया
मांहिलुभानांरे। बडपरवारदेषकर
भूला। मरषमुगधअयानांरे। टेढोचा।
लेमरोडतमूंछे। बिषबासलिपटानां
रे। आपनकूंऊंचोकरिजानें मांतामध
अभिमानांरे। पीरफकीरऔलियाजो
गी। रहैंनराजारानांरे। धरमनअकासस

रससिनासैं। तेराक्याउनमानांरे। वा-
टेघातकरैंसिरपैजम। तामैंतीरकमां
नांरे। पलकपैंडपैतककरमारे। काल
अवानकबांनांरे। स्वांसनिकसफटा।
आपजांयजब। कायाजरैनिदांनांरे।
हंसहबांधनरकलैजैहैं। करिहैं अग
नतपांनांरे। अजहंचेतसीषलैगुरकी।
करलैगैरविकानांरे। अमरनगरपह
चानसिदासी। तबनहीं आवनजाना
रे। हरिकीनक्तिसाधकीसंगत। यहा
मतबेदपुरानांनांरे। चरनदाससुषदेव
कहतहैं। परमपुरातमज्ञांनांरे। १४४।
राग सोरठ॥ दमकानहींनरोसारे। क
रलेचलनेंकोसामान। तनपिंजरेसों
निकसजायगो। पलमैंपंछीप्रानंव।
लतैं। फिरतेंसोवतजागत। करतषा।
नओरपान। छिनछिनछिनछिनआ
वघटतहै। होतदेहकीहांन। मालमु
लकओरसुषसंपतमैं। कौऊनवाग
लतांन। देषतदेषतबिनसजायगो।

मनकरिमानगुमान। कोईरहननपावैज
गमैं॥यहतनिहचैजान॥अजहूंसमझ
छांडुकुटलाई॥मूरषनरअज्ञान॥टेर॥
वताचैज्ञानबतावै।गीताबेदपुरान॥च
रनदासमुषदेवकहतहैं॥रामनामउर
आन।१४४॥रागकाफी॥वहबोलताकि
तगयाकायानगरीतजके॥दसदरवा
जेज्योंकेज्योंही।कोनराहगयातजके
सूनांदेसगांवनयासूना।सूनंघरको।
बासा॥रूपरंगकछुऔरहुवा॥देहीन
हीदासी॥साजनथेसोदुरजनहुये।त
नकूंबांधनिकारा॥विनासंवारलिटा
करताभे॥ऊपरधराअंगारा॥ढहगया
महलचहलपहीजामें॥मिलगयामाटी
मांटी॥पुत्रकलत्रभाईबंधा॥सबही
ठोकजलांदी॥देषतहीकानाताजगमें
मूयेंसमानकोई॥चरनदाससुषदेव।
कहतहैं॥हरिबिनमुक्तनहोई॥१४५॥
रागमालसिरी॥वादिनकीसुधराषसो
इदिनआवैहै॥जबजमदूतबुलावन।

आवैं।वलवलवलकहैंगारा॥एकघड़ी

शब्द: कोइरिषनसकैगा॥प्यारेहूंतैंप्यारा॥बि

१६१ छुरेंमातपितासुतबंधू।बिछुरैकामना

161 कंथ्या।जोबिछुरेसोबहुरनमिलहै।जो

जुगजांहिअनंत।रामसंगातीनेकनां

बछुरे।तांहिसंगारतनांहां॥अपनाक

यासोऊनअपना।समझदेषमनमां।

हां।चरनदाससुषदेवकहतहैं॥छो

डोजगउरझेरा॥अमरनगरपहुचान

सिदौसा॥जितकरनिहचलडेरा॥१६६।

रागकाफी॥समझोरेनाईलोगोसमझो

रे॥हमकहतपुकारें॥अरेह्यांनांहांरह

नांकरनांअंतपयानां॥मोहकुटंबके

आसरषोया।हरिकासुषबिसराई।दि

नधंधेमेंरैननींदमें॥असेंआवगंवाई

आठपहरकीसाठेंघड़ियां॥मोतेंबिर

थाषोई॥छिनइकहरिकोनांवनला

नों।कुसलकहांतेंहोई।बालपनाजब

षेलतडोला॥तरननयामधमांता॥बि

रधनयेंचिंताअतिउपजा॥ढुबमैंकबू १६१

१ क

नसुहाना॥नलोकहावेतनरमूरष।क
लषरोसरसांधे॥बिषकोतीरषेंचकर
मारै॥आय़अचानकबांधै॥फवेजग
सौंनेहछोडकरि।सांचोनामउचारो।
चरनदाससुषकहतहैं॥अपनासल
बिचारो।१४७॥रागकल्यान॥चांफो
टा॥समझैनहीं मायाकामतवारा।न
रहोधनधामकुंटंबमें॥हरिगुरदि
यो बिसार।पापडकानलीपओगन
सौं।पेंजारचाबिकार।कामक्रोदामक्रे
धधैलोधर॥बैगाहाटपसार॥छलकं
टबिचकपटरूपैया॥निरषतोलनि
रधार॥कर्मढेरकोडिनकोकरकर
गिनगिनधरतसुधार।सुमरामाला।
औरसजवाई॥तिनसोंराषेप्यार॥साध
संतकूंफगजानें॥गादागावगंवार।
कहालायाकहालेनिकसेगा॥अप
नेंजीयबिचार॥कोईदमअबरजदेष
तमासा॥छिनइकरामसंभार॥नरदे
हाहैलालअमोलक॥ताकोलषान।

मार। अंतसमैंज्यौंहास्योज्वारी। दोऊक
रवालेकार। यहजगसुपनौंजानबाव
रे॥ आषरजमस्यौंरार॥ नुगतेकष्टमहा
दुषपावे॥ सोजीवनधिक्कार॥ आवता
कालअवानकतोपे॥ कहैंसुषदेव।
शुकार॥ चरनदासअबरामसुमरले
नांतरहोयहैष्वार। १४८॥ रागसारंग॥
वानदक्ष्यासरा॥ नटज्यौंनांचगयोकि
तने॥ दानासूरसतीसिधसाधक॥ राव
रंकजितने॥ रावनकुंनकरनसेजोधा
बहुतककौंनगिनें। बहुतकइका
रूतराजकरतथे। बहुतलोगजिन्हें
बहुतकनोगानांनांबिधसौंकरते
नोगबिलास। बहुतकतपसीबना
केबासी॥ तनपररूपजाघास॥ बहु
तकरिषमुनडुबौसासे॥ दतेआडिगा
मराप॥ बहुतकग्यानीहरिहोबेठे
कहतेआपीआप॥ हमहैंयाजगनां
वनआये॥ यहनहींअपनांदेस॥ च
रनदाससुषदेवदयासें॥ फिरनहीं। १८२

१०८:
१८२
162

काहूनेस। १४८॥ राग सारंग॥ बानटवा धन्याश्री॥ नटज्यौंनांवहनांवगये। तिनतिननेषधरेजोगमांहां। सोसोनांहरहे॥ बक्तनस्वांगधरेराजाको॥ बक्ततकरंकनये॥ बक्ततकनूपकरनसेस्ये। कंचनदानदये॥ बक्ततकस्वांगसतीकेश्राये। होगयेअगनमये॥ बक्ततकवुंडतमुंडतजोगी॥ गुफाबनाय्यद्ये॥ नाषमश्रौरदौणवारजसे॥ सूराबक्ततदये॥ रणसोंपावटईनहिंकुछ॥ सनमुषबानलये॥ बक्ततजतीसिधहोहोबेठे॥ लोगनवरनगहे॥ बक्ततककामीचतुरसयानें॥ कामसुतामबहे॥ उत्तममधममकाछकछहे॥ नांनांस्वांगमचे॥ वरनदासमुषदेवदयासों॥ प्रेमीहोयनचे॥ १४९॥ राग सारंग॥ दुनियांमगननयोधनधाम॥ लालचमोहकुटंबकेपागे॥ बसरगयेहरिनाम॥ एकघडीछुटकारोनांहां॥ बंधरहेश्राठोजाम॥ पांचप

स्वधधेमेंमाने॥ तीनपहरसंगबाम॥ फु
ग्र हू: लेफिरतमहागरबायें॥ पोननरए
१६३ बाम॥ द्दापकेलसज्यों बिनसजांद्दि
163 ग॥ यातनकोयहीकाम॥ साधसंग
तगुरसेवनकीन्हीं॥ सुमरेनांसीराम
चरनदाससुषदेवैकहतहैं॥ केसेंपा
वेंगम॥ १५२॥ रागसारंग॥ करोनरह
रिनक्तनकोसंग॥ दुषबिसरैंसुषहो
यघनेंहीं॥ तनमनपलटेंअंग॥ हो
निहकाममिलोसंतनसों॥ नामप
दारथसंग॥ जिहपायेंसबपातगन
सें॥ उपजैज्ञानतरंग॥ जोवेदयाकरे
तेरेपर॥ प्रेमपिलावेंनंग॥ जाकेअम
लदरसहोयहरिको॥ नैननआवेरं
ग॥ उनकेचरनेसरनहीलागो॥ सेवा
करोउमंग॥ चरनदासतिनकेपगप
रसन॥ आसकरतहैगंग॥ १५३॥ रा
ग काफी कोईदिनजावेतोकरगुज
रान॥ कहरगहरीछाडदिवानें॥ त १६३
जोअकसकाबान॥ खुमलीयारात्रे १

रपरनिंद्या॥ कूडकपटऔरकान। इ
नकूंडारगहोजतसतकू। साडअधि
कसयान। हरिहूंसुमरबिननहिंबि
सर। गुरसेवामनगात। साधनकीसं
गतकरनिसदिन। आवैनाकछुहान
मुडोकुमारगचलोसुमारग। पावैनि
जपुरबास। गुरसुषदेवचितावैंताकूं।
समझचरनदीदासं॥५७॥ रागकाफी॥
गुमराहीछांडदिवानें। मरषबावरे॥
अतिदुर्लभनरदेहमैया। गुरदेव
सरनतूआव। जगजीवनदेनिसको
सपनौं। अपनौंहांकोंनबतावरे। ता
हिपांचपचीसौंघेरलिया। लषचौरासी
भरमाव। बीतगईसोबीतगई। अज
हूंमनकूंसमझावरे। मोहलोभसौंभा
गकेत्यागविषै। कामक्रोधकूंधोयब
हाव। सुषदेवकहेंसबहीतजके। म
नमोहनसौंलौलावरे। चरनदासगुक
रचितायदियो। मतचूकैऐसोदाव॥५८॥
॥रागकाफी॥ चलाआवैचलावैकाहो
स॥

कछूकरलेमाई। ह्यांसैंवलनाहोय।
अचोनकही। फिरयाहैरहैअफसो।
स। पियकीमधवामतवारा। होयरहा
बेहोआ। बाटमांहिंतोसूलबंबूलघ।
नेंऔरजानाहैकईकोस। दमहींदम
हींदमछीजतहै। पलपलघटैतनजो।
रा। मायामोहकुटंबकासुषअैसें। जैसें
दीषमोतीओस। सुषदेवकिरपाका
रके। रामरसकाप्यालानोंआ। चरनदा
सकहैयहीबातनली। सुनलीजोदो।
नोंगोआ॥१५५॥ रागकल्यान॥ एतेप
रक्यों हुवामगरूर। छिनमेंगायहैत
नबजरंगी। जरबरहोयहैधूर। मूब
मरोडचलेबांकीगत। अकडअका
डरहैघूर। हलचिकनियामायामध
में॥ मांताचकनाचूर। कामक्रोधकेश
स्तरबांधे॥ लोभरहाभरपूर। गुरको।
ज्ञाननमनमेंआवें। असाहैबेसूर
करिअभिमानजगतसबमानें। हरि
कूंजानैंदूर। चरनदासमुषदेवबता
वै।

शब्द:
१६४
164

साईसदादरजर॥२५८॥राग बिलावल॥
रामनाम तैं क्यौं बिसराया॥ सीषोकपा
टकपट छलबलबज॥ काम औरक्रो
धमोहलौलाया॥ चारदिनांकाजगतत्र
वंना॥ कुवेसुषमैं कहालुभाया॥ छिन
इकसतसंगतनहिंकीना॥ जनमत्र
कारथ षोयबहाया॥ बादबिबादस्वा
दकूं वोकस॥ बिषेबासर समैं लिपटा
या॥ दयाधरम हिरदेसौं भूला॥ परनिं
दाहिंसाकूं धाया॥ चौरासी लषजौंन
जुगतकर॥ मनुषसरूपनागसैंपा
या॥ लाहाकछुनकीया हासिल॥ उ
लटायौं हो मूल गंवा॥ श्रासुषदेवभक
रचितावे॥ समझ तनांकेतो समझा
या॥ चरनदास कलजुग केमांह॥ ह
रिगुनगावनसार बताया॥२५७॥राग
बिलावल॥ नांहीरे कोई हरिबिन तेरा॥
यहजगजालमहादुषदाई॥ तामैंहेए
कैरैनबसेरो॥ आनफस्योमायाकेफं
द॥ मोहममतकानोंउरफेरो॥ रंचक

ऊं क्षुटका रोना है। बिषेस्वाद पावौं नेघे
रो। साधसंतसुं नेह न राषे। दारासुतसं
पतको चेरो। अंतकाल बऊ तेपछते
है। जब मारै जम आय घघेरो। घर के
कारन घर घर डोले। पर काजै पच मर
त घनेरो। जोरत दाम बाम बस होय के
काम क्रोधसौं हित बऊतेरो। जाचाहे
न लो आपनों। तो ह्यांसैं कर बेग नबा
रो। चरनदास सुषदेव कहत है। छाउ
हु सब बिषे बषेरो। १५८। राग सारंग॥
साधो होंनहार की बात। होत सोई जो
होंनहार है। कापै मेटी जात। कोट सया
नप बऊ बिध कीन्हें। बहुत तके कुसा
लात। होंनहारनें उलटी कीनी। जल मैं
आग लगात। जो कुछ होय होत बता
वौंउ। जैसी उपजे बुध। होंनहार हिर
दे मुष बोले। बिसर जाय सब सुध। गु
रु सुषदेव दया सूं होंनी। धार लई मन
माहि। चरनदास साचें उषउपजे। सा
मऊ संुउष जांहि। १५९। राग भैरवीं॥

राम्रः
१६५

165

सोरठा॥ कछुतुमसुखराबो वादिनकी
जादिनतेरी देहछुटेगी। गोरबसेगाब
नकी। जिनकेसंगबकुतसुषकीन्हें
मुषढकहायहैन्यारे। जमकेत्रासहो
यबकुभांती। कौनछुटावनहारे। दा
हललौंतेरी नारचलैगी। बडीपोललौं
माइ। मरघटलौंसबबीरचलतजे। हंस
अकेलाजाइ। दरबगडेअरुमहलष
ड़ही। छूतरहैंघरमांही। जिनकेकाजा
पचेदिनराती। सोसंगचालतनांही। दे
वपितरतेरेकामनआवें। जिनकीसेवा
लावे। चरनदाससुषदेवकहतहैं। ह
रिबिनमुकतनपावे॥ १६०॥ रागसोरठ॥
भाईरेतजोजगजंजाल। संगतेरनांहि
चालें। महलबाहनहाल। मातपितासुत
औरनारी। बालभीगिबैन। डारफांसी।
मोहकी। ताहिवगतहैदिनरैन। बछछ
धतूराद्यिासबमिल। लाजलाडूमां
ह। जानअपनेंकहातुलानो। चेतना
कोंनांहि। बाजजैसेंचिडीऊपर। नेव

ततोपरकाल। मारतेगहलेचलेंगो।ज
मसरीबसाल। सदासंगीदृशिबिसारा।
जनमदीनोंहार। चरनदाससुषदेव
कहिया। समकमूढगंवार॥१६६॥रा
गसोरठ॥ मोकुंनैंअतिवाही दिनको।
जबयहपंछीमायालोनी। त्यागोविज
रातनको। सुतदाराकेमोहफसोहै॥
लोभलगोदेधनको। कामक्रोधकोकं
पाषायो। नयोआधीनसबनको। पांव
पहरधंधमेंषोयो। नामनलेतभजनको।
तीनपहरनारीसंगमातो। माननसुष
इंद्रिनको। आपनकूंऊंचाकरिजानें
करिअभिमानबरनको। सतसंगत
केनिकटनआवे। जोहेवावतिरनको।
जमकिंकरजबआनगहेंगे। तबनां
धीरधरनको। गुरसुषदेवसहायकरा
रैंगे। आसरोदासचरनको॥१६७॥रा
गसोरठ॥ सोमेरोकह्योमानरेभाई।ज्ञा
नगुरकोराषहियमें। बंधकटजाई॥
बालपनतैंषेलषोयो। गईतरुनाई॥

शब्द: १६६

166

चेतअजहूंनलीबरहै। जराऊआई
जिनकेकारन। बिमुषहरितैंफिरत
नटकाई। कुटंबसबहीसुषकेलोल
तेरेउषदाई। साधपदवीधारनाधर।।
छाडकुटलाई। बासनातजजोगज।
गके। होयमुकताई। बजरजौंनीनां
हिंआवै। परमपदपाई। चरनदासष
तापमिलरहो। शीतमसुषदाई।। २६३।
रागसोरठ।। साईसेसमझजगमोहार।
जबतांईतेरेधनपराक्रम। करेसबहो
प्यार। अपनेंसुषकूंसबहीचाहें। मिं
त्रसुतऔरनार। इन्हैंतोअबबसकि
योहै। मोहबडीडार। सजनतोकूंनेदि
षायो। लाजलुकरीमार। बाजीगरको
बांदराजौं। फिरतघरघरद्वार। जबैतो
कूंबिपतआवै। जराकोइबिकार। तबै
तोसूंलाजमानैं। करेंनांतेरीसार। इन
कीसंगतसदाउषहै। समझमंठगोवा
र। शीतमहरिकूंसुमरले। कहैचरन
दासपुकार।। २६४।। राग बिहागरा।।।

राग
१६७

अरेनाईभाईबिषैरसबौरा। हरिकी
नक्किकरोचितलाई। दूरहोयदुषता
रा। इंहिंनकासुषदुषदाईहै। मतजा
इनकीओरा। तातेअपनेरसकूंदौरे
तैंक्योंहोतहैभोरा। कामक्रोधओरा
मोहलोभसे। परबलहैंअतघोरा सी
लछिमांजतसतजोराषै। नांहिचलैं
उनजोरा। सतसंगतमेंनिसदिनरहि
यै। मानकहातूमोरा। बिषबासना
दुष्टनकोसंग। यामैंहैंबहुषोरा। पी
तमतैंरौओरनकाई। आनगहैजम
जोरा। चरनदासहरिनामबतायो॥
परमपरातमओरा॥ १६५॥ रागकेदा
रावाबिहागरा॥ नाईरेअवधबीती
जात। अंजलीजलघटतजैसैं। तारे
ज्योंपरभात। स्वांसपूंजीगांठतेरा। सा
घटतदिनरात। साधसंगतपैंवलागी
लेलगजाईहाथ। बडोसोदाहरिसं
भारो। सुमरलीजेप्रात। कामक्रोधद
ल्लालठगिया। बनजमतइनसाथ॥

लागमोहबजाजचलिया। लागेहैंतेरी
घात। सहगुरकौराषहिरदे। तौदगान
हिंषात। आपनीचतुराईबुधपर। मत
फिरैदुतरात। चरनदासहरिचरनग्री
तम। परसतजकुलजात॥१६६॥ राग
बिहागरा॥ एसबअपनेंस्वारथकेगा
रजी। जगमैंहेतनकीजेकाहुसौं। अप
नेंमनकूंबरजी। रांपेफंधघातबहुडा
रें। इनतैंतूंडरएजी। हिरदेकपटबाह
रमिठबोलैं। यूहछलहैगोकहाजी। सा
गंधषांयझूठबहुबोलैं। जौसागरकेसें
तिरजी। दुषसुषदरदद्यानहिंबूझैं॥
इनसूंछूटावोहरिजी। बैरीमिंतरचु
नचुनदेषे। दिलकेमहरमकरजी। इ
नकूंदोसकहाकहदीजे। यहकलजुग
कीकरजी। दुनियांजगलकुटलबहुषो
टी। देषछातीमेरीलरजी। चरनदासइन
कूंतजदीजै। चलबसअपनेंघरजी।१६७
॥रागसोरठ॥ साधोनारिसबलरैभाई॥
नहिंमानैंरामदुहाई। बांदरज्योंपकर

नवावै।हरिजीसंतनेहछुटावै।दयाधा
रमसबषोवै।जबनैनकजलनरजोवै
जिनकाचितचोरारांडी।तिनकीजगाछ
थूडी।उनसबदीसर्व।उनसबदीसबी।
सषोया।नरसीसपकरकररोया।जन
मपदारथहीनौं।स्याहीकाटीकादीनौं
दोनौंमुषसैंषाया।फिरफिरकैगर्भदि
षाया।कामकटकमैंमरी।वहसांवत
कहियैपूरी।बडेबडेजोधामारे।संकर
सेसमरपछारे।गुरसुषदेवबतावै।बर
मारनतोहिदिषावै।चरनदासयहा।
जानौं।तुमछलबलकलापिछानौं।१६८।
॥रागसोरठ॥नारीनेंहरिसुमरनसौं
षोए।राजापरजामुंडतखुंडत।नैंनक
टाछनमोहे।रातीचूनरखटकमटक
ले।लषनकाजलसौंधे।मुडमुसका
वैमधुरीबानी।प्यारप्रीतिकरबांधे।ब
हुतनकोउनजोगछुटायो।बहुतन
कोतपछीनौं।बहुतनकीउनभक्ति।
बिगारी।अंगबिषैरसदीनौं।बंदुवा

शब्द: १६८

168

करिबकूनौंबनवायै।फंदामोहलगा।
यौ।यातैंसावधानहोरहियौ।मैंतुम।
कुंसमझायौ।गुरसुषदेवतावैंसाधौ
निहवैठगनीजानौं।चरनदासकहैं।
हाथनआवौ।नीकैंताहिपिछानौं।९६
६।।रागसोरठा।। साधोपरतिरियासौं
डरियै।जाकेदरसपरकेकीयै।जाव।
तनरकमैंपरियै।गौतमघरनीसुंदरसु
नकरि।इंदरआसनतजआयौ।जोगा।
तनईजगतमैंजानी।नहोकलंकलगा
यौ।सींगीरिषबनमैंतपकीनौं।सुरप
तटेषडरायौ।रंभाभेजहरोसतजाको
सबहीतेजसिरायौ।पारासुरनारदसं।
करसे।नारीदेषलुभाये।ताकोफलऐ
सोहीपायौ।अजहूंकुजसमुनाये।च।
रनदाससुषदेवगुरूनें।देउपदेसब।
चायै।जतीसतीकोईहाथनआयौंका
मीपकरनचाये।।१७०।।रागसोरठा।।:
औरेनरपरनारीमततकरे।जिनजि।
नऔरतकोडायनकी।बजतनकुं।

गईअघरे। दूधआककोपातकटैया। जा
लअगनकीजानौं। सिंघमुखारेबिषका
रको। ऐसैंनाहिपिछांनौं। षाननरका
कीअतिउषदाई। चौरासीनरमावै। ज
नमजनमकूंदागलगावै। हरिगुरनुरा
तछुटावै। जगमेंफिटफिटमिहमांषावै
राषेतनमनमेला। चरनदाससुषदेव
चितावैं। सुमरोरामसुहेला॥२७४॥राग
केदारा॥ छलेसबकनककामनरूप
सुरअसुरऔरजरूगंध्रप। इंद्रआदि
कन्रप। सावित्रीबसकियेब्रह्मा। पार्व
तीतिपरार। लीलाकरनलछमीसंग॥
हरिलियेऔतार। रावनसेअतिबली
मार। मोतजिनबस। पसुनरनकी।
कोचलावै। एतोअतिआधीन रूपर
समैंदेषतरा। मोहफांसीउर तपकी।
पूंजीछीनकररकियो सीगीरिषकू
षार। मायावगनीठगेसबहीबचेगु
रसुषदेव। प्रीतमकोईकोईजबरो
करदासचरननसेव॥२७५॥रागके

शब्द: १६९

169

कीन्

दा रा॥ नाईरे बिषमज्वर जग ब्याध। गुर हमारे दई औषध बाद रह नासाध। सुध वूरन है सुदर सन निबलल षमो हिदान। षान तन के कष्ट नासैं। रोग मन होय छीन॥ ज्ञान नक्र और जोग त्रिफला। धारना नै पाल॥ रहे सत संग तन नवन में। आमल गै नब्याल॥ कनक कामन पकू बनायो॥ नूल करन अहार॥ अति अजारन होत इन तें॥ बढत बिकट बिकार॥ वरन दास सुषदेव कहियां॥ औषधी निज मोय॥ बिषम बेदन होय नारा॥ जो हिछिन मैं षोय॥ ७३॥ राग धन्याश्री॥ अब तुम करो सहाय हमारा। मन को रोग होय गये दारघ॥ तन के बडे बिकारी॥ तुम सो बेद और को दूसर जाहि दिषाऊं नारी॥ सजीवन मूल अमर होय जासों॥ सो है दयातुम्हारा॥ किरिया करम की औषध जेता॥ रोग बढावन हारा दीजे वूरन ज्ञान नक्र को॥ मेटो सकल बिथ्यारा॥ जन के काज पथ्यादेश्रावत॥

चरणकवलपरिवारी। मैंनयौदासत्र्र
धीनतिहारो। मेरीकरोसंभारी। जोमोहि
कुटिलकुचील। जानिकेमेरीसुरतबि
सारी। चरनदासदैञ्जातमतेरो। उह्है
संगेनारी॥ १७४॥ रागआसावरी॥ भा
ई। मनमैंदीरघभयेबिकारा। सतगुर
साहिबबैदमिलेबिन। कटैंनरोगञ्र
पारा। तिरगुनकेतिरदोषपगेहै। का
मक्रोधजुरजारा। तिस्नाबायुजवीञ्र
अंतर। डोलतद्वारहीद्वारा। बिषेबास
नापितकफलागो। इंद्रिनकेसुषसा
रा। सतसंगतरसकरवालागै। करतन
अंगीकारा। सतगुरसौंकाकहानमा
नैं। सीलबिमांनहीधारा। रसनास्वाद
तजोनहिमूरष। आपनपानसंभारा॥
चरनदाससुषदेवमिलेजब। औषध
ज्ञानबिचारा। तनमनकोसबरोगमि
टायो। आवागवननिवारा॥ १७५॥ रा
गबिलावल। तुमसाहिबकरतार।
हो। हमबंदतेरारो। मेरोंमगुन्हगारहैं।

शाह:
१७०

170



